चैतन्य लहरी
मार्च - अप्रेल 2006

चैतन्य लहरी

सहज संघ सूचना एवं समाचार
(विशेषांक)

इस अंक में

1.	सर सी.पी. श्रीवास्तव सम्मानित	3
2.	सर सी.पी. श्रीवास्तव का अभिनन्दन समारोह	5
3.	सहज समाचार एवं सूचनाएं	7
4.	स्वान - सहज-संसार घोषणाएं एवं समाचार	8
5.	विश्व परिषद के वर्तमान सदस्य	8
6.	परमपूज्य श्रीमाताजी का सन्देश, 'सहजयोग प्रचार-प्रसार विश्व परिषद'	9
7.	सहजयोग विश्व परिषद द्वारा प्रस्तावों की स्वीकृति	10
8.	सहजयोग प्रचार-प्रसार विश्व परिषद (WSCASY) जिम्मेदारी की विनम्र स्वीकृति का प्रस्ताव	10
9.	सहजयोग प्रचार प्रसार विश्व परिषद सामूहिक नेतृत्व के प्रति श्रद्धा संकल्प	11
10.	सहजयोग प्रचार-प्रसार विश्व परिषद लक्ष्य वक्तव्य	12
11.	इटली में नए सामूहिक नेतृत्व की घोषणा	13
12.	रूस में नए सामूहिक नेतृत्व की घोषणा	14
13.	यू.के. सहजयोग प्रचार-प्रसार राष्ट्रीय समिति	14
14.	स्विटज़रलैण्ड में नए नेतृत्व की संरचना	14
15.	राष्ट्रीय ट्रस्ट - भारत	15
16.	परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी एवं सहजयोग ट्रस्ट की मीटिंग के अवसर पर दिया गया सन्देश	15
17.	कबैला की सम्पत्तियाँ विश्व सहज सामूहिकता को भेंट	16
18.	न्यू जर्सी में गुरु पूजा के अवसर पर WCASY का दूसरा रचनात्मक सत्र	16
19.	सहजयोग इतिहास की महत्वपूर्ण घटना	17
20.	कुछ महत्वपूर्ण संस्थानों तथा परियोजनाओं की उनके सम्पर्क पतों/कम्प्यूटर सूचना/ समाचार पत्रिकाओं/समाचार पत्रों और विश्व भर में नियमित रूप से छपने वाली सहज पत्रिकाओं के सदस्यता शुल्क की सूची	19
21.	सहज परियोजनाओं की सूची	20
	1. निर्मल इन्फोस्टिमज़ एवं टैक्नोलोजीज प्रा.लि.	21
	2. छिन्दवाड़ा, श्रीमाताजी के जन्मस्थल (घर) का अभिग्रहण	23
	3. विश्व निर्मल प्रेम आश्रम	24
	4. अन्तर्राष्ट्रीय सहज पब्लिक स्कूल, तालनू, धर्मशाला	29
	5. अन्तर्राष्ट्रीय सहजयोग शोध एवं स्वास्थ्य केन्द्र, सीबीडी बेलापुर	32
	6. श्री पी.के. साल्वे कला प्रतिष्ठान, वैतरणा, महाराष्ट्र	37
22.	ऑन लाइन सहजयोग सम्पर्क पते	41
22.	सहजयोग परियोजनाएं एवं प्रकाशित पुस्तकें	42

चैतन्य लहरी

प्रकाशक
निर्मल इन्फोसिस्टम्ज़ एवं टैक्नोलोजीज़ प्रा. लि.
8, चन्द्रगुप्त हाउसिंग सोसाइटी,
पॉड रोड, कोठरुड
पुणे – 411 029

मुद्रक
कृष्णा प्रिन्टर्ज एण्ड डिजाइनर्ज
त्रीनगर, दिल्ली-110035
मोबाइल : 9868545679

आप अपने सुझाव एवं सदस्यता के लिए निम्न पते पर लिखें :
श्री जी.एल. अग्रवाल
निर्मल इन्फोसिस्टम्ज़ एवं टैक्नोलोजीज़ प्रा. लि.
222, देशबन्धु अपार्टमैंट, कालकाजी,
नई दिल्ली-110 019
फोन : 26216654, 26422054

अपने अनुभव, सहज सम्बन्धी लेख आदि निम्नलिखित पते पर भेजें :
श्री ओ.पी. चान्दना
जी-11-(463), ऋषि नगर, रानी बाग
दिल्ली-110 034

सर सी.पी. श्रीवास्तव, भारत के राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित

अन्ततः शनिवार प्रथम अक्तूबर (2005) भारतीय समयानुसार 4.30 सायं राष्ट्रपति भवन नई दिल्ली में वह चिरप्रतिक्षित क्षण साकार हो उठा जब माननीय राष्ट्रपति सर्वश्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने सेवानिवृत्त आई.ए.एस. (I.A.S.) अधिकारी सर सी. पी. श्रीवास्तव (हमारे माननीय पापाजी) के जहाजरानी समन्वेषण (Maritime Exploration) तथा जन-प्रशासन, विद्वता और प्रबन्धन क्षेत्र में श्रेष्ठ योगदान को स्वीकार करते हुए उन्हें प्रतिष्ठा पुरस्कार से सम्मानित किया। इस पुरस्कार में प्रशंसा पत्र (Citation), कीर्ति-पट्टिका (Plaque) के साथ-साथ एक लाख रुपये का नकद इनाम भी सम्मिलित था।

सर सी.पी. श्रीवास्तव को 'लाल बहादुर शास्त्री बन्धु' पद-नाम दिया गया है और उनका नाम 'लाल बहादुर शास्त्री प्रबन्धन संस्थान' की सम्मान-तालिका में अंकित किया गया है। राष्ट्रपति भवन पुरस्कार समारोह में सम्मिलित होने वाले लोगों में अन्य महत्वपूर्ण प्रतिष्ठावान व्यक्तियों में प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह, यू.पी.ए. अध्यक्षा श्रीमती सोनिया गाँधी, केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री शिवराज पाटिल तथा पूर्व केन्द्रीय मन्त्री और श्री लाल बहादुर शास्त्री के पुत्र श्री अनिल शास्त्री भी थे।

श्री शास्त्री, जो इस संस्थान के अध्यक्ष भी हैं, ने कहा, "ये पुरस्कार उन लोगों को सम्मानित करता है जिनसे युवा पीढ़ियाँ प्रेरणा ले सकें।"

सर सी.पी. श्रीवास्तव विश्व जहाजरानी विश्व-विद्यालय, माल्मो, स्वीडन के संस्थापक कुलाधिपति (सेवा-मुक्त) हैं। वे 'अन्तर्राष्ट्रीय जहाजरानी विधि संस्था माल्टा' के अध्यक्ष और जहाजरानी शिक्षा एवं प्रशिक्षण समिति (Committee on Maritime Education and Training), भारत सरकार, के अध्यक्ष भी रहे हैं।

इस गौरवशाली क्षण पर उपस्थित सहजयोगी प्रेमपूर्वक परम-पावनी माँ की उपस्थिति का स्मरण करते हैं और कहते हैं कि श्रीमाताजी की उपस्थिति ने इस अवसर को विशेष गुणवत्ता और मंगलमयता प्रदान की। वे अत्यन्त प्रसन्न थीं। सम्मानित किए जाने के पश्चात् सर सी.पी. को भाषण देने के लिए निमन्त्रित किया गया। सर सी.पी. श्रीवास्तव, हमारे पापाजी, ने उपस्थित लोगों को अपनी शक्तिशाली अंग्रेजी भाषा में सम्बोधित करते हुए उन सेवाओं की प्रशंसा की जो उन्होंने स्वर्गीय श्री लाल बहादुर शास्त्री, भारत के पूर्व प्रधानमन्त्री, के सिद्धान्तों एवं पथ प्रदर्शन

में की थी। उनका भाषण अपने आप में एतिहासिक बन गया।

उपस्थित व्यक्तियों के अनुसार अपने भाषण का समापन करते हुए सर सी.पी. ने स्पष्ट रूप से विश्वासपूर्वक कहा कि 85वें वर्ष में आज जो पद उन्हें प्राप्त है या अपनी जिन उपलब्धियों के लिए आज भी उनका सम्मान हो रहा है, उसका श्रेय श्रीमाताजी के साथ उनके 58 वर्ष के विवाहित जीवन तथा उन मूल्यों और प्रेम को जाता है जो उन्हें श्रीमाताजी से प्राप्त हुए और उस प्रेम को जो उन्हें उनकी दोनों पुत्रियों-कल्पना तथा साधना से प्राप्त हुआ।

उन्होंने ये भी कहा कि उनकी पत्नी निर्मला के रूप में श्रीमाताजी प्रेरणा का स्रोत बनकर हमेशा उनके साथ रहीं और एक बार लाल बहादुर शास्त्री ने भविष्यवाणी की थी कि श्रीमाताजी के सिद्धान्त जीवन-मूल्य बनकर मानव-हित के लिए कार्य करेंगे। केवल इसी पथ पर रहते हुए, सारी सामाजिक गतिविधियों को सुधारकर, जीवन को बेहतर बनाने में मानव की सहायता करने में वे जुटीं रहीं। उन्होंने ये भी कहा कि आपकी प्रिय माताजी ने जिस पावन कार्य को पूर्ण करने का बीड़ा उठाया है, वे अब उसके प्रति पूर्णतः समर्पित हैं- मानवता को उन्नत करने और मनुष्य का अन्तर्परिवर्तन करके उसे मूल्यवान बनाने के कार्य के प्रति। तत्पश्चात् उन्हें प्रदान किए गए सम्मान के लिए राष्ट्रपति और सभी उपस्थित माननीय सदस्यों का उन्होंने धन्यवाद किया।

ये समारोह केवल आधे घण्टे का था। इसके पश्चात् भारत के राष्ट्रपति द्वारा दी गई चाय और नाश्ते की पार्टी में सभी लोग एकत्रित हुए। यहाँ पर सभी वरिष्ठ अधिकारियों ने बारी-बारी आकर श्रीमाताजी को बधाई दी। श्रीमाताजी बहुत प्रसन्न थीं। वे सम्भवतः. ... क्यों, सम्भवतः क्यों! निश्चित रूप से भारत सरकार के अधिकारियों पर कार्य कर रहीं थीं।

समारोह के पश्चात् पूर्व-प्रधानमन्त्री लाल बहादुर शास्त्री के सपुत्र श्री अनिल शास्त्री ने पापाजी द्वारा लिखित पुस्तक "लाल बहादुर शास्त्री" की प्रतियाँ राष्ट्रपति को भेंट कीं। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो सभी कुछ सूक्ष्म रूप से घटित हो रहा हो!

इस अवसर पर उपस्थित योगियों ने इस क्षण को 'ऐतिहासिक क्षण' बताया। अत्यन्त उल्लासपूर्वक उन्होंने घोषणा की कि श्रीमाताजी अत्यन्त-अत्यन्त प्रसन्न थीं और पापाजी के शक्तिशाली भाषण ने सभी उपस्थित लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया था। चैतन्य का फव्वारा चल रहा था। हर क्षण श्रीमाताजी से चैतन्य बह रहा था। ऐसा लगता था कि राष्ट्रपति भवन में उपस्थित भारत-सरकार के अधिकारियों को बेहतर कार्य करने के योग्य बनाने के लिए वहाँ पर्याप्त चैतन्य-लहरियाँ थीं। वहाँ उपस्थित एक योगी ने ये भी कहा, "...मेरे पूरे जीवन में इससे पूर्व मैंने कभी सहजयोग की ऐसी ऐतिहासिक घटना नहीं देखी है। इस क्षण के लिए मैं श्रीमाताजी का आभारी हूँ...." भारत के टी.वी. चैनल 'दूरदर्शन' ने तथा 'दूरदर्शन समाचार' ने उसी शाम इस घटना को प्रसारित किया। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे श्री विष्णुमाया भी इस महान घटना की घोषणा करने के लिए बेचैन थीं।

जय श्री माताजी,

गुड़गाँव सामूहिकता, भारत।

सर सी.पी. श्रीवास्तव का अभिनन्दन समारोह

कमानी सभागार दिल्ली, भारत

प्रिय भाइयो और बहनों,

'लाल बहादुर शास्त्री प्रबन्धन संस्थान, दिल्ली', शास्त्री सदन सेक्टर-3, आर.के. पुरम, नई दिल्ली ने 3 अक्टूबर 2005 को कमानी सभागार मण्डी हाऊस, नई दिल्ली में सर सी.पी. श्रीवास्तव का अभिनन्दन करने के लिए एक अन्य समारोह का आयोजन किया। सोमवार प्रातः ठीक 11.00 बजे कार्यक्रम आरम्भ हुआ। यहाँ लगभग सात सौ लोगों ने भाग लिया जिनमें से तीन सौ से भी अधिक सहजयोगी थे। यद्यपि सर सी.पी. श्रीवास्तव आकर्षण का मुख्य स्रोत थे फिर भी सभी आँखें हमारी प्रेममयी माँ की प्रेम एवं करुणामयी भाव-भंगिमाओं की उत्सुकता-पूर्वक प्रतीक्षा कर रहीं थी। अपनी निरन्तर मुस्कान द्वारा श्रीमाताजी ने पूरे स्थल को गौरवान्वित किया। सभागार के प्रवेश द्वार पर स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री की एक प्रतिमा रखी हुई थी। श्रीमाताजी ने उस प्रतिमा को देखा और निजी वार्तालाप में कहा, कि ''ये प्रतिमा सफेद रंग की होनी चाहिए थी काले रंग की नहीं।'' परमेश्वरी का ये संदेश शक्तिशाली सत्य के रूप में उभरा कि ऐसी प्रतिमाओं की ये संहिता होनी चाहिए, और तुरन्त स्वर्गीय श्री लाल बहादुर शास्त्री के पुत्र एवं संस्थान के अध्यक्ष श्री अनिल शास्त्री को ये संदेश दिया गया कि श्रीमाताजी की ये इच्छा एवं सन्देश है तथा इस पर आवश्यक कार्यवाही की जानी चाहिए।

सर सी.पी. श्रीवास्तव को ''प्रधानमन्त्री लाल बहादुर शास्त्री का स्वप्न तथा आज के भारत में उसकी प्रासंगिकता'' विषय पर भाषण देने के लिए निमंत्रित किया गया था। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि धारा-प्रवाह अंग्रेजी भाषा में दिया गया उनका भाषण न केवल हृदय स्पर्शी था बल्कि इस तथ्य को भी स्पष्ट करता था कि लाल बहादुर शास्त्री एवं उनके उदार व्यक्तित्व के बारे में विश्व कुछ भी नहीं जानता। उनका हर कार्य, सिद्धान्त और जीवन अत्यन्त निर्मल था-समझने में बहुत सहज तथा विवेक से परिपूर्ण। सम्भवतः हम सहजयोगियों को ये सभी गुण देवता रूप श्रीगणेश के प्रतीत होंगे परन्तु उन्होंने, आकर्षक व्यक्तित्व की शक्ति, उनके प्रेम, करुणा, विनम्रता, विवेक और सिद्धान्तों के बारे में बताया। अत्यन्त प्रेम पूर्वक उन्होंने जिस घटना का पुनः स्मरण किया वह थी, प्रधानमंत्री और उनके बीच शास्त्री जी की विनम्रता पर हुई बातचीत। उन्होंने कहा कि स्वर्गीय शास्त्री जी तब गृहमन्त्री थे और सर सी.पी. उनके केन्द्रीय सचिव। व्यक्तिगत रूप से, नमस्कार करते हुए शास्त्री जी हमेशा दोनों हाथ जोड़कर श्रीवास्तव साहब को, इससे पूर्व की वो उन्हें नमस्कार कर सकें, नमस्कार किया करते थे। उनकी सहजता इस प्रकार की थी। अपनी पदवी का उन्हें कभी अहंकार नहीं हुआ। उच्च पद-चेतना कभी उन पर हावी नहीं हुई। जब शास्त्री जी भारत के प्रधानमन्त्री थे और श्री अयूब खान पाकिस्तान के, उस समय दोनों प्रधानमन्त्रियों के बीच हुई बातचीत तथा उसके एक दूसरे पर पड़े प्रभाव की घटना का भी वर्णन उन्होंने किया।

एक औपचारिक बातचीत में श्री शास्त्री ने श्री अयूब खान को स्पष्ट एवं साफ शब्दों में बता दिया कि कभी भी वे भारत पर हावी होने का या भारत के किसी हिस्से को पाकिस्तान में मिलाने का न तो प्रयत्न करें और न ही सोचें क्योंकि अपनी जनता के गुणों के कारण भारत उनके देश से कहीं उच्च है। उनके अपने मूल्य हैं और उन मूल्यों का भारत अत्यन्त सम्मान करता है। इस प्रकार से सर सी.पी. ने व्याख्या की किस प्रकार श्री शास्त्री के शब्द शक्तिशाली माध्यम बने और दोनों देशों के बीच होने वाले संभावित युद्ध को होने से रोका और तत्पश्चात् दोनों प्रधानमन्त्रियों ने एक दूसरे के लिए शुभकामनाएं प्रकट कीं। युद्ध पर टिप्पणी करते हुए शास्त्री जी कहा करते थे कि युद्ध में हमेशा दोनों पक्षों की हानि होती है। इस महान व्यक्तित्व के साथ अपने सहचर्य की छोटी-छोटी घटनाओं, कथाओं का स्मरण करते हुए पापाजी एक घण्टे तक धाराप्रवाह बोलते रहे। उनका भाषण

मन्त्रमुग्ध कर देने वाला था। मानो एक बार फिर वे अकथित इतिहास को प्रकट कर रहे हों! परन्तु उन्होंने ये कार्य अत्यन्त ज्योतित दृष्टि से किया, उस दृष्टि से जो इतिहास के पाठ पढ़ते हुए हम लोगों में न थी। अपनी स्पष्ट और सहज अंग्रेजी में जब वे बोल रहे थे तो सारी घटनाएँ साकार हो उठीं। उन्होंने जीवन के कुछ संवेदनशील क्षणों का भी वर्णन किया। एक बार जब उन्होंने शास्त्री जी के पुत्र अनिल शास्त्री, जब वे बच्चे थे, को भेंट करने के लिए एक खिलौना खरीदा तो शास्त्री जी ने इसे स्वीकार करने से 'इन्कार कर दिया! निश्चित रूप से उन्होंने ऐसा पैसे के लिए नहीं किया, ये तो सिद्धान्त का मामला था। इस प्रकार से शास्त्री जी के सभी कार्यों से मानव रूप में अपनाए गए उनके सिद्धान्त और ईमानदारी का पूर्ण गहन जीवनदर्शन (Philosophy of Life) प्रकट होता है।

तत्पश्चात् श्री अनिल शास्त्री ने सर सी.पी. के परिवार की महानता के विषय में काफी कुछ कहा। व्यक्तिगत स्तर पर जीवन में उनकी प्रगति में सहायता करने के लिए भी उन्होंने सर सी.पी. के परिवार के योगदान को स्वीकार करते हुए आभार प्रकट किया। प्रेमपूर्वक उन्होंने स्मरण किया कि जब वे और उनके भाई सुनील तीसरी और चौथी कक्षा में पढ़ते थे तो उन्होंने हमारी प्रेममयी माँ, श्रीमाताजी से किसी अन्य से नहीं, ट्यूशन पढ़ी। सर सी.पी. और श्रीमाताजी के उन मूल्यों, प्रेम, करुणा और जीवन की उच्च गुणवत्ता का वर्णन भी उन्होंने किया जिनका वचन व्यक्ति विश्व को देता है। श्रीमाताजी के प्रति पूर्ण सम्मान के साथ उन्होंने कहा कि उनके शैशवकाल में उनके लिए वे न केवल प्रेरणा का स्रोत थीं बल्कि वे उनकी आदर्श भी थी। श्रीमाताजी की करुणा एवं प्रेम अतुलनीय हैं और इनका वर्णन कठिन है। एक अन्य व्यक्तिगत घटना के बारे में बताते हुए श्री अनिल शास्त्री ने कहा कि एक बार उनके जीजा के पेट में घोर समस्या थी। करुणामयी माताजी ने अपना हाथ उनके पेट पर रख दिया, क्षण भर में दर्द भाग गया और आज तक कभी नहीं लौटा। ऐसा था उनका प्रेम और रोग निवारक स्पर्श! दर्शकों का श्री अनिल शास्त्री को सुनना निःसन्देह हृदयस्पर्शी था। दोनों महान परिवारों की और अधिक कथाओं को वे सुनते रहना चाहते थे।

पापा जी ने पुरस्कार की एक लाख रुपये की पूरी राशि संस्थान को भेंट कर दी और विनम्रता पूर्वक संस्थान में शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति देने के लिए अपनी ओर से एक लाख रुपये का चैक भी भेंट किया। स्वलिखित पुस्तक 'लाल बहादुर शास्त्री' की अंग्रेजी तथा हिन्दी भाषा में 450 प्रतियाँ भी संस्थान के विद्यार्थियों को भेंट करके उन्हें अत्यन्त प्रसन्नता हुई।

वास्तव में व्यक्ति की उपलब्धियों की संख्या ही उसे जीवन से भी अधिक विशाल नहीं बनाती, परन्तु प्रेम, करुणा और मानवता के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए धड़कने वाला विशाल हृदय उसे यह पद प्रदान करता है। सर सी.पी. श्रीवास्तव जैसे विनम्र व्यक्ति की पत्नी के रूप में श्रीमाताजी की साक्षात् पावन उपस्थिति के कारण सभागार में प्रवाहित होने वाली अथाह चैतन्य-लहरियों तथा अगाध प्रेम के आदान-प्रदान का वर्णन करने के लिए ये कुछ क्षण सम्भवतः पर्याप्त नहीं है। पूर्ण ब्रह्माण्ड की प्रेममयी माँ के प्रेम एंव करुणा की अभिव्यक्ति का पूरा विश्व साक्षी था। उन्होंने अपने बच्चों को आशीर्वादित किया और बच्चे उनके पुनः पावन आगमन की उत्सुकता पूर्वक इच्छा करते रहे, परन्तु वे तो श्री महामाया के रूप में मौजूद हैं और सभी चीज़ों से लिप्त होकर भी साक्षी रूप से हर चीज़ का आनन्द लेती हैं!

उसी सन्ध्या सांय 6.00 बजे संस्थान ने सर सी.पी. और श्रीमाताजी के सम्मान में इण्डिया इंटरनेशनल सेन्टर लोदी रोड, नई दिल्ली में रात्रि भोज का आयोजन किया। भारत के बहुत से टी.वी. चैनलों ने इस घटना को रिकार्ड किया है और शीघ्र ही वे इसका प्रसारण करेंगे। इस घटना पर परम पावनी प्रेममयी माँ और पापाजी की उपस्थिति और उनके शक्तिशाली प्रेम विस्फोट को दूरदर्शन पर देखने की घोषणा की हम प्रतीक्षा करें।

जय श्रीमाताजी

गुड़गाँव सामूहिकता, भारत

सहज समाचार एवं सूचनाएं

शनिवार 15 अक्तूबर 2005 गुड़गाँव - भारत

सहजयोगियों और सहजयोगिनियों की विश्व सामूहिकता को
सर सी.पी. श्रीवास्तव (पापाजी) का सन्देश।

"..... एक वर्ष पूर्व उन्होंने (श्रीमाताजी) निर्णय किया कि 30-35 वर्षों तक उन्होंने सहजयोग का सृजन और प्रचार-प्रसार करने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा दी है। जैसा आप जानते हैं उन्होंने विश्व भर में हवाई जहाज, हैलिकॉप्टर, रेलगाड़ी, बस, पैदल, बैल-गाड़ी से यात्रा की और विश्व भर के नगरों तथा गाँवों में जाकर सहजयोगियों और सहजयोगिनियों के विश्व-बन्धुत्व का सृजन किया। 80 वर्ष की आयु पार करने के बाद उन्हें लगा कि अब समय आ गया है जब वे पीछे बैठें और अपने बच्चों से सहजयोग प्रचार प्रसार की जिम्मेदारी स्वयं संभालने के लिए कहें। आपको सहजयोग का सृजन नहीं करना है। ये कार्य उन्होंने कर दिया है। परन्तु उनका सन्देश फैलाया जाना है। अतः वे इस निष्कर्ष पर पहुँचीं कि पीछे बैठकर वे प्रेरणा स्रोत बनी रहेंगी तथा सहजयोगी और सहजयोगिनियाँ सहजयोग प्रचार-प्रसार की जिम्मेदारी सम्भालेंगे। अतः उन्होंने निर्णय किया कि यह कार्य सामूहिक रूप से किया जाना चाहिए, व्यक्तिगत अगुआओं द्वारा नहीं बल्कि सर्वत्र, पूरे विश्व के देशों एवं नगरों में एक सामूहिक संगठन द्वारा। अतः वे सामूहिक नेतृत्व चाहती हैं, यही उनकी इच्छा है। परिणाम स्वरूप सामूहिक नेतृत्व का अर्थ ये होगा कि यहाँ बैठे आप सभी लोग इस प्रक्रिया में शामिल हैं। पूरी सहज सामूहिकता को उनके सहजयोग के प्रचार-प्रसार का कार्य सौंपा गया है।

मैं आपके सम्मुख एक प्रस्ताव रखना चाहता हूँ, अनुरोध करना चाहता हूँ। आशा है आप मुझसे सहमत होंगे। **मुझे कोई सन्देह नहीं है कि आप मुझसे सहमत होंगे कि जहाँ तक सहजयोग का सम्बन्ध है केवल एक ही सृजनकर्ता हैं..... .श्रीमाताजी निर्मला देवी..... और केवल एक ही अगुआ हैं, श्रीमाताजी निर्मला देवी।**

मेरा आपसे अनुरोध है कि आप लोग मेरे इस कथन का समर्थन करेंगे कि, **"आज वे सहजयोग की एकमात्र अगुआ हैं और वे सदैव.....सदैव साकार या निराकार रूप में एक मात्र अगुआ बनी रहेंगी।"** क्या मैं ये बात मान लूँ कि आप सब मुझसे सहमत हैं और चाहते हैं कि यहाँ से पूरे विश्व को यह संदेश भेजा जाए?

प्रिय सहजयोगी एवं सहजयोगिनियों अब हमारे सम्मुख एक कार्य है और यह कार्य उनके सहजयोग सन्देश को सम्भाले रखने का है। ये सन्देश उनके असंख्य ऑडियो, वीडियो आदि में भरा हुआ है। विश्व-भर के सभी भागों में हमारी पहली जिम्मेदारी ये विश्वस्त करने की है कि जो भी कुछ उन्होंने कुछ कहा है, जहाँ भी उन्होंने कुछ कहा है, उसे इस प्रकार से सुरक्षित रखा जाए कि वह सहजयोग की कभी न खत्म होने वाली सम्पदा बन जाए। विश्व के सभी भागों में यही प्रयत्न किया जा रहा है।

सामूहिक नेतृत्व की अपनी इच्छा को पूर्ण करने के लिए उन्होंने **विश्व परिषद** की रचना की है और बहुत से देशों में सामूहिक नेतृत्व बनाया है तथा ये आन्दोलन चल रहा है। अब सामूहिक नेतृत्व व्यक्तिगत अगुआओं का स्थान ले लेगा। ये सामूहिक नेतृत्व मिल-जुलकर अत्यन्त आनन्दपूर्वक इस कार्य को कर रहे हैं। भारत में भी सामूहिक नेतृत्व के इस कार्य को करने के लिए नए ट्रस्ट की स्थापना की गई है और मुझे ये बताते हुए हर्ष हो रहा है कि इस ट्रस्ट ने कार्य करना आरम्भ कर दिया है।"

(नवरात्रि पूजा संध्या, गुड़गाँव, भारत 15.10.2005)

स्वान-सहज-संसार

घोषणाएं एवं समाचार

सहजयोग प्रचार-प्रसार विश्व परिषद (WCASY)
मंगलवार, दिसंबर 02, 2003

विश्वभर के सभी प्रिय सहजयोगी एवं सहजयोगिनियों,

हमें यह समाचार देते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी ने **'सहजयोग प्रचार प्रसार विश्व परिषद'** का गठन किया है। सहजयोग के इतिहास की ये एक अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना है।

दिसम्बर 2003 में अमेरिका से प्रस्थान करने से पूर्व श्रीमाताजी ने 'सहजयोग प्रचार-प्रसार विश्व परिषद' का गठन किया। इस संस्था का कार्य सहजयोग के विकास को बढ़ावा देना और राष्ट्रीय सामूहिकताओं की सहायता करना है।

सहजयोग प्रचार-प्रसार विश्व परिषद के 34 सदस्य हैं जिन्हें **'विश्व अगुआ' (World Leaders)** नाम दिया गया है। परिषद के आर्थिक, कानूनी एवं सम्पर्क मामलों के सलाहकार भी नियुक्त किए गए हैं। इस परिषद की हर वर्ष गोष्ठियाँ होने की संभावना है।

श्रीमाताजी की घोषणा इस प्रकार से है :-

"आज विश्व-भर में खलबली मची हुई है। विश्व के सभी लोग भविष्य के विषय में चिंतित हैं। उन्हें सहजयोग के सुखदायी, परस्पर जोड़ने वाले एवं उन्नत करने वाले आध्यात्मिक संदेश की आवश्यकता है। उन्हें आत्म-साक्षात्कार का अनुभव प्राप्त करने के योग्य बनाना होगा ताकि उनका अन्तर परिवर्तन हो सके। केवल तभी वे सभी मनुष्यों को विश्व-परिवार का सदस्य मानेंगे, चाहे वे किसी भी संस्कृति या प्रजाति से हों। केवल तभी वे घृणा एवं हिंसा का त्याग करेंगे..... मानव इतिहास के इस संकट की घड़ी में सहजयोगियों की अत्यन्त महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। अपने लेखों या प्रवचनों के माध्यम से उन्हें विश्व के हर हिस्से में सहजयोग फैलाना है. ...। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए भली-भांति सोचा विचारा दृष्टिकोण आवश्यक है।

विश्व परिषद के वर्तमान सदस्य

अध्यक्षा - श्रीमाताजी निर्मला देवी
सदस्य - (विश्व अगुआओं के रूप में मनोनीत)

1. राजेश शाह (Rajesh Shah)
2. ग्रेगौर डी कलबरमैटन (Gregoire De Kalbermatten)
3. डेविड स्पाइरो (David Spiro)
4. विजय नालगिरकर (Vijay Nalgirkar)
5. मनोज कुमार (Manoj Kumar)
6. एडुआरडो मेरिनो (Eduardo Marino)
7. वोल्फगेंग हैक (Wolfgang Hackl)
8. माजिद गोलपोर (Majid Golpour)
9. फिलिप जेइस (Phillip Zeiss)
10. डेरेक ली (Derek Lee)
11. अरनौ डी कलबरमैटन (Arneau De Kalbermatten)
12. नेस अलगन (Nese Algan)
13. इवान तान (Ivan Tan)
14. करन खुराना (Karan Khurana)
15. अलेक्स हेनशॉ (Alex Henshaw)
16. आल्डो गन्डोल्फी (Aldo Gandolfi)
17. राजीव कुमार (Rajiv Kumar)
18. ब्रायन वैल्स (Brian Wells)
19. डेविड डनफी (David Dunphy)
20. ज़फर रशीद (Zafar Rashid)
21. बोडन शेओविच (Bohdan Swehovich)

22. गगन अहलुवालिया (Gagan Ahluwalia)
23. पॉल इलिस (Paul Ellis)
24. अलन वेहरी (Alan Wherry)
25. अलन पेरेरिया (Alan Pereira)
26. संदीप गडकरी (Sandeep Gadkari)
27. मिहेला बालासिसकू (Mihaela Balasescu)
28. विक्टर बोन्डर (Viktor Bondar)
29. डिमिट्री कोरोटिएव (Dmitry Korotaev)
30. अलेक्जेंडर सोलोडियानकिन (Alexander Soldyankin)
31. क्रिस क्रिआकौ (Chris Kyriacou)

परिषद के सलाहकार

1. गगन अहलूवालिया (Gagan Alhlwalia) (वित्त, लेखा-जोखा तथा संपत्ति सम्बन्धी मामले)
2. पॉल एलिस (Paul Ellis) (कानूनी मामले)
3. एलेन व्हेरी (Alan Wherry) (प्रकाशन)

☆☆☆☆

परमपूज्य श्रीमाताजी का सन्देश, 'सहजयोग प्रचार-प्रसार विश्व परिषद'

वृहस्पतिवार 4 नवंबर 2004

मेरी आशाओं के पूर्णतः अनुरूप अरनौ डी.कलबरमैटन (Arneau De Kalbermatten) ने 'सहजयोग प्रचार-प्रसार विश्व परिषद' के समन्वयक (Co-Ordinator) के रूप में अपनी महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों को शानदार ढंग से निभाना शुरु कर दिया है। उसकी सूचनाएं (Reports) दर्शाती हैं कि वर्तमान अध्ययन और भविष्य-योजनाओं के मूल विषयों की सावधानी पूर्वक पहचान की जा चुकी है और इन्हें 'विश्व परिषद' की सोच समझकर बनाई गई समितियों को सौंप दिया गया है।

इस परामर्श से भी मैं बहुत प्रसन्न हूँ कि विश्व-परिषद के सभी सदस्य सहज-दृष्टि एवं पूर्ण समर्पण के साथ परस्पर मिलकर कार्य कर रहे हैं। वे जानते हैं कि उन्हें अत्यन्त बँटे हुए और घोर कष्टों में फँसे विश्व में सहज के प्रेम एवं एकता के सन्देश को फैलाना है।

विश्व परिषद की सफलता के लिए मेरी शुभकामनाएं हैं और इसकी निरन्तरता को बनाए रखने के लिए 'सहजयोग प्रचार प्रसार विश्व परिषद' के समन्वयक (Co-Ordinator) के रूप में मैं अरनौ डी कलबरमैटन (Arneau De Kalbermatten) के कार्यकाल को 31 दिसम्बर 2006 तक बढ़ाती हूँ।

(माताजी श्री निर्मला देवी, 3 नवंबर 2004)

सहजयोग विश्व-परिषद द्वारा प्रस्तावों की स्वीकृति

वृहस्पतिवार 24 नवंबर 2005

विश्व सामूहिकता के प्रिय भाइयो एवं बहनों,

हमारी परम पावनी माँ द्वारा विश्व परिषद की स्थापना, उनके द्वारा सौंपे गए पदभारों की स्वीकृति, श्रीमाताजी द्वारा वर्ष 2001 में स्थापित सामूहिक नेतृत्व के सिद्धान्त के प्रति हमारी श्रद्धा और अन्ततः विश्व परिषद के लक्ष्य वक्तव्य (Mission Statement) जिसमें इसके आदेश को श्रीमाताजी के प्रति श्रद्धांजलि तथा विश्व सामूहिकता की सेवा कहा गया है, को सहजयोग प्रचार-प्रसार विश्व परिषद आप सबके साथ बाँटना चाहेगी।

आशा की जाती है कि ये प्रस्ताव तथा लक्ष्य वक्तव्य (Mission Statement) आने वाली पीढ़ियों के लिए श्रीमाताजी की धरोहर को पूरी तरह से संभालने और बढ़ाने का आधार स्थापित करेंगे तथा परिषद के सहज सिद्धान्तों के अनुकूल अपनी जिम्मेदारियाँ निभाने के लिए कार्यविधियाँ तथा नैतिक संहिता का सृजन करेंगे। आपकी सूचना तथा आपके समझने के लिए निम्नलिखित दस्तावेज़ संलग्न किए जा रहे हैं:-

1. उत्तरदायित्व की विनम्र स्वीकृति प्रस्ताव एवं सामूहिक नेतृत्व का प्रतिज्ञा प्रस्ताव।
2. सहजयोग प्रचार-प्रसार विश्व परिषद (WCASY) का लक्ष्य वक्तव्य

ये हमारी सच्ची आशा है कि यह संदेश विश्व सहज संघ में होने वाली सभी गतिविधियों के बारे में आपको सूचित करने के लिए 'सहज़योग प्रचार-प्रसार विश्व परिषद' के नियमित संदेशों में से एक होगा। प्रेम एवं सम्मानसहित 'विश्व परिषद' के आपके भाई एवं बहनें

सहजयोग प्रचार-प्रसार विश्व परिषद (WCASY)

जिम्मेदारी की विनम्र स्वीकृति का प्रस्ताव

विश्व परिषद के गठन की पृष्ठभूमि

20 नवंबर 2003 को लॉस एंजलिस अमेरिका स्थित श्रीमाताजी के निवास पर सहजयोग प्रचार-प्रसार विश्व परिषद का गठन किया गया। जिस समय श्रीमाताजी ने विश्व परिषद बनाने का निर्णय लिया तो ग्रेगौर डी. कलबरमैटन करण खुराना, मनोज कुमार, गगन अहलुवालिया और पॉल एलिस सहित बहुत से सहजयोगी वहाँ पर उपस्थित थे।

श्रीमाताजी ने स्पष्ट रूप से समर्थन किया कि जिस दस्तावेज पर वे हस्ताक्षर कर रही हैं यह उनकी अपनी इच्छा के अनुरूप है और उनकी इच्छा की अभिव्यक्ति है। सक्रियतापूर्वक वे बातचीत में व्यस्त थीं, और उपस्थित लोगों से उन्होंने विस्तार-पूर्वक बात की। अपनी अननुकरणीय शैली में उन्होंने इस प्रकार बात की कि हम सब अच्छी तरह से समझ सकें। श्रीमाताजी ने स्वयं विश्व परिषद के सदस्यों की सूची का पुनर्वलोकन किया और उसमें, जैसे उचित समझा, परिवर्तन किए। ऊपर लिखित सभी सहजयोगी, जो इस अवसर पर उपस्थित थे, उन्होंने श्रीमाताजी द्वारा विश्व परिषद के गठन की अपनी इच्छा की अभिव्यक्ति के अवसर के क्षण का साक्षी होने पर स्वयं को सौभाग्यशाली माना।

प्रस्तावना (Preamble)

सहजयोग एक आध्यात्मिक आन्दोलन है जो महावतार आदिशक्ति श्रीमाताजी निर्मला देवी के साक्षात् और उनकी धरोहर के प्रति इसके सदस्यों (सहजयोगियों) की श्रद्धा एवं सत्य निष्ठा से प्रेरित है।

श्रीमाताजी ने हम सबको एक उद्देश्य एवं भूमिका के लिए परिषद में रखा है और दिव्य ज्ञान के अपने शाश्वत सिद्धान्त द्वारा केवल वे ही पूरी तरह से जानती हैं और इसी चेतना द्वारा ही अपने अनुयायियों के रूप में वे हमारा पथ प्रदर्शन करती हैं। **कौन और क्यों, ये प्रश्न करना हमारा कार्य नहीं है, हमें तो केवल ये याद रखना है कि श्रीमाताजी सदा-सर्वदा हमारी गुरु हैं और उनकी इच्छा ही सर्वोपरि है।** परिषद का कोई भी सदस्य क्योंकि गलतियों से ऊपर नहीं है, अतः श्रीमाताजी से निरन्तर जुड़े रहते हुए सहज सामूहिकता के अभिन्न अंग के रूप में हम अत्यन्त विनम्रता पूर्वक विवेक एवं पथ-प्रदर्शन की खोज करेंगे, ताकि उस दिव्य दिशा को खोज सकें जो वे निरन्तर हमें प्रदान करती हैं, और मानव मात्र को सामूहिक आत्म-साक्षात्कार का अनुभव प्रदान करने के उनके स्वप्न को साकार करने में, उनके आदेशों को विनम्रता एवं निस्वार्थतापूर्वक पालन करके मानव की सहायता करेंगे।

ये हमारी जिम्मेदारी है कि श्रीमाताजी की धरोहर को भविष्य में पूर्णतः सुरक्षित रखें और इसे आगे बढ़ाएं। ऐसा करने के लिए हमें एकजुट होकर श्रीमाताजी के प्रति पूर्ण श्रद्धापूर्वक तथा अपनी चैतन्य-लहरियों और सामूहिक चेतना के प्रति पूर्णतः संवेदनशील होकर कार्य करना होगा।

संकल्प

हमारी परमेश्वरी माँ एवं गुरु 'श्री आदिशक्ति माताजी श्री निर्मला देवी' साक्षात के आदेशानुसार :

विश्व परिषद के हम सभी सदस्य स्वीकार करते हैं कि जब तक श्रीमाताजी सहजयोग के रोज़मर्रा के कार्यों से दूर रहना चाहेंगी, संस्था तथा शासन सम्बन्धी पक्ष, विश्व सामूहिकता को प्रभावित करने वाले मामले तथा ब्रह्माण्डीय मामले, जिनका अन्यथा श्रीमाताजी साक्षात् अपने पावन, सर्वशक्तिमान एवं सर्वव्याप्त चित्त से पथ प्रदर्शन करती रहेंगी, हमारी जिम्मेदारी होगी।

परमेश्वरी प्रेम की चैतन्य-लहरियों, परम चैतन्य के अनुरूप सहज ढंग से अपनी जिम्मेदारियों को निभाने के लिए परिषद नियमाचरणों का प्रतिपादन करेगी तथा उन्हें अपनाएगी।

श्रीमाताजी के उपहार, सहजयोग को पूरे विश्व के साथ बाँटने, विश्वभर के सहजयोगियों में प्रेम बन्धन तथा सामूहिकता को दृढ़ करने के लिए आवश्यक सहज-वातावरण को बढ़ावा देने के कार्य के प्रति हम स्वयं को पूर्णतः समर्पित करते हैं।

हम श्रीमाताजी से प्रार्थना करते हैं कि हमें विवेकाशीश प्रदान करें ताकि हम विनम्रता एवं साहस-पूर्वक उनके कार्य को चालू रखें। किसी भी प्रकार की गलती के लिए हम उनसे क्षमा याचना करते हैं और प्रार्थना करते हैं कि वे हमें अपने चरण-कमलों में और अपने हृदय में स्थान प्रदान करें।

☆☆☆☆

सहजयोग प्रचार-प्रसार विश्व परिषद सामूहिक नेतृत्व के प्रति श्रद्धा संकल्प

सामूहिक नेतृत्व के सिद्धान्त की पृष्ठ-भूमि

सामूहिकता सहज-योग को एक सूत्र में पिरोए रखने वाली ऐसी शक्ति है जो हमारी चेतना एवं हमारे अस्तित्व को पूर्ण करती है। सामूहिक ध्यान-धारणा में चैतन्य-लहरियाँ अत्यन्त शक्तिशाली होती हैं और सच्चे एवं समर्पित सहजयोगी जब सामूहिक रूप से सहज निर्णय लेते हैं तो उनसे श्रीमाताजी की इच्छा प्रतिबिम्बित होती है।

दिसम्बर 2001 के एक एतिहासिक दिन श्रीमाताजी ने अपने पथ प्रदर्शन एवं निर्देशनों की व्याख्या की तथा इन्हें स्थापित किया। सहज संचालन (Governance) के मामले पर उन्होंने अपना पहला पथ-प्रदर्शन दिया और विश्व निर्मला-धर्म अमेरिका (V.N.D.) के सामूहिक नेतृत्व के सृजन को हस्ताक्षर करके लागू किया। श्रीमाताजी ने स्वयं विश्व निर्मल धर्म (V.N.D.) के सात निर्देशक चुने जो राष्ट्रीय अगुआ के साथ काम करेंगे और राष्ट्रीय महत्व के मामलों पर सामूहिक निर्णय लेने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाएंगे। उन्होंने (श्रीमाताजी) सामूहिक निर्णयों की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने तथा विश्व निर्मलाधर्म का प्रतिनिधित्व करने के लिए अगुआओं की दूसरी पंक्ति भी प्रथम पंक्ति में जोड़ी। इस अवसर पर अपनी इच्छाओं की गहनता के विषय में उन्होंने हमें बताया कि विश्व-स्तर पर सहज प्रशासन सम्बन्धी निर्णय सामूहिक समिति के नियमों के अन्तर्गत ही लिए जाने चाहिएं। उन्होंने ये भी कहा कि जिस आदर्श (Model) का सृजन उन्होंने किया है उसका सभी देशों को अनुसरण करना चाहिए।

प्रस्तावना (Preamble)

सामूहिक चेतना सहज अस्तित्व का मूल-भूत सिद्धान्त है जिसके द्वारा परम चैतन्य उनका (श्रीमाताजी) संदेश प्रसारित करता है और हमारा परस्पर सम्पर्क बना रहता है। हमारे सामूहिक अस्तित्व में ही वे हमें प्रेरित करती हैं और हमारा पथ प्रदर्शन करती हैं क्योंकि उनका स्वभाव हमारे चरित्र को एक सामूहिक अस्तित्व के रूप में ढालता है और उनके लिए जो भूमिका हमें निभानी है उसके लिए सम्मिलित होने की

आज्ञा देता है। अतः हम सबको चाहिए कि एकजुट होकर कार्य करने का संकल्प करें।

ये सभी सत्य हम स्वतः स्पष्ट मानते हैं :- कि योगिनियाँ और योगी स्वयं के गुरु हैं तथा उन्हें अपने सहस्रार चक्र और परमात्मा के बीच मध्यस्थ के रूप में किसी पुरोहिती-संस्था की आवश्यकता नहीं है। परिषद इस तथ्य से भली-भांति परिचित है कि विधान की आवश्यकता बहुत ही कम है क्योंकि सहज योग श्रीमाताजी निर्मला देवी की शिक्षाओं पर आधारित है और ये शिक्षाएं उनके प्रकाशित, ऑडियो, वीडियो प्रवचनों में मौजूद हैं।

इसलिए सहजयोग में नेतृत्व संस्था, विश्व परिषद की सदस्यता सहित, को आध्यात्मिक धर्म तन्त्र नहीं माना जाता इसे समर्थ एवं शक्तिप्रदायी ताकत माना जाता है। श्रीमाताजी हमारा आदर्श हैं एवं हमारे सम्मुख उदाहरण है। वे साक्षात् आदिशक्ति हैं जो परमात्मा की सृष्टि को सहजयोग के माध्यम से, इसका सच्चा अर्थ प्रदान करने के लिए पृथ्वी पर अवतरित हुई हैं और जिन्होंने विश्व भर में निःस्वार्थ कार्य करके सहजयोग फैलाने के लिए अपना जीवन समर्पित किया है।

विश्व परिषद, राष्ट्रीय अगुआगण एवं सम्बन्धित समितियों ने अपनी सामूहिकताओं की सुचारु एवं प्रगतिशील उन्नति को हितकर रूप से सम्भालना है, संचालित करना है, एवं सुसाध्य बनाना है।

संकल्प (Resolution)

विश्व परिषद के हम सभी सदस्य सामूहिक निर्णय लेने के सहज-सिद्धान्त के प्रति स्वयं को पूर्णतः समर्पित करते हैं। पूर्ण सत्यनिष्ठा पूवर्क हम पुष्टि करते हैं कि विश्व-परिषद की कार्य-शैली सामूहिक निर्णय लेने के नियमाचरणों के अनुरूप होगी। कम से कम 75 प्रतिशत सदस्यों की सहमति से निर्णय लिए जाएंगे, या तो सीधे सलाह मश्वरे द्वारा या समितियों के माध्यम से, और इन समितियों में सामूहिक प्रणाली के अनुरूप कम से कम तीन सदस्य होंगे।

आगे हम पुष्टि करते हैं कि राष्ट्रीय सामूहिकताओं तथा सहज सामूहिकताओं के सभी स्तरों के स्थान पर उपयुक्त सामूहिक निर्णय प्रणाली लाने के लिए विश्व परिषद पथ-प्रदर्शन, निर्देशन एवं आधार प्रदान करने के लिए वचनबद्ध है।

सहज सामूहिकताओं तथा समितियों की कार्यशैली में उच्चतम आध्यात्मिक एवं नैतिक स्तर बनाए रखना इस परिषद का लक्ष्य है, ताकि श्रीमाताजी निर्मला देवी की शिक्षाओं के अनुरूप विश्वभर में सहज-सन्देश एवं आदर्शों की पहुँच निश्चित की जा सके। हम परम पूज्य श्रीमाताजी से विनम्र प्रार्थना करते हैं कि परमचैतन्य को हमारा पथ-प्रदर्शन करने की आज्ञा दें और सहजयोग के जीवन्त कार्य को वैसे ही चलने दें जैसे उन्होंने हम सब को व्यक्तिगत रूप से सिखाया हैं हमारी करुणामयी और प्रेममयी माँ, हितैषी गुरु एवं देवी, जिसकी हम पूजा करते हैं, से हमारी विनम्र प्रार्थना है कि वे सदा हमारे हृदय में विद्यमान रहें।

☆☆☆☆

सहजयोग प्रचार प्रसार विश्व परिषद
लक्ष्य वक्तव्य (Mission Statement)

प्रस्तावना

समाज के सदस्यों के अन्तःपरिवर्तन एवं सुधार के बिना किसी भी समाज का सुधार नहीं हो सकता। आध्यात्मिक उत्क्रान्ति एवं आत्मोत्थान, साधकों को आध्यात्मिक शक्ति प्रदान करने के लक्ष्य-प्राप्ति के लिए सहजयोग-संस्थापिका, श्रीमाताजी निर्मला देवी ने अपना जीवन समर्पित कर दिया है।

श्रीमाताजी निर्मला देवी सहजयोग विश्व संस्थान (यह 'सहजयोग प्रचार-प्रसार विश्व परिषद' के नाम से भी जाना जाता है) का कार्य श्रीमाताजी के महान कार्य को चालू रखना तथा सहजयोग प्रचार-प्रसार करना है।

यह अन्तर्राष्ट्रीय लाभ-निरपेक्ष संस्था है जो श्रीमाताजी निर्मला देवी के ब्रह्माण्डीय आध्यात्मिक कार्य के सन्देश तथा उनकी शिक्षाओं को आगे बढ़ाने, उनका प्रचार-प्रसार करने तथा उन्हें बनाए रखने के कार्य के प्रति समर्पित है।

अन्तर्विज्ञान और सहजयोग अभ्यास को विश्व भर में विशेष कार्यक्रमों (जैसे सभाओं और गोष्ठियों), संस्थानिक (Institutional) विकास कार्यों (जैसे शिक्षा,

स्वास्थ्य और पर्यावरण अनुकूल गतिविधियों), ध्यान केन्द्र तथा पूजा एवं ध्यान धारणा के स्थानों की स्थापना (जैसे आश्रम, मन्दिर और जन-केन्द्र) तथा सहजयोग सामूहिकता की आर्थिक, कानूनी एवं शोध आवश्यकताओं की सहायता के कार्यों के माध्यम से **'श्रीमाताजी निर्मला देवी सहजयोग विश्व संस्थान'** अपने लक्ष्य को आगे बढ़ाता है।

विश्व-परिषद अपने इन कर्तव्यों का अपने गुरु तथा विश्व सामूहिकता की सेवा के प्रति श्रद्धांजलि के रूप में पालन करता है। परस्पर प्रेम एवं सूझ-बूझ के वातावरण में अपने सदस्यों की सामूहिक चेतना को बढ़ाने के लिए विश्व परिषद दो प्रस्तावों के सार का पालन करती है। इन प्रस्तावों में मूल सिद्धान्त निहित हैं जिनकी विश्व परिषद के सभी भावी सदस्यों से सहमत होने की आशा की जाती है:

☆ जिम्मेदारी की विनम्र स्वीकृति का प्रस्ताव।
☆ सामूहिक नेतृत्व के प्रति पूर्ण श्रद्धा (Commitment) का प्रस्ताव।

ज्ञान की अभिव्यक्ति :

विश्व परिषद इस बात को मान्यता देती है कि सहजयोग का ज्ञान जीवन्त ज्ञान है जिसे श्रीमाताजी निर्मला देवी द्वारा दिखलाए गए मार्ग पर सत्य-निष्ठा पूर्वक चलकर अपनी आन्तरिक ज्योति के माध्यम से हर योगिनी और योगी विकसित, अभिव्यक्त और प्रसारित करता है। इस आध्यात्मिक अनुभव के लाभ एवं प्रचार-प्रसार के कार्य को चालू रखने एवं आसान बनाने के लिए प्रवचनों, भाषणों, प्रकाशित पुस्तकों, ऑडियो और वीडियो ग्रन्थों की श्रद्धा-पूर्वक देख-रेख करने तथा गतिशीलता पूर्वक बढ़ावा देने के लिए विश्व परिषद कटिबद्ध है।

आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक समन्वय-

परम पूज्य श्रीमाताजी निर्मला देवी की विधियों तथा शिक्षाओं से पहली बार अब सामूहिक आत्म-साक्षात्कार सम्भव हुआ है और विश्व आध्यात्मिक के विकास में अथाह महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण कर रहा है। विश्व परिषद स्वीकार करती है कि सहजयोग के माध्यम से आत्म-साक्षात्कार का अनुभव ऐसी सच्चाई बन चुका है जिसे प्राप्त किया जा सकता है तथा मानव के सभी महान धर्मों के सन्देश का निश्चित रूप से यही मूल-संदेश है। अतः भिन्न सभ्यताओं, धर्मों और संस्कृतियों में सूझ-बूझ तथा सहिष्णुता पैदा करने के लिए संचालन एवं संयोजन शक्ति बनने की अपनी जिम्मेदारी को विश्व-परिषद समझती है।

संचालन (Governance)

श्रीमाताजी निर्मला देवी की अध्यक्षता में विश्व-परिषद सभी संस्थानिक एवं पूर्ण सहजयोग सामूहिकता सम्बन्धी मामलों में नेतृत्व, निर्णय एवं सलाह देने के लिए जिम्मेदार है।

राष्ट्रीय सामूहिकता के अपनी राष्ट्रीय नेतृत्व समितियाँ नियुक्त करने की प्रक्रिया में विश्व-परिषद सहयोग करेगी। कहीं यदि राष्ट्रीय-स्तर पर महत्वपूर्ण मामले निपटाने में सदस्यों में परस्पर मतभेद होंगे तो विश्व-परिषद का निर्णय अन्तिम होगा। अपनी समितियों, कार्य-दलों और कार्यक्रमों द्वारा विश्व परिषद, विश्व सामूहिकता को प्रभावित करने वाले विश्व-स्तरीय मामलों की ओर ध्यान देगी और सम्बन्धित परियोजनाओं एवं नेतृत्व को बढ़ावा देगी।

☆☆☆☆

इटली में नए सामूहिक नेतृत्व की घोषणा
मंगलवार, 26 जुलाई 2005

हम हर्ष पूर्वक घोषणा करते हैं कि श्रीमाताजी ने इटली में नए सामूहिक नेतृत्व को स्वीकृति देकर आशीर्वादित किया है। आल्डो गन्डोल्फ़ी (Aldo Gandolfi) 'इटली राष्ट्रीय सहजयोग समिति' के समन्वयक (Co-ordinator) होंगे। समिति के अन्य सदस्य निम्नलिखित हैं :-

सहजयोग प्रचार-प्रसार विश्व परिषद

इटली में सहजयोग की प्रगति के लिए सामूहिक नेतृत्व प्रदान करने हेतु मैं तत्काल प्रभावित सामूहिक नेतृत्व की नियुक्ति करती हूँ, जो हमेशा **'सहजयोग प्रचार-प्रसार विश्व परिषद'** के निर्णयों के पूर्ण अनुरूप कार्य करेगी:

1. Aldo Gandolfi (Coordinator)
2. Andrea Antoniani
3. Marco Arciglio
4. Duillio Cartocci
5. Massimo Cesetti
6. Sandra Castelli

7. Giampiero De Michelis
8. Giancarlo Fuente
9. Michela Cavalletti
10. Sandeep Gadkery
11. Allessandro Giannotti
12. Ernesto Kuhn
13. Sanjay Mane
14. Tommaso Merella
15. Felicia Micolucci
16. Luigi Piccinini
17. Ezio Prandini
18. Alessandro Scarno
19. Antonio Scialo
20. Maurizio Taddei
21. Rubens Tommasi
22. Antony Visconti

माता जी निर्मला देवी।

☆☆☆☆

रूस में नए सामूहिक नेतृत्व की घोषणा : रविवार 7 अगस्त 2005

हर्षपूर्वक हम घोषणा करते हैं कि श्रीमाताजी ने रूस के लिए एक नए सामूहिक नेतृत्व को स्वीकृति तथा अशीर्वाद दिया है। Dmitry Korotaev रूस की सहजयोग प्रगति के लिए बनी राष्ट्रीय परिषद के समन्वयक (Coordinator) होंगे अन्य सदस्यों के नाम नीचे दिए गए हैं।

Sergey Perezhogin के सहजयोग के सभी पदों से त्यागपत्र को श्रीमाताजी द्वारा स्वीकार करने के पश्चात् नई सामूहिक नेतृत्व समिति की नियुक्ति की गई है। तत्काल प्रभाव से मैं सहजयोग प्रचार-प्रसार रूसी राष्ट्रीय परिषद के लिए निम्न लोगों की नियुक्ति करती हूँ। ये लोग रूस में सहजयोग के सभी कार्यों के लिए सामूहिक नेतृत्व प्रदान करेंगे और सदैव सहजयोग प्रचार-प्रसार विश्व परिषद के निर्णयों के अनुरूप कार्य करेंगे।

1. Dmitry Korotaev (National Coordinator)
2. Alexander (Sasha) Solodiankin
3. Valentina Kushnarenko
4. Slava Ivanov
5. Viktor Chaschin
6. Tamara Sostamoynen
7. Viktor Fedorov
8. Anatoly Gromov
9. Kontstantin Nazrachov
10. Viktor Yevstaviev
11. Anatoly Kozuhov
12. Bohdan Shehovych
13. Alan Wherry

माताजी श्री निर्मला देवी

☆☆☆☆

यू.के. सहजयोग प्रचार-प्रसार राष्ट्रीय समिति सोमवार 10 अक्टूबर 2005

सहजयोग प्रचार-प्रसार कार्य को गति प्रदान करने के लिए अब आवश्यक हो गया है कि सामूहिक नेतृत्व बना दिए जाएं। बहुत से देशों में ऐसे प्रबन्ध किए जा चुके हैं।

अब मैंने यू.के. सहजयोग प्रचार-प्रसार समिति की नियुक्ति करने का निर्णय लिया है।

1. Dr. David Spiro - Co-Ordinator
2. Derek Lee
3. Dr. Zafar Rashid
4. Dr. Brian Wells
5. Alan Pereira
6. John Glover
7. Hesta Spiro
8. Guy Beaven
9. Dr. Sarah Setchell
10. Vinayaka Francis
11. Ray Harris
12. Alan Henderson
13. Nigel Powell
14. Patty Prole
15. Pasquale Scialo
16. Martin Watt
17. Peter Yeboah
18. Geoffery Godfrey
19. Robbert Ruigrok
20. Bhanu Prakash Reddy
21. Anthony Headlam
22. Daniel Wagner

माताजी श्री निर्मला देवी, 10 अक्टूबर 2005

☆☆☆☆

स्विटज़रलैण्ड में नए नेतृत्व की संरचना हमारी प्रिय परमेश्वरी माँ श्रीमाताजी के चरणों में समर्पित

प्रिय श्रीमाताजी,

पिछले वर्षों में स्विटज़रलैण्ड सहज- सामूहिकता को फैला पाया है। फिर भी आपका दिव्य कार्य आगे बढ़ाने के लिए और आध्यात्मिक गतिशीलता को हर कस्बे हर गाँव में पहुँचाने के लिए हमारे देश को नए प्रोत्साहन की आवश्यकता है। इस परिदृश्य में हमें लगा कि एक नए नेतृत्व की संरचना की जाए जो मानव के आन्तरिक उद्धार के आपके स्वप्न को सफलता पूर्वक साकार कर सके।

आध्यात्मिक आवश्यकताओं को उचित ढंग से पूर्ण करने के लिए सामूहिक नेतृत्व संरचना की आवश्यकता को हमने पहचाना। अतः, श्रीमाताजी, मेरी विनम्र विनती है कि इस नए स्विस नेतृत्व संगठन को आशीर्वादित करें, तथा मेरा ये भी विनम्र निवेदन है कि कृपा करके उनका पथ-प्रदर्शन करें और भविष्य की जिम्मेदारियाँ निभाने के लिए उन्हें परामर्श दें। इस सामूहिक नेतृत्व के लिए मैं निम्नलिखित सहजयोगी और सहजयोगिनियों के नाम सुझाता हूँ, ये इस कार्य के लिए अत्यन्त उपयुक्त होंगे :-

1. Arneau de Kalbermatten (National coordinator)
2. Bernd Treichel 3. Christian Mathys
4. Eric Deladoey 5. Franca Clendon
6. Gilbert Jeanneret 7. Gilles Rode
8. Harsha Mohan 9. Jean-Pierre Koller
10. Jose Di Munno 11. Richard Mathys
12. Thibaut Denblyden

उपरोक्त सूची को श्रीमाताजी ने स्वयं प्रतिष्ठान में 12 नवम्बर 2005 के दिन आशीर्वादित किया।

अनन्त प्रेम एवं सम्मान सहित

Arneau, November 20, 2005

☆☆☆☆

राष्ट्रीय ट्रस्ट - भारत

8 अप्रैल 2005

प्रिय भाईयों एवं बहनों,

हर्षपूर्वक हम सूचना देते हैं कि परम पूज्य श्रीमाताजी ने, भारत के लिए **'परमपूज्य श्रीमाताजी निर्मला देवी सहज योग ट्रस्ट'** का गठन किया है इसका विवरण निम्नलिखित है :

अध्यक्षा

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी

उपाध्यक्ष

सर सी.पी. श्रीवास्तव

सह-उपाध्यक्ष

राजेश शाह

न्यासी (Trustees)

1. वी.जे. नालगिरकर 2. राजीव कुमार
3. दिनेश रॉय 4. सुरेश कपूर
5. अशोक अग्रवाल 6. कल्पना श्रीवास्तव
7. साधना वर्मा 8. विजय क. गौतम
9. र.क. पुगलिया 10. वाई.पी. सिंह

निम्नलिखित को राष्ट्रीय ट्रस्ट में विशिष्ट अतिथि (आमंत्रित न्यासी) नियुक्त किया गया है:

1. भगवती सिंह 2. किरण वालिया
3. स. राम मोहन राओ 4. चन्द्र प्रभा
5. करुण साँघी 6. गि.ल. अग्रवाल
7. पराग राजे

मेरे आशीर्वाद एवं शुभकामनाओं सहित

(हस्ताक्षर)

माताजी निर्मला देवी

प्रतिष्ठान पुणे, 16 अप्रैल 2005

☆☆☆☆

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी एवं सहजयोग ट्रस्ट के न्यासियों की मीटिंग के अवसर पर दिया गया सन्देश

मुम्बई, 25 अप्रैल 2005

आठ अप्रैल 2005 को मैंने **'परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी सहजयोग ट्रस्ट'** (राष्ट्रीय ट्रस्ट) की स्थापना की है। इस राष्ट्रीय ट्रस्ट का उद्देश्य मेरे सहजयोग, प्रेम, सामंजस्य और कुण्डलिनी जागृति के सन्देश को, हमारी प्राचीन भूमि के कोने-कोने तक और हर सत्य साधक तक पहुँचाना है। ये एक एतिहासिक जिम्मेदारी है जिसे मैं आप सबको सौंप रही हूँ। मुझे विश्वास है कि आप निःस्वार्थ भाव से, और अधिक वचन-बद्धता के साथ, इस सन्देश को फैलाने तथा सहजयोगियों में प्रेम एवं आनन्द बाँटकर सहज-सामूहिकता को दृढ़ करने के लिए अथक कार्य करेंगे। इसके साथ-साथ मैं ये भी जानती हूँ कि ध्यान धारणा की गहनता में और अधिक उतरने तथा आध्यात्मिक रूप से विकसित होने के लिए आप निरन्तर संघर्ष करेंगे।

इस सन्दर्भ में मैं चाहूँगी कि सभी न्यासी (Trustees) निम्नलिखित नियमाचरणों को अपनाएं। ये नियमाचरण राष्ट्रीय ट्रस्ट की कार्यशैली के लिए पथ प्रदर्शक रूप-रेखा बनेंगे।

मेरे आशीर्वाद एवं शुभकामनाओं सहित,

(हस्ताक्षर)

माताजी निर्मला देवी

कबैला की सम्पत्तियाँ विश्व सहज सामूहिकता को भेंट

वृहस्पतिवार 15 सितम्बर 2005

कुछ दिन पूर्व पिछले वर्ष की घोषणा की पुष्टि करते हुए श्रीमाताजी ने ये आश्चर्यजनक समाचार दिया कि कबैला की चार सम्पतियाँ Palazzo Doria, The Hanger, Centrassi and Daglio सहज संस्थान को भेंट कर दी गई हैं। श्रीमाताजी की ये भेंट न्यू जर्सी के अपने घर के उदार उपहार के अतिरिक्त है।

सर सी.पी. ने इस भेंट के सम्बन्ध में बताया, जिसे श्रीमाताजी भी सुन रहीं थीं, कि कबैला में हर वर्ष एक पूजा होनी चाहिए-गुरु पूजा - जिसमें विश्व भर से आए योगियों को इक्ट्ठा होना चाहिए, और सहजयोग के प्रचार-प्रसार, इसे दृढ़ करने के लिए और सहज सामूहिकता को फैलाने के लिए तथा अन्य सहज गतिविधियों के लिए इन सम्पत्तियों का उपयोग किया जाना चाहिए। विशेष रूप से एक गतिविधि जिसका वर्णन किया गया था कि यह चलती रहनी चाहिए वह थी हर गर्मियों में Daglio में बच्चों का कैम्प।

उनकी (श्रीमाताजी) की घोषणा के पश्चात् यह निश्चय किया गया कि इटली में सम्पत्तियाँ ग्रहण करने के उद्देश्य से एक नई संस्था का सृजन किया जाएगा। ये कार्य आगामी सप्ताहों में होगा ताकि आगामी दो माह के अन्दर ये संस्था अधिकारिक रूप से श्रीमाताजी के दान को स्वीकार कर सके।

पूरी सहज सामूहिकता की ओर से हमने श्रीमाताजी के प्रति अपनी कृतज्ञता एवं अनुग्रह की अभिव्यक्ति कर दी है कि उन्होंने, सर सी.पी. तथा पूरे परिवार ने सहजयोग की भावी पीढ़ियों को ये सम्पत्तियाँ प्रदान की हैं। श्रीमाताजी के महान कार्य के इतिहास में तथा विश्व भर के सहजयोगियों के हृदयों में इन सम्पत्तियों का अद्वितीय सम्मान है। हमने शपथ ली कि विश्व सामूहिकता के रूप में हम इन सम्पत्तियों का उपयोग उनके द्वारा बताए गए आदर्शों को पूर्ण करने के लिए करेंगे - उनके दिव्य प्रेम, आन्तरिक काया परिवर्तन और पावन आत्माओं की आध्यात्मिक सर्वोच्चता के स्वप्न को साकार करने के लिए।

जय श्रीमाताजी!

(सहजयोग प्रचार-प्रसार विश्व परिषद)

न्यू जर्सी में गुरु पूजा के अवसर पर WCASY का दूसरा रचनात्मक सत्र

सोमवार 1 अगस्त 2005

अपने जन्म के एक वर्ष बाद जब सहजयोग प्रचार-प्रसार विश्व परिषद की श्रीकृष्ण की भूमि में सभा हुई, तो पाया गया कि इसमें अद्वितीय एकता एवं गतिशीलता की भावना दृढ़ हो रही है।

न्यू जर्सी में हाल की गुरु पूजा के अवसर पर WCASY की कई सभाएं हुईं। पहली अनौपचारिक सभा में सर्वसम्मति से निर्णय किया गयी कि कबैला में आदिशक्ति पूजा के अवसर पर हुई घटनाओं से ऊपर उठना होगा। यद्यपि संघ के.सभी सदस्यों को हृदय की गहनता से श्रीमाताजी की चिरायु एवं सुन्दर स्वास्थ्य की प्रार्थना करने के लिए आमंत्रित किया जाता है फिर भी जिन लोगों के हाथों में अपनी देख-रेख का भार श्रीमाताजी ने सौंपा है उन पर विश्वास करना हमारे लिए आवश्यक है।

संघ की सेवा में WCASY की पाँच समितियाँ

हाल में हुए सत्र में विश्व-परिषद ने नियमाचरण तथा नई कार्यविधियाँ अपनाते हुए वर्तमान कार्यबलों को स्थाई समितियों में परिवर्तित कर दिया। कानूनी मामलों की समिति की अभिपुष्टि की गई और विश्व परिषद के सदस्यों ने इसे स्वीकार किया। 2006 के अन्त तक के लिए पॉल एलिस को इसका अध्यक्ष चुना गया। इसी प्रकार से एलेन व्हेरी को सम्पर्क एवं प्रकाशन समिति के अध्यक्ष तथा गगन अहलुवालिया को बजट एवं आर्थिक मामलों की समिति का अध्यक्ष चुना गया। गुरु पूजा की इस सभा में दो नई समितियाँ बनाई गईं:-

1. एक नई 'स्वास्थ्य समिति' बनाई गई जिसके अध्यक्ष डा. डेविड स्पाइरो होंगे। आने वाले कुछ महीनों में ये समिति अपने सदस्य नियुक्त करेगी जो निर्णय करेंगे कि इस समिति ने क्या कार्य करने हैं। राष्ट्रीय अगुआओं से अनुरोध है कि इस कार्य में सहायता करें। आशा है कि ये समिति किए जा रहे शानदार कार्य को मान्यता देगी, उदाहरण के रूप में वाशी अस्पताल तथा आस्ट्रेलिया में किए जा रहे शोध परियोजनाओं को, तथा परिषद के तीसरे सत्र में अपने कार्यक्रम और रिपोर्ट पेश करेगी।

2. शिक्षा समिति : डा. वोल्फ गेंग हेक (Dr. Wolfgang Hackl) जिसके अध्यक्ष हैं, भिन्न सहजयोग शिक्षण संस्थाओं, भारत, यूरोप और अमेरिका के विद्यालयों के ट्रस्ट बोर्डों में विश्व परिषद का प्रतिनिधित्व करेगी। राष्ट्रीय अगुआओं से अनुरोध है कि वे वोल्फ गेंग से सम्पर्क स्थापित करके उन्हें सम्भावी स्रोत व्यक्तियों तथा विवेकशील विकास के बारे में सूचित करें। इस समिति के अध्यक्ष भी परिषद के तीसरे सत्र में अपनी रिपोर्ट पेश करेंगे।

समिति के अध्यक्षों को हाथ में लिए गए कार्यों को पूर्ण करने के लिए सलाह हेतु वांछित योग्यता वाले व्यक्तियों को नियुक्त करने के लक्ष्य से उपसमितियाँ बनाने का अधिकार दिया गया। विश्व परिषद से बाहर भी सहजयोगी व्यक्तियों को अधिकार दिए गए। दूसरे शब्दों में राष्ट्रीय अगुआ, संघ के ऐसे योग्य सदस्यों को जो वर्तमान कार्यों को करने के लिए स्वयं-सेवक के रूप में सम्मिलित हो सकते हैं, पहचानने में सहायता कर सकते हैं।

ये बात स्वीकार की गई कि सम्बन्धित समितियों के अध्यक्ष एक कार्य योजना तैयार करेंगे और परिषद के सम्मुख पेश करके अपनी समितियों के निर्णयों की परिषद से स्वीकृति लेंगे। परिषद के सत्रों के बीच के समय में वे समन्वयक (Co-oridinator) एवं सचिव (Secretary) से उचित परामर्श लेंगे।

'श्रीमाताजी निर्मला देवी सहजयोग संस्थान' का परिचय

नए 'श्रीमाताजी निर्मला देवी सहजयोग संस्थान' का पॉल एलिस ने परिचय दिया और सोमवार 25 जुलाई को मूलभूत औपचारिक बोर्ड मीटिंग हुई।

हमें याद दिलाया गया कि परिषद इटली में संस्थान स्थापित करने के कार्य में आगे नहीं बढ़ रही है। अमेरिका में स्थापित की गई नई लाभ-निरपेक्ष निगम संस्थान श्रीमाताजी द्वारा दिया गया न्यू जर्सी का उदार उपहार स्वीकार करेगी। 'सहजयोग प्रचार-प्रसार विश्व परिषद' के कानूनी माध्यम के रूप में भी यही संस्थान कार्य करेगा।

यह असंचयी एवं लाभ निरपेक्ष निगम गुरु पूर्णिमा के अवसर पर 21 जुलाई 2005 को डैलावेयर राज्य में पंजीकृत कराई गई थी। सर सी.पी. श्रीवास्तव द्वारा सहजयोग को दिए गए आश्रय को मान्यता देते हुए उन्हें संस्थान के निदेशक बोर्ड के अवैतनिक सदस्य पद स्वीकार करने का प्रस्ताव किया गया, जिसे उन्होंने अत्यन्त कृपापूवर्क स्वीकार किया।

राष्ट्रीय अगुआओं से समन्वयन

सहजयोग प्रचार-प्रसार विश्व-परिषद (WCASY) अपनी माँ एवं गुरु श्रीमाताजी के शक्तिप्रदायी नेतृत्व एवं प्रेरणा की याचना करती है। परिषद के सदस्यों ने स्पष्ट रूप से महसूस किया कि WCASY को चाहिए कि राष्ट्रीय नेतृत्वों को आश्रय दे, प्रोत्साहित करे और सम्भाले, परन्तु इसके लिए आवश्यकता पड़ने पर, समय-समय पर, जब भी विश्व-स्तरीय या संस्थान के स्तर पर स्थिति उत्पन्न होती है या जब भी मध्यस्थता की आवश्यकता पड़ती है, तो परिषद को किसी भी देश के मामलों में हस्तक्षेप करना पड़ सकता है। शनिवार सन्ध्या, को अपने निवास पर, भजनों के अद्वितीय सत्र में श्रीमाताजी ने परिषद की इस भूमिका को अपनी व्यक्तिगत स्वीकृति प्रदान की।

राष्ट्रीय नेताओं से समीप-सम्पर्क बनाए रखना और अनुभवों तथा परामर्शों के आदान-प्रदान की इच्छा सामूहिक है। इस सम्बन्ध में उसी क्षण नई जर्सी में विद्यमान सभी राष्ट्रीय नेताओं का एक समन्वित दल बनाने की भावना पर बल दिया गया। सूचनाओं का आदान प्रदान हुआ और परस्पर सम्मान, स्नेह एवं सहायता की भावनाओं की अभिव्यक्ति की गई। इस बात पर भी सहमति प्रकट की गई कि जब भी सम्भव हो सभी पूजाओं के अवसरों पर इसी प्रकार की समन्वयन सभाएं की जाएं।

लिए गए अन्य निर्णय

उपरोक्त महत्वपूर्ण निर्णयों के अतिरिक्त परिषद ने अपने कुछ सदस्यों को साधन और बौद्धिक सम्पदा जुटाने तथा कुछ विशेष देशों एवं क्षेत्रों में विकास कार्यों में सहयोग प्रदान करने का कार्य सौंपा। इस सम्बन्ध में माजिद गोलपुर से अनुरोध किया गया कि 'सहजयोग प्रचार-प्रसार विश्व परिषद' की ओर से अफ्रीका की सहायता का कार्य करें।

हम में से जिन लोगों को परिषद की सेवा में कुछ परिश्रम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, उनकी सभी सदस्यों ने सराहना की। न्यू जर्सी में एकत्र हो कर

एकता की अद्वितीय भावना से आगे बढ़ने के लिए हम कृतज्ञ थे और WCASY के दूसरे सत्र पर अपने गुरु (श्रीमाताजी) की सुरक्षा के वरदान का भी हमें गहन अहसास था।

समन्वयकर्ता (Co-ordinator) की ओर से विश्व संघ के प्रति प्रेम एवं सम्मानपूर्वक

हस्ताक्षर

एलन परेरा (Alan Pereira)

सचिव सहजयोग प्रचार प्रसार विश्व परिषद

☆☆☆☆

सहजयोग इतिहास की महत्वपूर्ण घटना

वृहस्पतिवार, सितम्बर 29, 2005

नयी जर्सी, अमरीका

शुक्रवार, 16 सितम्बर 2005

एक छोटे से साधारण समारोह में, शुक्रवार 16 सितम्बर के दिन, विश्व परिषद के सदस्यों के एक छोटे से समूह के सम्मुख तथा अमरीका के अगुआओं की उपस्थिति में, श्रीमाताजी ने अपने सभी कार्यों - अपने जीवन की सभी शिक्षाओं को **'श्रीमाताजी निर्मला देवी विश्व संस्थान'** के न्यायासियों को कानूनी तौर पर सौंपते हुए, कुछ दस्तावेजों पर हस्ताक्षर किए।

सहजयोग के इतिहास में यह महत्वपूर्ण घटना है क्योंकि श्रीमाताजी की शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार और उनके विकीर्णन की पूरी जिम्मेदारी यह सहजयोगियों को सौंपती है।

विश्व परिषद एवं सहजयोग विश्व संघ की ओर से बोलते हुए पॉल एलिस ने इस एतिहासिक घटना की पुष्टि की और इस अमूल्य उपहार के लिए कृतज्ञता प्रकट की।

दस्तावेज़ हस्ताक्षर कार्य पूर्ण होने पर हमने श्रीमाताजी को वचन दिया कि हम उनके प्रवचनों को युग युगान्तरों तक सम्भालने तथा विश्व के हर कोने में इन्हें उपलब्ध कराने के महत्वपूर्ण कार्य की जिम्मेदारी लेते हैं।

इसके साथ साथ सर सी.पी. श्रीवास्तव ने भी नयी जर्सी स्थित अपने निवास संस्थान को हस्तान्तरित करते हुए कागज़ात पर हस्ताक्षर किए।

श्रीमाताजी और सर सी.पी. जब केक का आनन्द ले रहे थे तब हम इस महान घटना के महत्व के विषय में सोच रहे थे।

हमने महसूस किया कि आज तक किसी भी अवतरण ने स्वयं अपने मुँह से बोले शब्दों का रिकार्ड नहीं छोड़ा, श्रीमाताजी के हज़ारों टेपों का वैभव आशीर्वाद के रूप में, हमारे पास उपलब्ध है। इन टेपों में उन्होंने सहजयोग के सूक्ष्म ज्ञान को लिपिबद्ध करके यह विपुल सम्पदा हमें प्रदान की है!

हम श्रीमाताजी तथा सर सी.पी. के प्रति आभारी हैं कि उन्होंने श्रीमाताजी की शिक्षाओं के 35 वर्षों के प्रवचन-टेप विश्व-संस्थान को प्रदान कर दिए हैं। जिस प्रकार उन्होंने ये टेप दिए हैं, वह न केवल श्रीमाताजी, बल्कि सर सी.पी. तथा पूर्ण परिवार की महान उदारता को दर्शाता है। इस कार्य द्वारा पूरे परिवार ने अत्यन्त सुन्दर एवं गरिमामय ढंग से दर्शाया है कि विश्व को प्रदान किए गए श्रीमाताजी के महान स्वप्न के प्रति वे कितने वचनबद्ध हैं।

शाम को समापन के समय सर सी.पी. ने हमें बताया, "पूरा परिवार इस मामले में एकमत है और दृढ़ता पूर्वक इसके पीछे है", इसके विषय में बिल्कुल भी मतभेद नहीं है। कुछ और भी यदि हम लोग कर सके तो हम इसे अपना परम कर्तव्य मानेंगे।"

अब हम एक नई विशाल परियोजना में लगते हैं। सहजयोग विश्व परिषद के पथ प्रदर्शन में एक औपचारिक समिति की स्थापना की गई है। यह परम पूज्य श्रीमाताजी के ज्ञान को विस्तृत एवं सहजरूप से उपलब्ध करवाने के लिए राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय साधनों को दृढ़ करेगी।

जय श्रीमाता जी

मनोज कुमार, पाल एलिस और ऐलन बैहरी

('सहजयोग प्रचार-प्रसार विश्व परिषद' की ओर से)

कुछ महत्वपूर्ण संस्थानों तथा परियोजनाओं की उनके सम्पर्क पतों/कम्प्यूटर सूचना/समाचार पत्रिकाओं/समाचार पत्रों और विश्वभर में नियमित रूप से छपने वाली सहज पत्रिकाओं का सदस्यता शुल्क की सूची:

Sahaja Yoga Mandir
(Ashram at Delhi, India)
C-17, Qutab Institutional Area
New Delhi 110016 (India)
Tel. 91-11-26966652
Fax. 91-11-26866801
e-mail–delhiashram@rediffmail.com

Pratisthan
NDA Road
Near Chandni Chowk,
Pune-411023,
Maharashtra, India

Nirmal Dham
Sahaja Yoga Ashram
Behind BSF Camp
Chhawala Gaon
Delhi – 110041, India
Ph. 91-11-25023190

Vishwa Nirmala Prem Ashram (NGO)
Home for the destitute women
Plot No. 9, Institutional Area,
Greater Noida, U.P. (India)
Tel. 0091-120-2230681

International Sahaja Public School
Talnoo, Dharamshala Cantt.
Distt. Kangra H.P. - 176216 India
site: www.sahajapublicschool.org

Sahaja School at Jejuri, India
Vishwa Nirmala Vidya Mandir
C/o Old Sadashiv Medicals,
Jejuri-412303
Distt. Pune, Maharashtra, India
Principal : Mr. Patrick Redican

International Sahaja School
Canajoharie
Canajoharie.school@sahajayoga.org

Sahaja Kindergarden and Ashram
Borotin, Czech Republic
http://www.nirmala.cz/borotin,
borotin@nirmala.czb

Nirmal Infosystems & Technologies Pvt. Ltd.
Plot No.8, Chandragupt Hsg. Society,
Kothrud, Paud Road,
Pune - 411029. Maharashtra,(India)
Ph No. 020-25286537
Fax: 020-25285232 ,
email: marketing@nirmalinfosys.com

Sahaja Yoga Health & Research Center,
Plot # 1, Sector # 8,
Shri Mataji Nirmala Devi Marg,
CBD, Konkan Bhavan, Belapur,
Navi Mumbai - 400 703.
Maharashtra, (India)
Phone : (91) + (022) 27576795,
27571341, 6795.
Director: Dr. (Mrs.) Madhu Rai
{Contact From
10.00 Hrs IST - 14.00 Hrs IST}
sahaja_center@vsnl.net

Shri P K Salve Kala Pratishthan
Near Vaitarna Dam,
Village Belvad, Taluka Sahapur,
District Thane. Maharashtra, India
Phone: +91 2527 248528 / 248 530
URL: www.pksacademy.com

Publications :

Subscription rates are subject to revision. The quoted rates are updated as on Jan. 2005.

Chaitanya Lahari (Marathi) Rs. 225/- annually
6 issues per year
Correspondence: Nirmal Infosystems & Technologies Pvt. Ltd.
Plot No.8, Chandragupt Hsg. Society,
Kothrud, Paud Road,
Pune - 411029. Maharashtra, (India)
For Subscription: Demand Draft in favour of "Nirmal Infosystems & Technologies Pvt. Ltd." payable in Pune.

Yuvadrishti (magazine managed by Yuva Shakti in India)
Correspondence: Nirmal Infosystems & Technologies Pvt. Ltd.
Plot No.8, Chandragupt Hsg. Society,
Kothrud, Paud Road, Pune - 411029.
Phone: +91-20- 5286105

yuvadrishti@yahoo.com
For Subscription: Demand Draft in favour of "Nirmal Infosystems & Technologies Pvt. Ltd." payable in Pune. Rs. 120/- (National) ,INR 500/- (International) 4 issues per year

Chaitanya Lahari (Hindi)
Correspondence: Nirmal
Infosystems & Technologies Pvt. Ltd.
C/o G. L. Agrawal, 222, Deshbandhu Apartments,
Kalkaji, New Delhi - 110019.India
Ph.: 011-26216654 Fax: 011-26422054
For Subscription: Demand Draft in favour of "Nirmal Infosystems & Technologies Pvt. Ltd." payable in Delhi. Rs. 350/- annually 6 issues per year

Divine Cool Breeze (Indian Edition)
350/- annually 6 issues per year
Correspondence: Nirmal Infosystems & Technologies Pvt. Ltd.
C/o G. L. Agrawal, 222, Deshbandhu Apartments,
Kalkaji, New Delhi - 110019.India
Ph.: 011-26216654 Fax: 011-26422054
For Subscription: Demand Draft in favour of "Nirmal Infosystems & Technologies Pvt. Ltd." payable in Delhi.
For more information like books & others visit www.nirmalinfosys.com

Bharat Vidhata
(Hindi-Marathi Weekly Newspaper)
Publisher: RT Manuja, Mumbai, India
Phone:3793578/32956124

Divine Cool Breeze Annual Subscription
(International Edition) available
C/o. Sarvesh Singh,,
US ($ 30)* $28 Per Annum for six issues
2042 Capstone Circle,
US ($ 5.50)* $5.0 for each back issues
Herndon, Virginia 20172 USA
US ($11.00)* for the special issues.
(703 471-8484)
(* *for Credit Card System*)
http://www.sahajayoga.org/store/subscription.asp
Cheques or money orders payable to
"The Divine Cool Breeze" dcb108@yahoo.com
Stories, photos and artwork can be sent to
The Divine Cool Breeze,
881 Frederick Road, North Vancouver
British Columbia,
Canada V7K 2Y5 or to coolbreeze@shaw.ca

Akashwani (Yuva Shakti Magazine)
C/O. Shreya Payment,
8272,141 A Street,
Surrey, BC,
Canada V3W 0V6
editors@akashwani.org

☆☆☆☆

वर्तमान सहज परियोजनाओं की सूची

सहजयोग प्रचार-प्रसार विश्व-परिषद के तत्वाधान में www.sahajyoga.org एक नई उप वैबसाइट बनाई गई है ताकि विश्व भर के सहजयोगी सहज सामूहिकता द्वारा की जाने वाली गतिविधियों तथा चालू भिन्न परियोजनाओं का विवरण देख सकें। इस साइट के बहुत से लाभ हैं:-

★ सहजयोग को बढ़ावा देने के लिए हमारी गतिविधियों का प्रसार।

★ जहाँ भी उचित पाया जाए, सहजयोगियों को इन गतिविधियों में भाग लेने की आज्ञा।

★ ताकि हम एक दूसरे से सीख सकें और बार-बार एक ही कार्य को करने के अनावश्यक परिश्रम से बच सकें।

★ अंग्रेजी भाषा में लिखा गया परियोजना का विवरण ऐलन वैह्री को भेजें:
email : info#@daisyamerica.com
और Dave Dunphy
email : dunphitect@aol.com

★ डाक केवल राष्ट्र अगुआओं को ही भेजी जानी चाहिए। स्पष्ट पता लगना चाहिए कि ये कौन से देश से आई है, विषय के साथ साथ इस पर सम्पर्क पता अवश्य होना चाहिए ताकि अनुरोध एवं जानकारी के लिए उचित व्यक्ति को लिखा जा सके।

वांछित शैली के लेख का उदाहरण देखने के लिए :- http//www.sahajayoga.org/current projects.asp अन्तर्राष्ट्रीय सहजयोग पुस्तक परियोजना के लिए।

सहजयोग परियोजनायें

निर्मल इन्फोसिस्टम्ज़ एवं टैकनोलोजीज़ प्रा. लि.

पृष्ठभूमि

परमपूज्य श्री माताजी ने इच्छा जतायी कि सभी सहज प्रकाशन तथा अन्य पदार्थ विश्वभर के सहजयोगियों को उपलब्ध कराये जाने चाहिए और अन्ततः पूरा विश्व एक ही मंच पर आ जाएगा। इस दिव्य उद्देश्य के लिए पहले से पुणें में स्थापित कम्पनी 'निर्मल इन्फोसिस' जिसे परम पूज्य श्रीमाताजी ने वर्ष 2000 में आशीर्वादित किया था, पुनः नामकरण करके 'निर्मल इन्फोसिस्टम्ज़ एवं टैक्नोलोजीज़ प्रा.लि. नाम दिया गया।

हाल ही में पापा जी (सर. सी.पी.) ने भी सहजयोगियों और सहजयोगिनियों की विश्व सामूहिकता के सम्मुख सहजयोग की आवश्यकता के लिए श्रीमाताजी के सन्देश को सुरक्षित रखने की आवश्यकता की घोषणा की। पापा जी का सन्देश प्रबल एवं स्पष्ट था। उन्होंने कहा..."**प्रिय सहजयोगियो और सहजयोगिनियों, अब हमारे सम्मुख उनके सहजयोग संदेश को सुरक्षित रखने का कार्य है। यह सन्देश बहुत से ऑडियो कैसेटों, वीडियो कैसेटों आदि में निहित है। चाहे हम विश्व के किसी भी कोने में रहते हों, ये विश्वस्त करना हमारी पहली जिम्मेदारी है कि जो भी कुछ उन्होंने (श्रीमाताजी) कहा है, जहाँ भी उन्होंने कहा है, उसे इस प्रकार से सुरक्षित करना है कि यह सहजयोग का अनश्वर वैभव बने। विश्व भर में यही प्रयत्न किया जा रहा है**" (15 अक्तूबर, गुड़गाँव, भारत)। इस दिशा में निर्मल इन्फोसिस्टम समर्पित है, ऐसा झरोखा बनने की दिशा में, जिसके माध्यम से पूरा विश्व श्रीमाताजी के सन्देश तक इच्छानुसार पहुँच सकेगा। इससे केवल श्रीमाताजी के बहुमूल्य सन्देश के प्रसार में ही सहायता नहीं मिलेगी, अप्रत्यक्ष रूप से सहजयोग के आरम्भिक दिनों से लिखे गए अभिलेखों को सुरक्षित रखने में भी यह कम्पनी सहायक होगी।

इससे सहज प्रकाशनों तथा पदार्थों को उचित मूल्यों पर एक केन्द्रीय-स्रोत के माध्यम से देश के कोने-कोने तक पहुँचा पाना सम्भव हो सकेगा। इस प्रकार वो लोग भी सहज सामग्रियों, पुस्तकों, ऑडियो-वीडियो कैसेटों को अपने स्थानीय ध्यान केन्द्रों से ले सकेंगे जिन्हें न तो कभी सहजयोग संगोष्ठियों में सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त हुआ

है और न पूजा-सेमिनार में भाग लेने का सौभाग्य।

लक्ष्य एवं उद्देश्य

परम पूज्य श्रीमाताजी ने इस परियोजना को वर्ष 2004 में आशीर्वादित किया था और तभी से सहज-संदेश फैलाने के लिए यह सहज पुस्तकों एवं पत्रिकाओं के प्रकाशन, सहज- सामग्रियों के सृजन और विश्वभर के सहजयोगियों-विशेषकर भारतीय सहजयोगियों को उचित मूल्यों में इन्हें उपलब्ध करवाने के कार्य के प्रति समर्पित है। सभी प्रकाशित तथा अप्रकाशित आडियो-वीडियो कैसेट, सी.डी., डी.वी.डी., पूजा की वस्तुओं, संगीत और भजन कैसेटों को सुरक्षित रखने के साथ-साथ सभी प्रकार की सहज पुस्तकों/साहित्य, पत्र-पत्रिकाओं तथा संकलन आदि को सुरक्षित रखना भी कम्पनी की गतिविधियों में सम्मिलित है।

भारत के स्थानीय नगर तथा राज्य ध्यान केन्द्रों की निरन्तर बढ़ती हुई माँग को पूरा करने के लिए, नियुक्त किए गए अधिकृत सहजयोगी एजेंटों के माध्यम से, केन्द्रीय वितरण-प्रणाली द्वारा निर्मल इन्फोसिस्टम कार्यरत है। इसका केन्द्रीय भण्डार पुणे में है। नगर ध्यान केन्द्रों को छपी हुई सूची पुस्तिका के माध्यम से सहज-प्रकाशनों तथा सामग्रियों की पूर्ति की जाती है और वहाँ से सहजयोगी सुविधानुसार इन सामग्रियों को खरीद सकते हैं।

अत्यन्त सावधानीपूर्वक उच्च गुणवत्ता वाली सहज सम्बन्धी सामग्रियाँ बनाने के लिए पथ-प्रदर्शन, सम्पादन, प्रकाशन, छपाई तथा पुनर्उत्पादन के लिए आधुनिकतम कला-तकनीकों को अपनाने का प्रयत्न किया जा रहा है। अतः अब भारत में सहज सम्बन्धी साहित्य आदि (साहित्य के रूप में किसी भी प्रकार के दस्तावेज/आडियो/वीडियो) के प्रकाशन से पूर्व निर्मल इन्फोसिस्टमज़ से लिखित आज्ञा लेना अनिवार्य है। बिना आज्ञा प्राप्त किए, प्रकाशित साहित्य को गैर कानूनी माना जाएगा। निदेशक मंडल को भारतवर्ष में सहजयोगार्थ छपे सभी दस्तावेजों/सामग्रियों पर अधिकार होगा।

निदेशक मण्डल

(Board of Directors)

परम पूज्य श्रीमाताजी निर्मला देवी - अध्यक्ष

सर सी.पी. श्रीवास्तव	-	उपाध्यक्ष
श्रीमति साधना वर्मा	-	निदेशक
श्रीमति कल्पना श्रीवास्तव	-	निदेशक
श्री ए.क. पुगलिया	-	निदेशक
श्री अनिल सूद एवं	-	निदेशक
श्री राजेश गुप्ता	-	निदेशक
श्री मुनीश पाण्डे	-	महाप्रबन्धक (G.M.)

सम्पर्क :-

निर्मल इन्फोसिस्टम्ज़ एवं टैक्नोलोजीज़ प्रा.लि.

8 चन्द्रगुप्ता हाउसिंग सोसाइटी,

कोथरुड, पॉड रोड

पुणे-4110029

फोन : +91-20-25286537

फैक्स : +91-20-25-286722

ईमेल : marketing@nirmalinfosys.com

वैबसाइट : www.nirmalinfosys.com

माताजी श्री निर्मला देवी का जन्म स्थल

छिन्दवाड़ा भारत

मंगलवार, जुलाई 26, 2005

भारत में सहजयोग के सभी मामलों के प्रबन्धन के लिए 7 अप्रैल 2005 को श्रीमाताजी ने **''परमपूज्य श्रीमाताजी निर्मला देवी ट्रस्ट''** (न्यास) की स्थापना की। वे राष्ट्रीय न्यास की अध्यक्षा (Chairperson) हैं। सर सी.पी. इसके उपाध्यक्ष हैं और राजेश शाह सह उपाध्यक्ष (Joint Vice Chairman)। इस न्यास, जो अब भारत में सहजयोग को सामूहिक नेतृत्व प्रदान करेगा, में 12 न्यासी हैं तथा सात विशिष्ट आमन्त्रित सदस्य। 17-सी, कुतुब इन्सटीच्यूशनल एरिया स्थित सहज मन्दिर में इसके दफ्तर होंगे।

अन्तर्राष्ट्रीय सामूहिकता के लिए तथा यहाँ स्मारक (Memorial) बनाने के लिए अस्तित्व में आते ही राष्ट्रीय न्यास ने श्रीमाताजी के पावन जन्म स्थल (छिन्दवाड़ा के घर) के अभिग्रहण कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। राष्ट्रीय न्यास की **'परिसम्पत्ति प्रबन्धन समिति'** (Asset Management Committee) को यह कार्य सौंपा गया।

सभी न्यासियों एवं नागपुर, भोपाल, पुणे और मुम्बई के सहजयोगियों के सामूहिक प्रयासों से तथा **श्री दिनेशराय, अध्यक्ष, 'परिसम्पत्ति प्रबन्धन समिति,'** राष्ट्रीय न्यास' के अथक प्रयत्नों से 14 जुलाई, 2005 को यह पावन कार्य सम्पन्न हुआ। अधिकारिक (कानूनी) रूप से यह सम्पत्ति **'परम पूज्य श्रीमाताजी निर्मला देवी सहजयोग ट्रस्ट'** को हस्तान्तरित कर दी गई है तथा इसकी सभी कानूनी औपचारिकताएं पूर्ण कर ली गई हैं। 14 जुलाई के दिन इस पावन स्थल पर सामूहिक हवन एवं पूजा सम्पन्न की गई। श्रीमाताजी के आदेशानुसार इस स्थान पर **'श्रीमाताजी निर्मला देवी सहजयोग विश्व-आश्रम'** और **'श्रीमाताजी का पावन जन्म स्थान'** के नाम-पट्ट (Sign Boards) भी लगा दिए गए हैं।

यहाँ यह बता देना आवश्यक होगा कि छिन्दवाड़ा निवास के अभिग्रहण करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय अपील द्वारा एकत्र की गई पूरी धन-राशि, भारत के नए स्थापित राष्ट्रीय न्यास के खाते में स्थानान्तरित कर दी गई है। जन्म-स्थल अभिग्रहण के लिए श्रीमाताजी के परिवार के सदस्यों (सर सी.पी., दो पुत्रियां - कल्पना और साधना) ने भी उदारतापूर्वक सहयोग दिया है। विश्वभर के सहजयोगी युग युगान्तरों तक श्रीमाताजी के परिवार के इस गौरवमय सहयोग और हमारी परम पावनी श्रीमाताजी की धरोहर को शाश्वत बनाए रखने की उनकी वचनबद्धता के लिए उनके प्रति आभारी रहेंगे।

राष्ट्रीय न्यास के प्रतिनिधित्व में, भारतीय सामूहिक नेतृत्व, अब अपनी परम पावनी माँ के चरण कमलों में, उनके जन्म स्थल पर विश्व सहजयोग आश्रम तथा सुन्दर स्मारक बनाने के पावन एवं महत्वपूर्ण कार्य को सम्पन्न करने की जिम्मेदारी सम्भालेगा। इस कार्य के लिए शीघ्र ही एक विशेष समिति का गठन किया जाएगा। इस पावन कार्य में, विचारों, संसाधनों तथा स्वैच्छिक कार्य द्वारा योगदान करने के लिए सभी आमन्त्रित हैं। इस कार्य में सहयोग करने के इच्छुक व्यक्ति सम्पर्क करें:

राजीव कुमार, कार्यकारी सचिव
भारतीय राष्ट्रीय न्यास
aarkey1951@yahoo.co.in या 91-9818098072

इस ऐतिहासिक कार्य के गहन महत्व को समझते हुए भारतीय सामूहिक नेतृत्व श्रीमाताजी से प्रार्थना करता है कि इस कार्य को सम्पन्न करने हेतु हमें विवेक, साहस एवं विनम्रता प्रदान करें।

भारतीय सामूहिकता की ओर से
राजीव कुमार

विश्व के सभी सहजयोगियों के लिए पावनतम तीर्थ

''.....छिन्दवाड़ा में श्रीमाताजी का जन्मस्थल, उस घर को न्यास ने अभिग्रहण कर लिया है और यह विश्व भर के सहजयोगियों का स्थायी तीर्थ-स्थल बनेगा। दृढ़ करने के लिए पुराने घर का पुनरुद्धार किया जाएगा। देश-विदेश से जन्मस्थल पर श्रद्धा सुमन चढ़ाने के लिए आए सहजयोगियों को ठहराने के लिए भी न्यास एक नए भवन का निर्माण करना

चाहता है। भवन निर्माण के लिए शीघ्र ही भूमि का अभिग्रहण किया जाएगा ताकि भारत या विश्व के किसी भी कोने से आप लोग वहाँ जा सकें। विश्व के सहजयोगियों के लिए अब यह वास्तव में पावनतम स्थानों में से एक या सम्भवतः **'पावनतम तीर्थ'** बनेगा।

हम सब एक साथ चलेंगे, और व्यक्तिगत छोटी या बड़ी सामूहिकता के रूप में, अपनी माँ द्वारा आपको दिए गए सहजयोग संदेश के प्रचार-प्रसार के प्रयत्न में हाथ बटाने के लिए, मैं आप सब को आमन्त्रित करता हूँ।

(नवरात्रि पूजा संध्या, गुड़गाँव, भारत, 15.10.2005 को सर सी.पी. (पापा जी) के विश्व सहज सामूहिकता के सम्मुख दिए गए भाषण से उद्धृत)

☆☆☆☆

विश्वनिर्मल प्रेम आश्रम

अनाश्रित महिलाओं एवं अनाथ बच्चों की शरणस्थली (परम पूज्य श्रीमाताजी निर्मला देवी संस्थान" की परियोजना)

(गैर-कानूनी हितार्थ संस्थान)

रजि. संख्या - एस-31374

पंजीकृत कार्यालय-

सी 17, कुतुब इन्स्टीच्यूशनल एरिया,

नई दिल्ली-110016 (भारत)

फोन : +91-11-26966652,

फैक्स +91-11-26866801

ई मेल : delhiashram@rediffmail.com

आश्रम का पता

विश्व निर्मल प्रेम आश्रम

प्लाट नं.9, इन्स्टीच्यूशनल एरिया, ग्रेटर नोयडा,

उ.प्र. (भारत)

फोन : 91-120-2230681

मो. : 91-9810774865

E-mail : Gisela_oma_7@yahoo.com

भारत और विदेशों में आरम्भ होने वाली परियोजनाओं की शृंखला में **विश्व निर्मल प्रेम आश्रम** पहली परियोजना है। परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी ने अनाश्रित महिलाओं तथा अनाथ बच्चों, विशेष रूप से लड़कियों के हितार्थ समर्पित, इस संस्थान का 'गैर सरकारी हितार्थ संस्थान' के रूप में 27 मार्च, 2003 को उद्घाटन किया।

ये आश्रम समाज की असहाय, अनाश्रित महिलाओं को आरज़ी तौर पर निःशुल्क भोजन, वस्त्र, रहने का स्थान, व्यवसायिक प्रशिक्षण तथा चिकित्सा सुविधायें मुहैया करवाता है। 6 से 24 माह के प्रशिक्षण के बाद उनसे आशा की जाती है कि अब वे स्वतन्त्र रूप से जीविकार्जन करें और सम्मानमय जीवन बिताएं। उपयुक्त नौकरियाँ खोजने में भी उनकी सहायता की जाएगी। 40 वर्ष तक की आयु की अनाश्रित महिलाओं को यहाँ प्रवेश मिल सकेगा। 2 वर्ष से 8 वर्ष तक के अनाथ बच्चों को प्रवेश दिया जा रहा है। इन्हें 18 वर्ष की आयु तक निःशुल्क भोजन, वस्त्र, रहने का स्थान, शिक्षा एवं चिकित्सा सुविधाएं प्रदान की जाती हैं। इसके बाद इन्हें जीवन में पुनः स्थापित किया जाएगा।

ग्रेटर नोएडा के प्रतिष्ठित ज्ञान पार्क/ इन्स्टीच्यूशनल एरिया में लगभग 10000 वर्ग मीटर भूमि पर बने, विशाल वाटिका एवं दो मंजिले विशाल भवन में रहने वाले आश्रम के निवासी, स्वच्छ, सुन्दर जीवन, पोषक भोजन, खेलकूद तथा प्रेममय पारिवारिक वातावरण का आनन्द उठाते हैं। उनका आध्यात्मिक पथ-प्रदर्शन भी किया जाता है ताकि आन्तरिक शान्ति एवं सन्तुलन की अवस्था प्राप्त करके वे जीवन का अधिक बेहतर ढंग से सामना कर सकें। **ऐसे अनाथ बच्चों तथा अनाश्रित महिलाओं के हितार्थ आप निम्नविधि से सहजयोग कर सकते हैं :-**

☆ आश्रम के पते और फोन संख्या पर आश्रय प्राप्त करने के लिए हमारे पास आने की सलाह आप उन्हें दें।

☆ आश्रम के पते पर अपने चन्दे "H.H. Shri Mataji Nirmala Devi Foundation" के नाम चैक/ड्राफ्ट द्वारा भेजें।

☆ आश्रम द्वारा बच्चे पर खर्च की गई धनराशि आश्रम को लौटाकर एक बच्चा कानूनी रूप से गोद लें।

☆ "H.H. Shri Mataji Nirmala Devi Foundation" के नाम स्टैन्डर्ड चार्टर्ड बैंक, ई-10, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110001, भारत को सीधे अपने चन्दे भेजें।

शासी निकाय (Governing Body)

सोसाइटी-विधान के अनुरूप सोसाइटी की शासी परिषद के वर्तमान सदस्यों के नाम और पद इस प्रकार हैं :-

परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी
संस्थापक एवं अध्यक्षा

श्रीमति साधना वर्मा	-	सदस्य
श्रीमति किरण वालिया	-	सचिव
श्री विनय अनन्त देओपुजारी	-	कोषाध्यक्ष
श्रीमति Gisela Matzea		सदस्य
श्रीमति विनीता कुमार	-	सदस्य
श्रीमति नीता राय	-	सदस्य
श्रीमति मालिनी खन्ना	-	सदस्य
श्रीमति मालती प्रसाद	-	सदस्य
श्री आर.डी. भारद्वाज	-	सदस्य
श्री जी.एल. अग्रवाल (विशेष निमन्त्रित)	-	लेखा-परीक्षक

आश्रम में आश्रय खोजने वाली असहाय अनाश्रित महिलाओं के लिए दिशा निर्देश :

1. 60 वर्ष तक की आयु की महिलाऐं सीमित समय के लिए अपनी योग्यतानुसार 6 से 24 महीनों का व्यवसायिक प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए आश्रम में आश्रय के लिए निवेदन कर सकती हैं।

2. इन महिलाओं के लिए आश्रम तथा सहजयोग ध्यान-धारणा के नियमों का पालन करना अनिवार्य होगा।

3. उन्हें अपनी स्वास्थ्य जाँच करवा कर आश्वस्त करना होगा कि वे ऐसे रोगों से पूर्णतः मुक्त हैं जिनका कुप्रभाव आश्रम में पहले से विद्यमान लोगों पर हो सकता है।

4. आश्रम में आश्रय पाने की इच्छुक महिलाओं को सहजयोग केन्द्रों, पुलिस, जेल, गैर सरकारी हितार्थ संस्थाओं, समाज सेवियों या अन्य अधिकृत लोगों के माध्यम से आना होगा। ये दर्शाने के लिए, कि उनके न तो पारिवारिक बन्धन है और न ही वे समाज द्वारा त्यागी गई हैं, उनके पास आवश्यक प्रमाण पत्रों/दस्तावेजों का होना आवश्यक है।

5. आश्रम को अधिकार है कि बिना कोई कारण बताए किसी भी महिला का आवेदन रद्द कर सके।

6. आश्रम अधिकारी यदि उचित समझेंगे तो किसी भी महिला को लम्बे समय तक आश्रम में बने रहने की आज्ञा दे सकते हैं। इस कार्य के लिए उस महिला को उचित पारितोषिक दिया जाएगा।

7. शासी-परिषद को किसी भी शर्त की उपेक्षा करने का अधिकार है।

अनाथ लड़की को आश्रम में प्रवेश देने के लिए दिशा-निर्देश

1. सामान्य रूप से 2 से 8 वर्ष की आयु की अनाथ बालिका को प्रवेश दिया जाएगा। परन्तु विशेष परिस्थितियों में न्यासियों की आज्ञा से 8 साल से बड़ी आयु की अनाथ बालिका को भी आश्रम में प्रवेश दिया जा सकता है।

2. प्रवेश से पूर्व बच्चे को स्वास्थ्य जाँच के लिए भेजा जाएगा ताकि संक्रामक रोगों से बचा जा सके।

3. सहजयोग केन्द्र, पुलिस, गैर सरकारी हितार्थ संस्थान, धार्मिक संस्थाएं या कोई विश्वसनीय संस्था/व्यक्ति/दूर का सम्बन्धी बच्चे का प्रवेश करवा सकता है।

4. बालिका को प्रवेश के लिए लाने वाले व्यक्ति को बच्चे के माता-पिता की मृत्यु प्रमाण पत्र या कोई अन्य प्रमाण पेश करना होगा जिससे साबित हो कि बालिका वास्तव में अनाथ तथा गरीब है।

5. पुलिस या स्थानीय दण्डाधिकारी खोई हुई बालिका का प्रवेश करवा सकते हैं। बाद में यदि अभिभावक मिल जाता है तो उसे बालिका पर खर्च की गयी राशि आश्रम को लौटानी होगी।

6. सभी प्रविष्ट बच्चों के लिए आश्रम के कायदे कानून मानना तथा सहजयोग ध्यान-धारणा करनी अनिवार्य होगी।

7. सरकार के नियमों के अनुसार प्रवेश किए गए बच्चों पर आश्रम के सभी पितृसुलभ अधिकार होंगे।

8. प्रवेश की गई अनाथ बालिका के पालन-पोषण, शिक्षा, विवाह, गोद-देने आदि का न्यासियों को पूर्णाधिकार होगा।

9. कोई बच्चा यदि अपने आप आश्रम छोड़ देता है, खो जाता है या उसकी मृत्यु हो जाती है तो उसके लिए किसी भी प्रकार का मुआवजा देने के लिए आश्रम बाध्य नहीं होगा।

10. आश्रम के न्यासियों को किसी भी बच्चे के प्रवेश पर रोक लगाने या आश्रम से निष्कासित करके उसे किसी सुरक्षित स्थान पर भेजने का पूर्ण अधिकार होगा। इसके लिए वे कारण बताने पर भी बाध्य नहीं होंगे।

11. शासी निकाय (Governing Council) को अधिकार है कि वे उपरोक्त किसी भी शर्त की उपेक्षा कर सकें।

27 मार्च 2003 को विश्व निर्मल प्रेम आश्रम, ग्रेटर नोएडा (भारत) के उद्घाटन समारोह के अवसर पर परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी के प्रवचन से उद्धरण :

".....अपने देश में जो अनेक प्रश्न हैं, उसमें सबसे बड़ा प्रश्न है कि यहाँ पर औरतों को और आदमियों को अलग-अलग तरीके से देखा जाता है। पता नहीं ये कैसे आया, क्योंकि अपने शास्त्रों में तो लिखा नहीं है। कहते हैं शास्त्रों में कि:

यत्र पूज्यन्ते नार्या - तत्र रमन्ते देवता 'तो पता नहीं कैसे हमारे देश में इस तरह की स्थिति उत्पन्न हुई है, इसमें औरतों के प्रति कोई भी आदर नहीं है। मेरा विवाह यू.पी. में हुआ और मैं देखकर हैरान हुई कि यू.पी. में घरेलू औरतों का कोई स्थान ही नहीं है। उनमें और नौकरानियों में कोई फर्क ही नहीं है। यह इस प्रकार क्यों हुआ और क्यों हो रहा है? क्योंकि लोग उस ओर जागृत नहीं है। कभी-कभी देख कर रोना आता है, जिस तरह से औरतों को छला है, घर से निकाल दिया! कोई वजह नहीं, यूं ही घर से निकाल दिया। ऐसे बहुत सारे हमने जीवन में अनुभव लिए और जिसकी वजह से अत्यन्त व्यथित हो गए। समझ में नहीं आता था कि इस तरह से क्यों औरतों को सताया जा रहा है और इनके रहने की भी व्यवस्था नहीं। जब घर से निकल गई तो उनको देखने वाला भी कोई नहीं है। बाल बच्चे ले करके निकल आई थी बेचारी। वो लोग तो हैं निराश्रित पर बच्चों को भी बिल्कुल बुरी तरह से निकाल देते हैं। यह अपने यहाँ की व्यवस्था किस तरह से बदल सकती है? इसका कोई इलाज है या नहीं? मैंने बहुत बार सोचा कि इसके बारे में लिखना चाहिए, पर लिखने से कुछ नहीं होगा। इसके लिए कोई व्यवस्थित रूप से कोई इन्तजाम करना होगा, कोई व्यवस्था करनी होगी, और एक तरह से बड़ा दिल कचोटता था। ऐसी अनेक-अनेक औरतें देखी हमने जो आज रास्ते पर भीख माँग रही हैं। लोगों ने बताया कि अच्छा तरीका है भीख माँगने का। मैंने कहा कि भाई तुमको माँगना पड़े तो पता चले। औरतों के प्रति एक अत्यन्त उदासीन प्रवृत्ति जो अपने देश में आ गई है मुझे उससे तो रोना ही आता था। और इसीलिए मैंने यह ठान लिया था कि इनके रहन-सहन का इनके खानपान का, इन बेचारी औरतों का कुछ न कुछ इलाज तो करना चाहिए।

वो लोग रास्तों में भीख मांगती हैं, हर तरह का काम करती हैं, उनको मैंने घर में बुलाया, उनसे बातचीत करी तो कोई कारण नज़र नहीं आता। आदमियों को कोई औरत अच्छी लग गई, उसकी (पत्नी) छुट्टी करो। दूसरा कुछ बहाना करके औरत को घर से निकाल दो। पता नहीं क्यों? औरत एक महान जीवन है, उसी से सारा संसार खड़ा होता है। उसी से अपने देश में हजारों बाल-बच्चे इस संसार में आते हैं। पर उनके प्रति इस तरह बेकद्री से लोग पेश आते हैं कि सहते-सहते औरत भी पागल हो जाए। पर नहीं, वो अपने बच्चों की वजह से बड़े हिम्मत से जीती हैं। लेकिन करे क्या उसके पास और खाने का ज़रिया नहीं, कोई तरीका नहीं, तो वो क्या करे, कहाँ जाए, किससे भीख मांगे? कोई उनको दरवाजे में भी खड़ा नहीं करता। इसका कोई इलाज मुझे दिखाई नहीं

दिया। इसीलिए मैंने बहुत सोचा कि सबसे बड़ा काम, अगर कुछ है, तो इन औरतों के लिए कोई स्थान बना देना है। मैंने यही सोचा कि यहाँ आ करके वो सीख लेंगी, कुछ न कुछ काम सीख लेंगी। इसके अलावा यह लोग मालिश करना सीख सकती हैं, इसके अलावा यह लोग छोटे-छोटे अपने होटल जैसे बना सकती हैं। पर उनकी सहायता करने के लिए कोई चाहिए, कोई स्थान चाहिए, और उनको समझाने के लिए कोई चाहिए। इसी ख्याल से मैंने यह आश्रम बनाया है और इसमें सभी के प्यार को ललकारा है, सारे विश्व के प्यार को ललकारा है कि सब लोग प्यार से इसे देखें। इन बिचारी औरतों का कोई दोष नहीं हैं, वो जो दर-दर में भीख मांग रही हैं इसका उत्तरदायित्व हमारे समाज का है। बहुत दुख होता है, एक औरत के नाते मुझे बहुत रोना आता था देख-देख के और यह जब बनने लगा तो मैंने कहा कि किसी तरह से यह पूरा हो जाए। और इसमें मेहनत करी काफी, इसका डिजाइन भी हमने बनाया। इसकी विशेषता यह है कि इसमें जो आपको सफेद रंग दिख रहा है यह खराब होने वाला नहीं। एक अजीबो गरीब तरीके से बनाया है, यह इटली में मैंने सीखा था। इटली में मैंने सीखा था कि ऐसा रंग बनाना चाहिए कि जो छूटे न और मुझे इसका मालूम है (तकनीक) और उसको इस्तेमाल करने से देखिए कितना सुन्दर सफेद रंग बन गया! यह कभी खराब नहीं होगा, कितना भी इस पर पानी आ जाए, कुछ हो जाए, कभी खराब नहीं होगा। यह मैंने एक experiment की तरह से, लेकिन यह चीज़ है बड़ी अच्छी। क्योंकि अपने देश में पता नहीं क्यों इस तरह के लोग चीज़ नहीं बनाते और इस तरह की चीज़ बनाना कोई मुश्किल नहीं। मैंने कितनों से कहा कि आप इसको इस्तेमाल करें, सो यही बात हुई कि कौन करे तवालत, कौन करे यह आफत। इसमें कोई तवालत नहीं है, कोई आफत नहीं है। पर भारत देश में एक और प्रथा चल पड़ी है कि जैसे चले वैसे चलने दो।

".....सहजयोग से आप आत्मा को प्राप्त होते हैं, आप आत्मा को जानते हैं, पर सबके तरफ आपकी जो दृष्टि है उसमें करुणा होनी चाहिए। आत्मा को प्राप्त करके आपके अन्दर करुणा नहीं हुई तो क्या फायदा? करुणा होनी चाहिए और उस करुणा में आप देखिए, चारों तरफ आप देखकर परेशान हो जाएंगे कि यह माँएं और बहनें किस दुष्चक्र में फंस गई हैं इसके लिए आपसे विनती है मेरी कि आप आस-पास आँख घुमा कर देखिए, घर-बाहर देखिए और औरतों की जो स्थिति बनाई हुई है उसे व्यवस्थित करने का प्रयत्न करें। हमने तो छोटा सा एक प्रयास किया है पर आप लोग बहुत कुछ कर सकते हैं। इसलिए मैं आप सबसे विनती करती हूँ कि जैसा आप मुझे प्यार करते हैं ऐसा ही आप अपनी माँ को और अपनी बहनों को प्यार करें।

अनन्त आशीर्वाद।

विश्व निर्मल प्रेम आश्रम, ग्रेटर नोएडा (भारत) के 'भूमि पूजन' के अवसर पर 7 अप्रैल, 2000 को परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी के प्रवचन से उद्धरण :-

".....अब इस संस्था को चाहिए कि सब लोग पूरी तरह से मदद करें। ये नहीं कि सिर्फ पैसा दे दें, पर इसको पनपाने में। अब सबसे बड़ा प्रश्न तो ये है कि हमें ऐसी औरतों को खोजना है, उनको खोज कर निकालना है। अब हमें क्या पता कि कहाँ कि औरतें हैं, क्या? अब हम तो यहाँ रहते भी नहीं। तो इस तरह की औरतें अगर आपको मालूम हैं, जो पीड़ित हैं, दुःखी हैं और जिनका कोई सहारा नहीं, और जो विधवा बन कर बहुत कुछ सह रही हैं, ऐसी सब औरतों को आपको इस संस्था में लाना चाहिए। अभी तो ये कह रहे हैं कि 100 औरतों का इंतजाम है। 100 से क्या होगा, पर उसके बाद उनसे बातचीत करके, उनको समझा बुझा के, जो लोग अंदर आएंगी वो तो आएंगी ही लेकिन जो बाहर रहेंगी, उनको भी समझाया जा सकता है, उनके घर वालों को भी समझाया जा सकता है। अपना ही देश ऐसा है जहाँ अब भी कुटुम्ब व्यवस्था चल रही है। बाकी कहीं नहीं है। उसका

उत्तरदायित्व औरतों को है, आदमियों को नहीं। ये भारतीय नारी की विशेषता है जिसने इस देश को रोक रखा है, नहीं तो कब के चले जाते। इसलिए अब आप समझ लीजिए कि गर आपने अतिशयता करी तो यही औरतें जो हैं क्रान्ति कर देंगी आपके लिए। वो ठीक नहीं है, वो प्रेम का हनन है, अच्छी बात नहीं है। अच्छी बात ये है कि समझदारी रख कर अपनी स्त्रियों की, अपनी बेटियों की हिफाज़त करें। उनको देखें, सम्भालें, उनको प्यार दें। और उनको ये पता होना चाहिए कि आप उन्हें प्यार करते हैं। पूरी समझ, इसमें कोई ऐसी बात नहीं कि वो आपकी खोपड़ी पर बैठ जाएंगी। एकाध होती है। लेकिन आदमी गर कमजोर नहीं है तो औरत कभी भी उसकी खोपड़ी पर नहीं बैठ सकती। पर वो इतनी दबी हुई भी नहीं रहना चाहिए कि जिससे बच्चे भी नहीं पनप रहे हैं, जिसमें कुछ फूल ही नहीं खिल सकते। बच्चे तो माँ को मानते ही नहीं। माँ के पैर भी इस तरह से छुएँगे जैसे कोई ईंट या पत्थर बीच में पड़ा हो। और बाप को फुरसत नहीं। तो बच्चे तो बिगड़ ही जाएंगे। और उससे जो जो आज दशाएं हुई हैं, जो-जो आप पढ़ते हैं, पेपर में देखते हैं, उसका कारण ही ये है कि हमारी कुटुम्ब व्यवस्था ठीक नहीं है। वो बहुत जरूरी है कि उसको आप ठीक रखिए। यही हमारे समाज का ताना बाना है। इसके सहारे आज आप भी यहाँ बैठे हुए हैं और आगे भी अगर चलना है तो कृपया याद रखिए कि औरत का मान रखना उसका उत्थान करना और लोगों को परिवर्तित करना भी आपको परम लक्ष्य की तरह से समझना चाहिए और उधर ध्यान देना चाहिए। ये मेरी आंतरिक इच्छा है। ऐसा आपको सबको मैं हमेशा कहती हूँ, कि अनन्त आशीर्वाद। किन्तु उस आशीर्वाद में सबको अपने साथ समेटिए। हमें तो लोगों को जोड़ना है। जब एक कुटुम्ब ही को आप नहीं जोड़ सकते तो आप किसको जोड़ेंगे? सबको चाहिए कि प्रेम से आपस में रहें। अब आप सहजयोगी हो गए और ये बड़ी भारी बात आपने प्राप्त करी। ये ज्ञान मार्ग है और इसमें आपको पता है प्रेम क्या चीज़ है और किस तरह से आदान प्रदान करना चाहिए। आपस में किस तरह से समझना चाहिए। इस चीज़ से आप हैरान होइयेगा कि सारा समाज एकदम बदल जाएगा। अपने को परदेसियों जैसे नहीं होना है। बिल्कुल भी नहीं। वहाँ तो कचहरी करेंगी औरतें, अमेरिका में तो औरतें सात-सात, आठ-आठ शादी करती हैं। औरतें और रईस हो जाती हैं तो पति सब गरीब हो जाते हैं। ये हम लोग नहीं चाहते। चाहते क्या है? आपसी प्रेम हो, बच्चे अच्छे से हों और आप देखिए, इससे बड़ा लाभ होगा। बहुत लाभ होगा। इतना लाभ होगा कि ऐसे समाज का और ऐसे देश का। इसमें ये आपसी झगड़े करना कोर्ट कचहरी करना, कोई जरूरत नहीं। गर ये सबके अच्छे के लिए है तो ये ही क्यों नहीं करते। इस तरह से समझदारी आनी चाहिए। समझदारी में बढ़ना चाहिए।

यहाँ तो मैं देख रही हूँ बहुत से सहजयोगी बैठे हुए हैं, तो उनके लिए एक नई बात अब बता रही हूँ। आप सहजयोगी हैं तो सब लोगों को समझ लेना चाहिए कि ये सहजयोगी हैं। उसी प्रकार सहजयोगी को समझ लेना चाहिए कि जो सहजयोगी हैं वो हैं जो नहीं हैं तो नहीं है। सबको समेटना आना चाहिए। इसी सहजयोग के स्वभाव से ही आप दुनिया को जीत सकते हैं। जो बात मैंने कही है उसको आप हृदय में बाँध लें। यह दर्द है मेरे अन्दर। इस दर्द को आप लोग खत्म कर सकते हैं।''

आप सबको अनन्त आशीर्वाद।

अन्तर्राष्ट्रीय सहज पब्लिक स्कूल

तालनू, धर्मशाला

अन्तर्राष्ट्रीय सहज पब्लिक स्कूल हिमालय की गोद में धौलगिरि पर्वत शृंखलाओं पर एक अत्यन्त रमणीक स्थल पर स्थित है। 'धौल' अर्थात 'विशुद्ध' निर्मल। और 'धार' अर्थात शृंखलाएं। यह पर्वतमाला धौलाधार कहलाती है। 2000 मीटर की ऊँचाई पर स्थित, यह स्थल, भारत में हिमाचल प्रदेश के प्रसिद्ध पर्यटक केन्द्र 'धर्मशाला' से लगभग 16 किलोमीटर दूरी पर है।

स्कूल के लक्ष्य एवं उद्देश्य

आधुनिक मानव को नैतिकता एवं विवेक से आशीर्वादित करने के लिए परम पूज्य श्रीमाताजी ने शिक्षा की एक अद्वितीय प्रणाली विकसित की है यहाँ पर दी जाने वाली शिक्षा बच्चे को अबोधिता की पावनता का आनन्द लेने का अवसर प्रदान करने के साथ साथ जीवन के सार का ज्ञान पाकर विश्व का बहुमूल्य नागरिक भी बनाती है। श्रीमाताजी कहती हैं, ''अबोधिता ऐसा शाश्वत गुण है जो न तो कभी खो सकता है और न ही नष्ट हो सकता है।'' बौद्धिक तथा आध्यात्मिक रूप में विकसित होने के लिए विश्व भर से आए विद्यार्थियों में दिव्यत्व प्रतिबिम्बित करना स्कूल का मूल उद्देश्य है। एक अन्य रहस्योद्घाटन में श्रीमाताजी कहती हैं,''पश्चिमी देशों की चौंका देने वाली स्थिति जिस प्रकार साबित करती है, हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली मानव में अन्तर्निहित गुणों को उभारने में असफल हो रही है। हमारे जन्मजात आत्मसाक्षात्कारी तथा सहजयोगी बच्चों को एक ऐसी ज्योतिर्मय शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है जिसमें उन्नत होकर वे इस सत्य की अभिव्यक्ति कर सकें कि पृथ्वी पर महान-आत्मायें अवतरित हुई हैं।

'अन्तर्राष्ट्रीय सहज पब्लिक स्कूल' के नाम से प्रसिद्ध यह स्कूल प्रकृति प्रेम, पर्यावरण के प्रति सावधानी, सौम्यता, कुलीनता, ईमानदारी, विवेक के साथ साथ साहसिकता का गुण भी बच्चों के मस्तिष्क में भर देने के लिए सदैव प्रयत्नशील है। इस देवभूमि में उन सभी चीजों का प्राचुर्य है जो मानव की आत्मा को अलंकृत करती हैं। व्यक्ति के अन्तर्परिवर्तन के साथ साथ इस शांत गरिमामय वातावरण में यह उसकी स्वाभाविक उत्सुकता, सृजनात्मकता तथा कल्पना शक्ति को उभारता है, बढ़ावा देता है। वातावरण में चैतन्य लहरियों का प्राचुर्य विद्यार्थियों को आध्यात्मिकता का सार और आत्मसाक्षात्कारी जीवन शैली को समझने में सहायता देता है। श्रीमाताजी कहती हैं,''कि मैंने देखा है कि धर्मशाला स्कूल से आने वाले हमारे बच्चे अत्यन्त आत्मविश्वस्त और अत्यन्त विनम्र होते हैं। मैंने उनसे पूछा, ''आप क्या करते हो?'' उन्होंने उत्तर दिया, ''श्रीमाताजी, हम ध्यान धारणा करते हैं। स्कूल में हम शाम को ध्यान-धारणा करते हैं और ध्यान-धारणा हमारी बहुत सहायता करती है।'' छोटे-छोटे बच्चों का ये कहना, इसकी आप कल्पना करें!

आध्यात्मिकता-विकास के सार के अतिरिक्त स्कूल बच्चों को व्यक्तित्व विकसित करते हुए अभिव्यक्त करने, कार्य करने, परस्पर बाँटने, बिना स्पर्धा (ईर्ष्या) की भावना को बढ़ावा दिए, प्रेम-पूर्वक खेलने तथा सामूहिकता की वास्तविकता का आनन्द लेने की भी आज्ञा देता है। अपने माता-पिता, बुजुर्गों, अध्यापकों, साथियों, सरकारी सम्पत्ति, देश और विस्तृत रूप से विश्व के प्रति अपनी व्यक्तिगत और सामूहिक जिम्मेदारी निभाने के लिए बच्चों को सचेत किया जाता है।

इसीलिए स्कूल के स्नातक, एक पूर्व विद्यार्थी ने इस प्रकार से टिप्पणी की..''लोग प्रायः कहते हैं कि हिमालय ब्रह्माण्ड की पीठ की तरह से है। परन्तु हम जानते हैं कि ये भारत का और विश्व का सहस्रार है। ये वो स्थान है जहाँ आकाश हमेशा चैतन्य लहरियों की चमक और श्रीमाताजी के दिव्य प्रेम से ज्योतिर्मय होता है।'' ये उनका स्कूल है और वे (श्रीमाताजी) हमेशा अपने बच्चों पर कृपा-दृष्टि बनाए रखती हैं।

शिक्षा, मानक विद्वता और दिनचर्या (Education, Standards, Academics and Routine)

★ स्कूल माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की भारतीय परिषद से सम्बद्ध (Affiliated) है और प्रथम से दसवें

दर्जे तक के बच्चों को प्रवेश दिया जाता है।

★ शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी भाषा है। ये आवासी स्कूल है जिसमें निवास और भोजन की सुविधाएं उपलब्ध हैं। इसमें पन्द्रह शयनागार (Dormitories) हैं, हर आठ बच्चों के समूह के लिए एक प्रभारी अधिकारी कार्यरत है। शयनागार आन्टी (Dorm Anties) और प्रभारीगण माता-पिता की तरह से बच्चों की देखभाल करते हैं।

★ स्कूल का सत्र 23 मार्च से आरम्भ और 21 दिसम्बर को समाप्त होता है। हर सत्र में पांच जाँच (Test) होती हैं, तीन इकाई जाँच, एक अर्द्धवार्षिक परीक्षा तथा एक वार्षिक पीरक्षा ली जाती है। सभी जाँचों (परीक्षाओं) के परिणाम के आधार पर वार्षिक रिपोर्ट बनाई जाती है। पाठशाला में 6-7 हजार पुस्तकों के शानदार संग्रह वाला एक पुस्तकालय है। इसके अतिरिक्त सहज साहित्य, ऑडियो और वीडियो कैसेटस से परिपूर्ण एक विशेष सहज पुस्तकालय भी है।

★ स्कूल में भारतीय एवं यूरोपीय भोजन की सुविधा उपलब्ध है। भोजन में पोषक तत्वों पर विशेष ध्यान दिया जाता है। स्कूल की अपनी बेकरी है जहाँ विद्यार्थियों के लिए ताजे भोज्य पदार्थ बनाए जाते हैं। मनोरंजन के तौर पर बच्चे नियमित रूप से सहज कैसेट्स के अलावा वीडियो कैसेटस का आनन्द भी लेते हैं। स्कूल स्थल पर भिन्न क्रीड़ाओं तथा खेलों के अतिरिक्त बच्चे समय-समय पर होने वाली लम्बी पैदल-यात्राओं, पर्यटन तथा शैक्षिक यात्राओं का भी आनन्द लेते हैं।

★ दिनचर्या प्रातः ध्यान-धारणा से आरम्भ होती है, फिर नाश्ता और फिर 8.45 से 10.45 तक अध्ययन जिसमें 15 मिनट का संक्षिप्त विश्राम भी होता है। छोटी कक्षाओं के बच्चों को दोपहर का भोजन 12 बजकर 20 मिनट पर दिया जाता है और वरिष्ठ बच्चों को 1 बजे। दोपहर के भोजन के बाद वरिष्ठ विद्यार्थियों की कक्षाएं पुनः आरम्भ हो जाती हैं जबकि छोटे स्तर के बच्चों को एक घण्टे का आराम (Siesta) दिया जाता है। सन्ध्या के समय खेलों के लिए छुट्टी देकर दोपहर पश्चात का सत्र सम्पन्न होता है। 6.15 सांय पर शाम की ध्यान- धारणा के साथ शाम का सत्र आरम्भ होता है और फिर गृह कार्य तथा सभा के लिए तैयारी कक्षाओं का समय होता है। रात्रि भोजन के बाद रात को प्रायः 10 बजे विद्यार्थी सो जाते हैं। मौसम के परिवर्तन के साथ-साथ दिनचर्या में भी परिवर्तन होता रहता है।

★ पढ़ाए जाने वाले विषयों में अंग्रेजी प्रथम भाषा है, हिन्दी और जर्मन दूसरी। इसके अतिरिक्त गणित, विज्ञान (जिसमें शरीर विज्ञान, रसायनशास्त्र, जीव-विज्ञान है) सामाजिक विज्ञान (जिसमें इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र सम्मिलित हैं), तथा कम्प्यूटर विज्ञान तीसरी कक्षा से पढ़ाये जाते हैं।

★ पाठयक्रम में सम्मिलित अन्य विषयों में संगीत (गायन, वाद्य), नृत्य (शास्त्रीय नृत्य, लोक नृत्य और स्वाँग नृत्य), काष्ट शिल्प (Wood work), आरेखण (Drawing) और चित्रकला, मृत्तिका (Clay work), कागज शिल्प हैं।

★ सभी बच्चों को विद्यार्थी वीजा के लिए आवेदन करना अनिवार्य होगा। किसी अन्य प्रकार का वीजा स्थानीय विदेशी पंजयन दफ्तर (F.R.O.) द्वारा स्वीकार नहीं किया जाएगा। पर्यटक वीज़ा पर आने वाले विद्यार्थियों को छः महीने के बाद भारत छोड़ना पड़ेगा। जिन माता-पिता को अपने बच्चों के लिए विद्यार्थी वीज़ा आवेदन करना हो वे निम्नलिखित सूचनाओं के साथ स्कूल को लिखें:

★ बच्चे का नाम, कुल नाम और उसकी कक्षा

★ बच्चे की जन्मतिथि और स्थान

★ पासपोर्ट नम्बर, इसकी समाप्ति की तिथि और बच्चे की राष्ट्रीयता, और सम्पर्क के लिए फैक्स नम्बर तथा पूरा पता स्कूल के लेखाकार को ई-मेल करें: ispsjm@yahoo.com

सम्पर्क के लिए ई-मेल पता

अवर प्रभाग प्रभारी (Junior wing -Incharge)
ispsoffice@yahoo.co.uk,
ispsoffice@rediffmail.com
और वरिष्ठ प्रभाग प्रभारी
ispssenior@rediffmail.com

सम्पर्क पताः
अन्तर्राष्ट्रीय सहज पब्लिक स्कूल, तालनू,
धर्मशाला (हि.प्र.)
Website : www.sahajpublicschoo.org

हिमालय की गोद में स्थित श्रीमाताजी के स्कूल के स्नातकों की स्मृतियाँ

★ इस कार्य को करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सहज पब्लिक स्कूल के अतिरिक्त किसी अन्य स्कूल के बारे में मैं सोच भी नहीं सकता। स्कूल न केवल आदर्श मानव विकसित करने के लिए श्रेष्ठतम आधार प्रदान करता है बल्कि समाज के अच्छे सदस्य बनने के लिए हमें आवश्यक आध्यात्मिक पथ प्रदर्शन भी प्रदान करता है। स्कूल के अद्वितीय स्वभाव का यदि हम विश्लेषण करें तो पता चलता है कि अन्तर्राष्ट्रीय सहज पब्लिक स्कूल विद्यार्थियों के लिए केवल आदर्श स्कूल ही नहीं है, यह वह स्थल है जहाँ श्रेष्ठ मानव बनाए जाते हैं और सृजनात्मकता का सम्मान होता है। जो भी माता-पिता अपने बच्चों के हित की चिन्ता करते हैं उन्हें अच्छा मानव बनाना चाहते हैं, उन्हें इस स्कूल की सिफारिश करते हुए मुझे बिल्कुल संकोच न होगा। श्रेष्ठ मानव समाज ही अन्ततः श्रेष्ठ विश्व का कारण बनेगा।

ऋषि निकोलोई
आस्ट्रेलिया

★ धर्मशाला के पावन और स्वस्थ वातावरण में हमें व्यस्क बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वहाँ आज प्रचलित नशे, शराब आदि को कोई प्रकोप न था, केवल पूर्ण सुरक्षा एवं प्रेम की दृढ़ भावनाएं थीं। स्कूल ने हमें ऐसे वातावरण में पलने का अवसर प्रदान किया जिसकी तुलना किसी सुदृढ़ परिवार से की जा सकती है। इतनी छोटी आयु में पूर्ण सुरक्षा की भावना बच्चे की सबसे बड़ी आवश्यकता होती है। बाद में यूरोप में जो स्थिति मैंने देखी उसके बिल्कुल विपरीत इस स्कूल ने हमारी यह आवश्यकता पूरी की। मैं ऐसे बहुत से लोगों से मिला हूँ, जिन्हें अपने परिवारों का बिल्कुल भी अवलम्बन प्राप्त नहीं है। मैंने उनकी अवस्था भी देखी है। आक्रामकता, घृणा, असुरक्षा की भावना है। उनके दिशा-निर्देश (Guidelines) बन चुके हैं। पाश्चात्य विश्व के परिवारों के पारस्परिक झगड़े उच्छृंखलताएँ इसका मुख्य कारण हैं। मुझे अपने माता-पिता का सम्मान करना सिखाया गया। मुझे सिखाया गया कि अपने प्रश्नों के उत्तर मैं अपने परिवार में खोजूं और मैंने वो उत्तर खोजे। यद्यपि प्रायः हम कई-कई महीनों तक अपने माता-पिता से दूर रहते थे फिर भी मुझे ऐसा नहीं लगा कि उन्होंने मुझे अकेला छोड़ दिया है। वास्तव में माता-पिता के प्रति मेरा प्रेमभाव दृढ़ हुआ और उनके लिए सम्मान-भाव भी। वास्तव में मुझे गतिशील समाज में विकसित होने का अवसर प्रदान करने के लिए उन्हें अपने बन्धनों पर नियंत्रण करना पड़ा, कि किस प्रकार बच्चों की परवरिश की जाए। स्कूल के मेरे अनुभवों ने भिन्न प्रकार से मेरे व्यक्तित्व को सम्पन्न किया। सर्वप्रथम इसने मुझे अन्य संस्कृतियों के प्रति सहिष्णु दृष्टिकोण प्रदान किया। जिनका यूरोप के पब्लिक स्कूलों में (जहाँ मैं बाद में गया) मैंने पूर्ण अभाव पाया। घर से दूर आवासीय स्कूल में रहने से मुझमें स्वतन्त्र रूप से स्थितियों का सामना करने की क्षमता विकसित हुई। मैंने सहयोग करना, संचालन करना तथा अपनी आयु के अपनी-अपनी पसन्द वाले, अपनी-अपनी आदतों वाले बच्चों के साथ रहना सीखा। इस भिन्न प्रकार की शिक्षा शैली के कारण जब मैं यूरोप लौटा तो गणित और विज्ञान में मेरा स्तर अपने सहपाठियों से कही ऊँचा था। स्कूल में बिताए गए मेरे वर्ष अत्यन्त शिक्षा प्रदायक थे जिन्होंने मेरे जीवन को सम्पन्नता प्रदान की, संक्षिप्त में क्योंकि इस समय में मुझे सामान्य शैक्षिक पाठ्यक्रम के अतिरिक्त भी बहुत कुछ दिया।

निरंजना डी.कलबरमैटन
स्विटज़रलैण्ड

★ भारत में धर्मशाला के सहजयोग स्कूल में रहने का सौभाग्य प्राप्त करने की भावना को व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं है। मैं यह डींग मारने की कल्पना भी नहीं कर सकता कि यदि मैं वहाँ न गया

होता तो मैं या मेरा व्यक्तित्व कुछ अन्य होता, क्योंकि आज अपने जीवन में जो कुछ भी मैं हूँ, बचपन के उन दिनों में प्राप्त शिक्षा के कारण हूँ। स्पष्टतः जो शिक्षा मैंने वहाँ प्राप्त की उसका स्तर कनाडा में दी जाने वाली शिक्षा के स्तर से कही ऊँचा है। पाश्चात्य शिक्षा में जिसे "श्रेष्ठ" कहा जाता है वहीं भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा बोर्ड, जहाँ मैंने शिक्षा ग्रहण की, उसे "सन्तोषजनक" मानता है। दूसरी भाषा की शिक्षा के साथ साथ भारतीय शास्त्रीय संगीत, नृत्य एवं कला के अनुभव और भिन्न दुनिया के प्रति अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण लेकर मैं लौटा। परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय सहज पब्लिक स्कूल में मैंने केवल उच्च स्तर की सैद्धान्तिक शिक्षा मात्र ही प्राप्त नहीं की, इसके साथ साथ स्कूल की शिक्षा प्रणाली में अन्तर्निहित आध्यात्मिक पक्ष के माध्यम से मैंने जीवन के गहन मूल्य भी सीखे। इन गूल्यों ने मेरे व्यक्तित्व के गुणों को विकसित किया और कनाडा में रहने वाले मेरे पूर्वजों से कहीं अधिक इन्हें परिपक्व किया। सबसे महत्वपूर्ण बात ये थी कि मुझे अपने विषय में तथा अपने चहुँ ओर के विश्व के विषय में सीखने का मौका मिला और ऐसा करते हुए मैं अपने विषय में अधिक आत्म-विश्वस्त हुआ और स्वयं को और अधिक सुरक्षित महसूस किया। ये एक ऐसा गुण है जिसका पश्चिम में अभाव है। वहाँ असुरक्षा की भावना, व्यक्तिगत महत्व, परिवार और सामाजिक अराजकता का प्राचुर्य है। सहज ध्यान-धारणा की विधियों से मैंने विश्व-विद्यालयों के पाठ्यक्रम, नौकरी के कार्य और रोज़मर्रा के जीवन की समस्याओं से उत्पन्न होने वाले तनाव को कम करना सीखा। मेरे मित्र मुझसे ईर्ष्या करते हैं कि तनाव से परिपूर्ण जीवन में भी मैं अत्यन्त शान्त एवं सन्तुलित रहता हूँ और साथ ही साथ सभी पाठयक्रमों में कक्षा में शिखर पर रहकर अपने प्राध्यापकों से उच्च प्रशंसा प्राप्त करता हूँ। मेरा चित्त अधिक केन्द्रित है और मेरा मस्तिष्क अत्यन्त निर्मल है। रात को बिना किसी प्रयत्न के मैं सो जाता हूँ और प्रातः अत्यन्त तरोताजा उठता हूँ। मुझे पता चला है कि मेरे आस-पास के लोगों को यह स्थिति प्राप्त नहीं है।

गौतम पेमैन्ट
कनाडा

☆☆☆☆

अन्तर्राष्ट्रीय सहजयोग शोध एवं स्वास्थ्य केन्द्र सीबीडी - बेलापुर

हरे भरे वातावरण में स्थित सहज़योग अन्तर्राष्ट्रीय शोध एवं स्वास्थ्य केन्द्र, विश्व का अपने आप में अद्वितीय केन्द्र है। विकसित चैतन्य-चेतना के माध्यम से रोगियों का इलाज किया जाता है।

19 फरवरी 1996 को परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी ने सी बी डी बेलापुर, नवी मुम्बई में इस विशाल अन्तर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य केन्द्र की स्थापना की और इसे आशीर्वादित किया। स्वर्गीय डा. यू.सी. राय, पूर्व विभागाध्यक्ष शरीर विज्ञान, Jawahar Lal Institute of Post Graduate Medical Education पाण्डिचिरी और दिल्ली के भिन्न चिकित्सा महा-विद्यालयों में प्रोफेसर के पद पर आरूढ़ रहे, को श्रीमाताजी ने इस स्वास्थ्य केन्द्र का प्रथम निदेशक (Director) नियुक्त किया। उनके देहावसान के बाद श्रीमाताजी ने डा. मधुर राय को स्वास्थ्य केन्द्र का अगला निदेशक नियुक्त किया।

श्रीमाताजी की कृपा से विश्व से आए बहुत से लाइलाज रोगी यहाँ स्वस्थ हुए हैं। लगभग पैंतीस देशों के लोगों ने - जिनमें यू.एस.ए., आस्ट्रेलिया, इंग्लैण्ड, अफ्रीका, मलेशिया, सिंगापुर, रूस, कनाडा भी सम्मिलित हैं, इस स्वास्थ्य केन्द्र में सहजयोग उपचार से लाभ उठाया है।

भिन्न कारणों से बिगड़े हुए रोग जैसे तनाव, दमा, शक्कर रोग, आधा सीसी (Migraine), मिर्गीरोग, निराशावाद (Depression) और कैंसर रोग, के रोगी इस स्वास्थ्य केंन्द्र में रोग मुक्त हुए हैं। केवल शारीरिक बीमारियों से पीड़ित रोगी ही इस स्वास्थ्य केन्द्र में नहीं जाते परन्तु असन्तुलित सूक्ष्म प्रणाली

वाले योगी भी वहाँ पहुँच जाते है। केन्द्र में प्रविष्ट और बाह्य रोगियों की संख्या वर्ष 1996 में 954 थी, परन्तु तेजी से बढ़कर वर्ष 2004 में यह 5025 तक पहुँच गई।

स्वास्थ्य केन्द्र में प्रवेश के लिए व्यक्ति को फेक्स/डाक या ई-मेल द्वारा रोगी का संक्षिप्त चिकित्सा इतिहास या शरीर के सूक्ष्म असन्तुलन का विवरण प्रभारी डॉक्टर को भेजना पड़ता है। तत्पश्चात् केन्द्र के स्वागत कार्यालय में कमरे आदि का आरक्षण किया जाता है।

सम्पर्क पता :
अन्तर्राष्ट्रीय सहजयोग शोध एवं स्वास्थ्य केन्द्र
प्लाट-1, सै.8, परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी मार्ग, सीबीडी, बेलापुर, नवी, मुम्बई-400614
टेलिफोन
स्वागत कक्षः (022) 27571341, (022) 27576922
टेलिफेक्स : (022) 27576795
समय : प्रातः 10.00 से सांय 4.00 बजे तक
ई-मेल : sahaja_center@vsnl.net

अन्तर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य केन्द्र में 19 फरवरी 1996 को चिकित्सकों से बात-चीत करते हुए परमपूज्य श्रीमाताजी की वार्ता से कुछ महत्वपूर्ण उद्धरण

..''विकास प्रक्रिया में हम मानव अवस्था तक पहुँचे हैं। हम मानव बन पाए हैं और हमारे अन्दर वो सभी कुछ विद्यमान है जिसका हमें ज्ञान नहीं है। हमें केवल उन चीज़ों का ज्ञान है जो हम बाहर देखते हैं। परन्तु हमारे अन्दर जो कुछ है उसका हमें ज्ञान नहीं है क्योंकि अभी तक न तो हमने प्राचीन ग्रन्थों का अध्ययन किया है न ही खोजने का प्रयत्न किया है कि हमारे अन्दर क्या निहित है। तो यह समझने की बात है कि हमारे देश में बहुत से सन्तों और अवतरणों ने प्राचीन काल से इसके विषय में जो कुछ भी लिखा था उसका अवश्य कोई कारण तो रहा होगा। आज यह शक्ति (कुण्डलिनी) रहस्य नहीं है। हमारे विकास के शिखर को प्राप्त करने के लिए इस शक्ति को अंकुरित होना है। मानवीय चेतना, स्वयं के बारे में हमारी पूर्ण सूझ-बूझ इस नई चेतना के विषय में ज़ैन-प्रणाली में भी बताया गया है, और जापान में इसका अनुसरण किया जाता है। चीन में लाओत्से ने इसके बारे में बताया। बहुत सारे सन्तों ने बताया कि व्यक्ति को मस्तिष्क की सीमा से ऊपर उठना होगा।''

''...सत्य-साधक। आज ये बिल्कुल अलग-बात है कि मुझे उन लोगों से बात-चीत करनी है जो पेशे से डॉक्टर हैं और ऐसी चिकित्सा प्रणाली के अनुरूप कार्य कर रहे हैं जिसे पूर्णतः वैज्ञानिक माना जाता है। मैं यहाँ पर किसी भी प्रकार से इसकी निन्दा करने के लिए या विश्वभर के चिकित्सकों द्वारा प्रयोग किए जा रहे प्रचलित सिद्धान्तों को नीचा दिखाने के लिए नहीं आई हूँ। उपलब्ध ज्ञान का किसी भी प्रकार से अपमान नहीं किया जाना चाहिए। परन्तु समस्या ये है कि जब आप जान जाएं कि ज्ञान का कोई सिद्धान्त पूर्णतः विकसित नहीं है या सक्षम नहीं है तो उपयोग की जा रही विधि से बेहतर किसी अन्य चीज़ के लिए हमें अपने मस्तिष्क खोलने चाहिएं। क्योंकि हमने चिकित्सा विज्ञान पढ़ा है, क्योंकि हम चिकित्सा पद्धतियों को जानते हैं, केवल इसलिए ये आवश्यक नहीं कि हम इनके बन्धन में बंध जाएं कि किसी भी उपलब्ध नई चीज़ को हमने नहीं अपनाना। चिकित्सा विज्ञान की आचार संहिता में, जहाँ तक मैं जानती हूँ, हम लोगों के हित के लिए कार्य कर रहे हैं न तो अपनी जेवें धन से भरने के लिए और न ही केवल उस सिद्धान्त का प्रचार करने के लिए जिसके विषय में हम जानते हैं।

जैसे कि आप जानते हैं, विज्ञान में समय-समय पर सिद्धान्तों को चुनौती दी जाती है। प्रारम्भ से ही आप देखिए कि पहले परिकल्पनाएँ (Hypothesis) आती हैं जो बाद में नियम बनते हैं और फिर नियमों को चुनौती दी जाती है। दूसरी बात ये है कि ये विज्ञान निर्नैतिक (Amoral) है। मानव के नैतिक पक्ष का विज्ञान में कोई महत्व नहीं है। तीसरी बात ये है कि यह सीमित है, क्योंकि हमारे मस्तिष्क के माध्यम से यह

हमारे प्रयत्नों को देखती है, इसलिए ये सीमित है। मस्तिष्क के माध्यम से जो भी कुछ हम जानने का प्रयत्न करते हैं, आवश्यक नहीं है कि यह "पूर्ण सत्य" हो। हमेशा बने रहने वाले मतभेदों का भी यही कारण है। यदि यह "पूर्ण-सत्य" होता तो मतभेद न होते। अतः हमें करना ये है कि एक ऐसे बिन्दु तक पहुँचे जहाँ पूर्ण सत्य को जान सकें, पूर्ण अर्थ को जिससे सभी डाक्टर एक ही प्रकार सोचें, और रोग निदान भी एक ही हो। इन सभी दृष्टिकोणों से हमें थोड़ा सा विनम्र होकर हमें स्वयं देखना होगा कि इस महान देश भारत में हमारे लिए कौन सा ज्ञान उपलब्ध है। हम बिल्कुल नहीं जानते कि सहजयोग का ये ज्ञान हजारों वर्षों से यहाँ पर विद्यमान है।"

"...सहजयोग में आपको धन-आदि कुछ भी नहीं लेना होता, ये तो आपकी शक्तियों के माध्यम से ही कार्यान्वित होता है। आप गरीब लोगों की भली-भांति सहायता कर सकते हैं परन्तु यदि बहुत धनवान लोग हैं, वो लोग आपको उपलब्ध हैं, हम उन्हें अधिक परेशान नहीं करना चाहते और न ही वो हमारी अधिक चिन्ता करते हैं, वो केवल डॉक्टरों पर ही निर्भर करते हैं, फिर भी आप उन्हें ले सकते हैं। परन्तु हमारे लिए मध्यम वर्ग, और निम्न वर्ग, विशेष रूप से वो लोग जिनमें डॉक्टरों के पास या अस्पतालों में जाने की क्षमता नहीं है, अधिक महत्पूर्ण हैं।"

"... यह विज्ञान आपके लिए बिल्कुल निःशुल्क है, इसे आप एक महीने में सीख सकते हैं। चिकित्सा विज्ञान सीखने के लिए आपको सात वर्ष परिश्रम करना पड़ता है। चिकित्सकों के लिए इसका ज्ञान अत्यन्त लाभदायक है क्योंकि इसके माध्यम से वे रोग के स्थान का भली-भांति पता लगा सकते हैं, अधिक बेहतर समझ सकते हैं। वे समझ सकते हैं कि यह इतना वैज्ञानिक है। इतने सुन्दर ढंग से यह कार्य कर रह है। वे आश्चर्य चकित हैं। मैं कहूँगी कि ये इतना महान विज्ञान है कि हम उसे पराविज्ञान कह सकते हैं, जैसा डॉक्टर साहिब (स्वर्गीय डा. यू.सी. राय) ने कहा है। ये विज्ञान तर्क संगत रूप से इसकी व्याख्या कर सकता है। परन्तु विज्ञान पूर्ण को अपने अन्दर नहीं समेट सकता। विज्ञान अभी तक एक छोटा सा प्याला है जो अपने अन्दर पूर्ण सागर को नहीं समेट सकता। अतः विज्ञान को महान मानने वाले सभी वैज्ञानिक लोगों को यह समझने का प्रयत्न करना चाहिए कि हमारे देश की सम्पदा क्या है।"

परमात्मा आपको धन्य करें।"

स्वास्थ्य केन्द्र में गए सहजयोगियों के कुछ मनोरंजक अनुभव

बैल्जियम की 62 वर्षीय वास्तुकार एटिने लोयसन (Etienne Loyson) आश्चर्यचकित हैं, "पहले मुझे उच्च-रक्तचाप था, विदेशों के डॉक्टरों ने नियमित रूप से कुछ गोलियाँ ही इसका इलाज बताई थीं। परन्तु आज सहजयोग उपचार और श्रीमाताजी निर्मला देवी के आशीर्वाद से मैं पूर्णतः सशक्त हूँ। मैंने सारी दवाईयाँ छोड़ दी हैं और मुझे लगता है कि मैं तीस वर्ष की युवा हूँ।

इंग्लैण्ड की कैथरीन रीड (Katherine Reid) जो आँत की तकलीफ (Irritable Bowels Syndrome) से पीड़ित थी सी बी डी, बेलापुर केन्द्र आने से पूर्व उन्हें बहुत सी दवाईयां लेनी पड़ती थीं, अपने पूर्व जीवन के मुकाबले वे आज अत्यन्त प्रसन्नचित्त महिला हैं। "सारी दवाइयाँ छोड़ कर मुझे बहुत अच्छा लगता है। मेरा स्वास्थ्य लगभग 80 प्रतिशत सुधर गया है।" "निराशा मनोविकृति (depressive psychosis) से पीड़ित कनाडा की अन्ना कार्गेटी (Anna Kargaity) आज प्रफुल्लित हैं। वे कहती हैं, "अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति करने तथा अपना व्यक्तित्व विकसित करने की क्षमता पाकर, अब जीवन के प्रति मेरा दृष्टिकोण सकारात्मक है।" आस्ट्रेलिया की बेलिंडा (Belinda), कनाडा के कुमार तथा अमरीका के ब्रियन (Bryan) तथा कुछ अन्य लोगों ने भी ऐसे ही लाभ प्राप्त करने के विषय में बताया।

स्वर्गीय डा. यू.सी. राय से एक बार जब पूछा

गया कि विश्वभर के आधुनिकभेषज के डॉक्टरों के पास जब इतनी उन्नत दवाईयाँ उपलब्ध हैं फिर भी क्यों इतनी अधिक संख्या में विदेशी यहाँ आते हैं, तो उन्होंने टिप्पणी की "विदेशी डॉक्टरों के पास मानव मन के लिए प्रशान्तक गोलियों तथा निराशा विरोधी दवाओं के अतिरिक्त कोई अन्य दवा नहीं है। ये दवाईयां केवल हानिकारक ही नहीं हैं, इनकी आदत भी हो जाती है। ध्यान धारणा के माध्यम से सहजयोग मानव मन को नियन्त्रित करता है। इस कारण से सहजयोग अस्थमा, आधा सीसी (Migraine), आँत रोग, बाँझपन, बहु-सूजन (Multiple Sclerosis) और स्पोंडीलाइटिस आदि रोगों के रोकने तथा इनके इलाज के रूप में बहुत प्रसिद्ध हुआ है। यह सब माताजी श्री निर्मला देवी के आशीर्वाद से है, जिन्होंने सहजयोग केन्द्र की स्थापना की और विश्व के लाखों लोगों को आत्मसाक्षात्कार प्रदान किया।"

यूनान से थियोडोर ऐफस्टाथियो (Theodore Efstathiou)

अपने सूक्ष्म तन्त्र पर नकारात्मकता की जमी हुई कुछ और धूल को स्वच्छ करने के लिए फरवरी 2002 में मैं सहज स्वास्थ्य केन्द्र बेलापुर में था। 19 फरवरी को केन्द्र का कार्य आरम्भ होने की छठी वर्षगाँठ थी। इस शुभावसर पर परमेश्वरी माँ के चरण कमलों में पूजा की गई। चैतन्य प्रवाह अत्यन्त शक्तिशाली था और इस पूजा में सम्मिलित होना अत्यन्त शुभ था। ये पूजा मील का पत्थर थी और इस अवसर पर केन्द्र, इसकी कार्यशैली तथा आवश्यकता के विषय में कुछ शब्द कहने का यह बहुत अच्छा मौका है।

रोग पीड़ित लोगों के लिए

पहले भी यह प्रश्न उठाया गया था कि सहजयोगियों को इलाज के लिए इस केन्द्र में आने की आवश्यकता क्यों है? परन्तु चिकित्सकीय या तीव्र भावनात्मक समस्याओं की स्थिति में यह प्रश्न अनावश्यक हो जाता है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति को चाहिए कि किसी चिकित्सक से मिल कर रोग एवं उसका कारण निश्चित करे। सहजयोगियों में डॉक्टरों की सलाह पर चलने की प्रथा है।

इस बात पर ध्यान दिया जाना चाहिए कि केन्द्र ने उन रोगों का भी निराकरण तथा सुधार किया है जहाँ चिकित्सा विज्ञान कुछ भी आराम न पहुँचा पाया। डाक्टर द्वारा बताया गया इलाज पूरा करने के बावजूद भी आप में चिकित्सालय जाने की इच्छा हो सकती है। शारीरिक समस्याओं को दूर करने का सहजयोग अभ्यास ही एकमात्र उपाय है। इस बात पर बल दिया जाना चाहिए।

बीमारी की अवस्था में, चिकित्सक रोग-लक्ष्णों को ही दबा देते हैं। चिकित्सा प्रणाली रोगमुक्त नहीं करती। रोग मुक्ति तो केवल तभी मिलती है जब सूक्ष्म तन्त्र की बाधा (जिसके कारण रोग होता है) दूर हो जाती है। अन्यथा रोग का कारण तो सूक्ष्म-तन्त्र में अभी तक बना हुआ है और रोगी पहले से भी बद्तर स्थिति की ओर बढ़ रहा है।

प्राचीन यूनानी दार्शनिक हेराक्लेटस (500 बी.सी.) की रचनाओं के केवल कुछ ही अंश बचे हैं। इन में से एक में वे कहते हैं, "काटकर और जला कर डाक्टर लोग भी वही करते हैं जो बीमारी करती है और इस कार्य के लिए उन्हें धन मिलता है जिसके वे अधिकारी नहीं हैं।" चिकित्सा विज्ञान में इतनी उन्नति होने के बावजूद आज भी यह बात उतनी ही सत्य है जितनी उस समय थी।

सुकरात ने उससे भी और अच्छी तरह इसकी व्याख्या की जब उन्होंने कहा, "किसी डॉक्टर को स्वयं का भी ज्ञान नहीं है। यही कारण है कि वह डाक्टर है।" सहजभाषा में कहा जाता है कि "कोई भी डाक्टर आत्म साक्षात्कारी नहीं है और इसी कारण वह डाक्टर है।"

शारीरिक समस्याओं वाले रोगियों को चाहिए कि सहजयोग चिकित्सकों के केन्द्रित चित्त और अनुभवों से लाभान्वित होने के लिए इस स्वास्थ्य केन्द्र पर जाने के विषय में सोचें।

शारीरिक रूप से स्वस्थ लोगों के प्रति

शारीरिक रूप से स्वस्थ लोगों के मन में ये प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि बिना कारण क्यों स्वास्थ्य केन्द्र जाने का कष्ट उठाया जाए? एक बार प्रोफैसर राय ने परम पूज्य श्रीमाताजी का उद्धरण देते हुए कहा था कि सहयोगियों में बाधाएं इतनी मजबूत हैं कि उन्हें अपने चक्रों की पकड़ महसूस ही नहीं होती।

परम पूज्य श्रीमाताजी का यह कथन अत्यन्त गम्भीर है। यह इस ओर संकेत करता है कि बिना चक्र-बाधाओं को महसूस किए आध्यात्मिक उत्थान प्राप्त करना अत्यन्त कठिन हो सकता है। समस्या को समझने के बाद ही आप इसका समाधान कर सकते हैं।

इसी तथ्य की व्याख्या करते हुए श्रीमाताजी ने बताया है कि जो रोग अस्तित्व में है उनकी कुल संख्या चक्रों के संयोजन और क्रम परिवर्तन (combinations and peamutations) के बराबर है। तीनों वाहिकाओं (नाड़ियों) पर इक्कीस चक्र हैं, अतः संयोजन और क्रम परिवर्तन को 21x20x19x18.....3x2x1 के परिणाम के रूप में गणना की जा सकती है।

इस अभिव्यक्ति की गणना Integer format में मैंने अपने कम्प्यूटर पर करने का प्रयत्न किया तो कम्प्यूटर में संख्याएं कम पड़ गईं। तब मैंने स्टर्लिंग की लगभग विधि से इसका अनुमानित मूल्य जानने का प्रयत्न किया तो इसका परिणाम 10 की घात 18 (ten raised to eighteenth power) आया। यह विस्मयकारी बड़ी संख्या है जो दस लाख की पाँच घातों के बराबर है। ये दर्शाता है कि रोगों का इलाज खोजने के लिए चिकित्सा शास्त्री और जैव-तकनीशियन बीमारियों की मूल-उत्पत्ति पद्धति खोजने के कितने निराशाजनक कार्य में लगे हुए हैं! साथ ही साथ, यह इस तथ्य का विचार भी देता है कि हम सबमें सूक्ष्म तन्त्र की दशा इतनी सीधी नहीं है जितनी चक्रों की हमारी संवेदना हमें बताती है। निःसन्देह मनुष्य चक्रों की पकड़ की इस विस्मयकारी संख्या को नहीं जान सकता।

सूक्ष्म तन्त्र की सही-स्थिति जानने तथा भिन्न बाधाओं को ठीक करने के लिए विकसित चैतन्य चेतना वाले व्यक्ति की आवश्यकता होती है। बेलापुर स्वास्थ्य केन्द्र के चिकित्सक इस स्तर की चैतन्य-चेतना से सम्पन्न हैं। ये वो लोग हैं जो सूक्ष्म तन्त्र को सन्तुलित करके व्यक्ति को आध्यात्मिक उत्थान के मार्ग पर ले आते हैं।

इससे पता चलता है कि सामान्य जीवनयापन करने वाले लोगों, जिन्हें अद्भुत अनुभव प्राप्त नहीं हुए, के लिए स्वीकरणों (affirmations), मन्त्रों तथा उपचार विधियों की आन्तरिक कार्य-शैली को समझना और महसूस करना आसान नहीं होता।

केन्द्र पर दिनचर्या

स्वास्थ्य केन्द्र पर रहते हुए आपका चित्त आध्यात्मिक उत्थान के अतिरिक्त किसी अन्य चीज़ पर नहीं होता। प्रातः आठ बजे सुबह का ध्यान होता है और सायं सात बजे शाम की ध्यान-धारणा जिसमें श्रीमाताजी का एक वीडियो देखना या प्रवचन सुनना भी सम्मिलित होता है। प्रातः चार बजे उठ कर उद्यान में जा कर ध्यान और प्रार्थना करने का अवसर भी आपको मिलेगा। इस प्रकार से बहुत सुबह के ध्यान का अन्तर भी आप महसूस कर सकेंगे। हमारी परम-पावनी माँ भी प्रातः के ध्यान पर बल देती हैं। सुबह सुबह उनके मन्त्र बोलते हुए और बाधाएं दूर करने के लिए उनसे प्रार्थना करते हुए जब आप सैर करेंगे तो पृथ्वी माँ के देवी रूप का अनुभव आपको प्राप्त होगा क्योंकि पैरों के माध्यम से आपकी बाधाएं अपने अन्दर खींच लेने में वे आपकी सहायता करती है।

दिन में दो बार डाक्टर आपको मिलेंगे और बताएंगे कि अगली बार मिलने तक आपने कौन सा उपचार करना है। उपचार का लक्ष्य ईड़ा और पिंगला नाड़ी में सन्तुलन बना कर सदा सुषुम्ना नाड़ी पर बने रहना है। ऐसा करते हुए वे बता सकते हैं कि अब कौन से चक्र ठीक होने हैं। इस प्रकार वे सूक्ष्म तन्त्र में निहित बाधाओं के मक्कड़जाल तक पहुँचने का मार्ग खोजते हैं।

स्वास्थ्य केन्द्र पर उपयोग की जाने वाली विधियाँ 'सहजयोग प्रार्थना पुस्तिका'' या अन्य उपचार

पुस्तकों में छपी विधियों से भिन्न नहीं हैं। महत्वपूर्ण बात तो ये है कि वहाँ की भूमि चैतन्य से परिपूर्ण है। हमारी परम-पावनी माँ का चित्त स्वास्थ्य केन्द्र पर होता है और वही सारे रोग दूर करती हैं। ये बात समझ लेना आवश्यक है कि केवल श्रद्धा से ही देवी का साक्षात्कार किया जा सकता है। यहाँ आ कर आप समर्पित हो जाते हैं क्योंकि चित्त-विक्षेप के लिए यहाँ और कुछ भी नहीं होता। श्रीमाताजी कहती हैं कि प्रार्थना सहजयोगी का सबसे बड़ा हथियार है। परम पावनी श्रीमाताजी के प्रति श्रद्धा और समर्पण तथा प्रभावशाली ढंग से प्रार्थना की विधि सीखने के लिए बेलापुर स्वास्थ्य केन्द्र अत्यन्त उपयुक्त स्थान है।

☆☆☆☆

श्री पी.के. साल्वे कला प्रतिष्ठान

वैतरणा, महाराष्ट्र

भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं ललितकला अकादमी वैतरणा, महाराष्ट्र, को परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी ने एक अत्यन्त गौरवशाली परियोजना के रूप में स्थापित एवं आशीर्वादित किया है।

झीलों और बन्धों के हरे भरे क्षेत्र में स्थित वैतरणा मुम्बई से लगभग 100 किलोमीटर तथा नासिक से परे राष्ट्रीय मार्ग सं.3 (मुम्बई आगरा मार्ग) पर स्थित है तथा मध्य रेलवे के खारदी स्टेशन से (25 किलोमीटर) यहाँ आसानी से पहुँचा जा सकता है।

सरिताओं, तरंगों और प्राकृतिक परिदृश्य से परिपूर्ण चालीस एकड़ भूमि पर यह अकादमी बनाई गई है। घने जंगलों से घिरे हुए मोदक सागर और ताँसा बान्ध इसके समीप स्थित हैं।

हमारी परमेश्वरी माँ के आदेशानुसार अकादमी के भवन की वास्तुयोजना बनाई गई थी। इसमें बीचों-बीच एक सहन हैं और एक मंच है जिसपर छत है।

शिक्षा की अवधि

अकादमी सत्र की अवधि

पहला सत्र - 1 जनवरी से 15 अप्रैल
(15 से 30 मार्च छुट्टियां)

दूसरा सत्र - 15 जून से 15 सितम्बर

तीसरा सत्र - 16 सितम्बर से 16 दिसंबर

व्यक्तिगत पाठ्यक्रमों की अवधि उस पाठ्यक्रम के Syllabus में दी गई है।

लक्ष्य वक्तव्य

आत्मा बनने के लिए संगीत दिव्य-प्रेरणा है। संगीत अकादमी का यही मुख्य उद्देश्य है।

अकादमी -

ये वो संस्थान है जहाँ कला सीखी जा सकती है और शोध किए जा सकते हैं और जहाँ पर विद्यार्थियों को अन्तर्वोलकन, चिन्तन और अपने आप पर आध्यात्मिक शोध करने का पर्याप्त समय प्राप्त होता है। सूक्ष्म एवं स्थूल स्तर पर कला, अन्तर्आत्मा को पहचानने, उसे अनुभव करने और दिव्यता के स्तर तक ऊँचा उठाने का माध्यम है।

प्रस्तावना -

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी द्वारा प्रतिपादित की गई शिक्षाओं, जिनका मूल तत्व सहजयोग में निहित है, को आधार बनाकर अकादमी के नियम बनाए गए हैं। अकादमी के अन्दर और बाहर विद्यार्थियों के लिए इन विवेकशील नियमाचरणों का सम्मान करना अनिवार्य है क्योंकि अध्ययन काल में ये विद्यार्थी अकादमी का प्रतिनिधित्व करते हैं।

उपयुक्त दृष्टिकोण अपनाया जाना आवश्यक है। अकादमी के विद्यार्थी ग्राहक नहीं हैं वे तो भारतीय आध्यात्मिक संगीत के विद्यार्थी हैं, उस संगीत के जिसे श्रीमाताजी की अकादमी की पावन शिक्षाओं के अनुरूप सिखाया जाता है। यहाँ रहते हुए उन्हें हमेशा ध्यान रखना है कि यहाँ रहना उनका अधिकार नहीं है, ये तो एक आशीर्वाद है जिसकी वर्षा श्रीमाताजी उन पर करती है। विद्यार्थी ने यदि इसके स्वभाव को समझना है तो उसे इस सत्य की समझ होनी आवश्यक है।

अकादमी में प्रवेश पाने के इच्छुक विद्यार्थियों के लिए सूचना

आन्तरिक ढांचा : अकादमी में आपके प्रवास को सुखद बनाने और आपकी शिक्षा को स्मरणीय बनाने के

लिए निम्नलिखित मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध हैं:

1. दो व्यक्तियों के लिए आरामदेह भारतीय शैली के कमरे और परिवार के लिए स्वतन्त्र रूप से कमरा।
2. स्वच्छता पूर्वक बनाया गया स्वास्थ्यप्रद पोषक भारतीय शाकाहारी और माँसाहारी भोजन।
3. पुस्तकालय, अध्ययन एवं अभ्यास के लिए कमरे जिनमें पुस्तकों, सी.डी. कैसेटस और अध्ययन की वस्तुएं सन्दर्भ के लिए उपलब्ध कराई जाती है।
4. टी.वी., वी.सी.डी./डी.वी.डी. तथा ऑडियो आदि विद्युत उपकरण।
5. सम्पर्क सुविधाएं :-

(क) ई-मेल के लिए इंटरनेट सुविधा, वैब कान्फ्रेंसिंग एवं सर्फिंग (Web conferencing and surfing)।

(ख) टेलिफोन और फेक्स (अन्तर्राष्ट्रीय टेलिफोनों के लिए फोन कार्ड खरीदे जा सकते हैं।)

(ग) स्कैनिंग और फोटोकापिंग

6. रिकार्डिंग के लिए संगीत स्टूडियो (निर्माणाधीन) विद्यार्थियों एवं अध्यापकों के लिए उपयोगी।

वीज़ा एवं अप्रवासन (Visa and Immigration)

1. अकादमी में छः महीनों से अधिक रहने के इच्छुक विद्यार्थियों को अपने सम्बन्धित देशों से भारतीय वीज़े का प्रबन्ध करना होगा। अपने देशों में भारतीय दूतावासों के स्थान जानने के लिए सम्पर्क :-

(a) http://passport.nic.in

(b) http://www.india-visa.com

2. वाद्य यन्त्र :

सीखने के लिए वाद्ययन्त्र या तो खरीदे जा सकते हैं या अकादमी में उपलब्ध वाद्य यन्त्रों का उपयोग किया जा सकता है। व्यक्तिगत वाद्य-यन्त्रों रखने का परामर्श दिया जाता है।

सम्पर्क सूचना :

अकादमी का पता :-

वैतरणा बन्ध के समीप

(मोदक सागर के नाम से प्रसिद्ध)

ग्राम-वेलबाड, डाकखाना - वैतरणा, तालुका - सहापुर, जिला-थाणे-421304

(महाराष्ट्र) भारत।

फोन : +912527 248528 / 248530

(भारतीय समय के अनुसार 10.00 बजे प्रातः से 6.00 बजे सन्ध्या की बीच फोन करें)

प्रिंसिपल - डा. अरुण आप्टे

मोबाइल नं. - +91 9325316580

अकादमी -

homepage : www.pksacademy.com

मुम्बई दफ्तर

श्री पी.के. साल्वे कला प्रतिष्ठान

612-बी, उर्मिला कोपरेटिव हाऊसिंग सोसायटी, शिवाजी चौक सहर रोड़, अन्धेरी ईस्ट, मुम्बई-400069

फोन : +91 22 2684 3169

फैक्स- +91 22 2683 1314

E-mail : draruapte@yahoo.co.in

(भारतीय समय के अनुसार 10.00 बजे प्रातः से 6.00 बजे सन्ध्या के बीच फोन करें)

संगीत अकादमी के उद्घाटन के अवसर पर 31 दिसम्बर 2002 और 1 जनवरी 2003 को वैतरणा, भारत में परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी द्वारा दिए गए प्रवचन से उद्धरण:

"मुझे ये कहना है कि जीवन संगीतमय होना चाहिए। 'संगीतमय' अर्थात मानव मस्तिष्क की स्थिति को सुधारकर इसे लयबद्ध और व्यवस्थित बनाना। वे उपलब्धि पाए बिना कोई लाभ नहीं। आपमें और अन्य लोगों में क्या अन्तर होगा ? आप भी अन्य लोगों की तरह से लड़ते रहते हैं।

आवश्यक बात तो ये है कि हमारे हृदयों में कहीं अधिक प्रेम एवं श्रद्धा होनी चाहिए। इससे आपको भी शान्ति मिलेगी और अन्य लोगों को भी। शान्ति के बिना संगीत अर्थहीन है। इस भवन का निर्माण हमने बाबा-मामा के आदर्शों के अनुरूप किया है। लोगों के

जीवन में संगीत स्थापित करना और पूरे वातावरण को शान्त बनाना इसका उद्देश्य है। आज विश्व को शान्ति की आवश्यकता है, बाकी सब कुछ अर्थहीन है. ..।"

"... मेरा आशीर्वाद है कि यह संस्था फले-फूले और जो लोग इसमें शिक्षा प्राप्त करें वे संगीत सीखकर अपने जीवन को संगीतमय बनाएं। मुझे आशा है कि आप मेरी इच्छा को पूर्ण करेंगे। जब भी आपको क्रोध आए, क्रोध का दौरा जब भी आपको पड़े, जब भी आपकी शिकायत करने की इच्छा करे तो स्वयं से कहें कि मैं सहजयोगी हूँ, मैं भिन्न व्यक्ति हूँ। किस प्रकार श्रीमाताजी ने मेरा अन्तः परिवर्तन किया है! आप यदि इस बात को समझ जाएंगे तो आत्म-सम्मान का विवेक आपके अन्दर जागृत हो जाएगा। ये भावना जागृत हुए बिना कोई लाभ नहीं, भौतिक परियोजनाओं का कोई लाभ नहीं है। छोटी-छोटी बातों पर झगड़ना आपको शोभा नहीं देता। अब आप सन्त और पैगम्बर बन गए हैं। अत्यंत उच्च श्रेणी के व्यक्ति। परन्तु इस तथ्य के प्रति आप संवेदनशील नहीं है। आप ये नहीं समझते कि आप सन्त हैं, पैगम्बर हैं। आप स्वयं को गली के भिखारी सम मानते हैं, जो आप नहीं हैं। आज मैं विशेष रूप से आपको आशीर्वाद देती हूँ कि आप सब संगीतमय हो जाएं.... आज मैं इसलिए आपको आशीर्वाद देना चाहती थी कि आप स्वभाव से पूर्णतः संगीतमय, लयबद्ध और अन्य लोगों का मनोरंजन करने वाले बन जाएं, झगड़ालू नहीं...।"

"..... सभी देशों की अपनी समस्याएँ हैं, परन्तु हमारे पास हमारे संगीत के रूप में एक अत्यन्त महान सम्पदा है। संगीतकार नहीं, संगीत। अतः संगीतकारों को चाहिए कि सहजयोग अपनाएं। ध्यान धारणा करें। कोई संगीतज्ञ यदि धन-लोलुप है तो उसके लिए आप कुछ नहीं कर सकते। उसे या तो संगीत लोलुप होना चाहिए या धन लोलुप। वो जब धन लोलुप होते हैं तो, मैं यह सोचती हूँ वो कभी अपना सम्मान नहीं कर सकते। क्योंकि यदि आपके पास संगीत है, संगीत की प्रतिभा है तो क्यों आपको धन की चिन्ता करनी चाहिए? जितना भी धन आप उन्हें देते चले जाएं वो कभी सन्तुष्ट नहीं होंगे। मैंने बहुत से महान संगीतकारों को देखा है जो कभी भी धन लोलुप न थे, और न कभी जिन्होंने सत्ता की चिन्ता की। आज भी हमारे यहाँ बहुत से संगीतज्ञ हैं जो , मैं कहूँगी, संगीत की पराकाष्ठा (Last words) हैं। जो लोग ऐसे हैं वे अत्यन्त विनम्र हैं। वो हमेशा आपसे कहेंगे कि "हमें बहुत कुछ सीखना है। हमें अभी बहुत कुछ समझना है।"

अतः बाबा मामा तथा अपने पिता की मूर्ति को देखकर मैं अत्यन्त द्रवीभूत एवं प्रभावित हुई। इसलिए नहीं कि वे मेरे भाई या पिता थे परन्तु इसलिए कि वे अत्यन्त-अत्यन्त महान मानव थे और उनकी महानता ने मेरे हृदय को छू लिया। बाबा में यह गुण था कि वह अत्यन्त प्रेममय एवं क्षमाशील व्यक्ति थे। अत्यन्त विनम्र एवं प्रेममय। शोहरत की उसने कभी चिन्ता नहीं की और न ही कभी उसने सोचा कि वह कौन से पद पर है। उसका विनम्र स्वभाव अत्यन्त स्वाभाविक और अत्यन्त मधुर था। और बचपन से ही वे मेरे साथ थे।"

"... तो अब उनके प्रेम एवं स्नेह के परिणाम स्वरूप हमारे पास बहुत से संगीतज्ञ हैं, यहाँ बहुत से लोग हैं। जो कार्य उन्होंने सहजयोग के लिए किया उसके लिए मैं बाबा मामा तथा अपने पिता की आभारी हूँ। परमात्मा आप सबको धन्य करें।"

हाल ही में अकादमी आए एक सहजयोगी का अनुभव

आस्ट्रिया के Anand Schreuer : हमारी परम पूज्य श्रीमाताजी की कृपा से मुझे उस आशीर्वादित संस्था में कुछ महीने अध्ययन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जिसे मैं "हमारी अकादमी" कहता हूँ।

पीछे की ओर दृष्टि डालता हुए मैं देख सकता हूँ कि अहं तथा आत्मा के अन्य शत्रुओं का वज़न कितना कम हो गया है!

इस दिव्य स्थल पर रहने का अनुभव अत्यन्त

आनन्ददायक था। बहुत सारे पक्ष ऐसे हैं जिन पर विश्वास नहीं होता और जिन्हें वर्णन करना भी कठिन है। विश्व भर से आए सहज विद्यार्थियों के साथ विशाल आश्रम में रहने की बहु-सांस्कृतिक सुगन्ध है। वहाँ एक मंच है जिस पर हाल ही में अकादमी के शुभारम्भ के अवसर पर साक्षात श्री आदिशक्ति के पावन चरण कमलों में पूजा अर्पित की गई थी। इसी मंच पर हम सहजियों को ध्यान धारणा करने की अनुमति है। अकादमी का भवन अविश्वसनीय ढंग से सुन्दर और व्यवहारिकता से परिपूर्ण है और इस बात पर आश्चर्य नहीं होता क्योंकि भवन की रूपरेखा साक्षात् परम पावनी श्रीमाताजी द्वारा बनाई गई है।

पूरा आश्रम चैतन्य से परिपूर्ण है और हम निरन्तर इस चैतन्य सागर में गोते लगाते हैं। अकादमी के चहुँ ओर जंगल है और वैतरणा नाम के ग्राम समेत ग्रामीण क्षेत्र। परम पूज्य श्रीमाताजी का अपनी इस नई परियोजना पर पूरा चित्त है और यह बात हमारे लिए स्पष्ट है। श्रीमाताजी साक्षात स्वयं अकादमी में होने वाली गतिविधियों में पूछ-ताछ करती हैं कि वहाँ क्या चल रहा है और कौन-कौन लोग वहाँ पर हैं। अपनी परमेश्वरी गुरु के प्रेम एवं स्नेह को उस दिव्य स्थल पर हर कदम के साथ हम महसूस कर सकते हैं।

मुड़कर पीछे की ओर देखते हुए सहज शब्दावली में यदि मैं कहूँ तो मैं पाता हूँ कि श्रीमाताजी ने मुझे सावधानी पूर्वक चैतन्य लहरियों में ऊपर उठा लिया और यहाँ आने से पूर्व के मुकाबले में बहुत हल्का महसूस करता हूँ।

भारतीय शास्त्रीय संगीत जिसका अध्ययन मैं कर रहा हूँ वह इतना सुन्दर है कि संगीत में ही अथाह चैतन्य है और यह मानव को परिवर्तित करने में सक्षम है। गायक और श्रोता, दोनों के हृदयों को यह छू लेता है। संगीत, नृत्य और चित्रकारी के साथ सहज का सम्मिश्रण, कम से कम मेरे लिए तो चैतन्य लहरियों के विस्फोट सम हैं

हाल ही में अकादमी के विद्यार्थियों को परम पूज्य श्रीमाताजी के श्री चरणों में संगीत अर्पण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। कुचिपुड़ी नृत्य का अध्ययन करने वाली सात वर्षीय बालिका अकादमी की सबसे छोटी विद्यार्थी थी। 24 दिसम्बर को अपनी अन्य बड़ी सहज बहनों के साथ मिलकर उसने श्रीमाताजी के सम्मुख नृत्य का हृदय स्पर्शी प्रदर्शन किया। उसके नृत्य से द्रवीभूत होकर बाद में बहुत से भारतीयों ने अकादमी में प्रवेश लिया।

अकादमी आवासीय छात्रों को बहुत सुन्दर कमरे की सुविधा प्रदान करती है जिसमें प्रायः दो भाई, दो बहनें रहते हैं। स्नानागार हर कमरे के साथ जुड़ा हुआ है। सारा कार्य सहजयोगी करते हैं। वे ही सफाई करते हैं और वे ही खाना बनाते हैं। हम अपने पाठ ग्रहण करने, अध्ययन करने और मौज मनाने के लिए पूरी तरह स्वतन्त्र हैं।

इस समय जन्म लेकर हमारी परम पावनी माँ द्वारा प्रदान की गई दिव्य सुविधाओं का आनन्द उठाने का अवसर प्राप्त करना कितना बड़ा वरदान है!

ऑन लाइन सहजयोग सम्पर्क पते

A few selected URLs (online site address) to view International Sahaja Yoga Sites and related Sahaja Information like Newsletter :

http://www.sahajayoga.org/ Sahaja Yoga Inernational Site
http://www.sahajayoga.org/swa/ Sahaja world wide Announcement and News
http://www.sahajayoga.org/sahajnews/ North American News Letter
http:// www.sahajayoga.org.in/ India News Letter/ SITA India
http://www.theaterofeternalvalues.com/dcoHTML/newsletter.htm TEV (Theatre of Eternal Values) Newsletter
contact@sahajayoga.ca Sahaja Path (Sahaja Yoga Canada Newsletter)
sahajnews@yahoo.com
johndobbie@innocent.com Australian Newsletter
dalysean@hotmail.com Australian National Yuva Shakti Newsletter (Until publish)
http://www.sol.com.au/kor/home/htm Knowledge of Reality; Australia Magazine
ramoodley@worldonline.co.2a African Newsletter
A few more URLs: That may interest Sahaja Yogis to view on the net
http://www.valaya.co.uk/IN-DEEP.htm Mother's talk Excerpts
http://www.daisymaerica.com/ Sahaja Book Publication
http://www.sakshi.org Sakshi Pokhari - The Pond of the Witness
http://www.sahajvidya.freeuk.com/jsmsy Excerpts of Mother's talk
http://www.sahajayogasardegna.it/musica.htm Music related site, Nirmal Tarang in MP3
http://www.yuvashakti.com/ Yuva Shakti, International
http://www.yuvadrishti.com/ Indian Yuva Shakti Magazine
http://www.geocities.com/seattleyoga/ Sahaja Yoga in Seattle
http://sahajabhakta.org/nysahajayoga/ Sahaja Yoga New York and New Jersey
http://www.shrimataji.net rare photographs of Puja and other
http://www.geocities.com/vndsybenin/nigeria/ Sahaja Yoga in Nigeria and Lagos
http://www.poetry-enlightened.org/ecrire/ enlightened poetry section
http://www.sahajayoga.es/uma/ Promised land of Spain
http://sahasrara.nirmala.info/ Sahaja Yoga contacts and other related information
http://homepages.ihug.co.nz/~sahaj_nz Seeking Sahaja Self Realization
http://www.sahajayogamumbai.org Seeking Sahaja Knowledge.
www.nirmala.cz Czech Sahaja WebPages.
www.sahajayoga-arabia.com Arabic Site for Self Realization
http://sitemaker.umich.edu/sahajayoga **Sahaja Yoga of Michigan/USA** Sahaja Related Information (evidence based outreach)
http://bayyoga.intelligentfilms.com/ San Francisco/Oakland Sahaja Yoga website (A video testimonial from a Sahaja Yogi)
http://www.yogacolorado.org/login.php?page=leela Sahaja Yoga Colorado/Leela Game. Also video film 'vision'
http://www.chicagoyoga.org/seeker_cd Sahaja Yoga Chicago
http://www.bhajan.nirmalvihar.info Sahaja Bhajan
http://www.nirmalbhakti.com Devotional Indian Music.

सहजयोग परियोजनाएं एवं प्रकाशित पुस्तकें

1970 से सहजयोग विकास प्रक्रिया में एकत्र की गई सम्पदा की यह पूर्ण सूची नहीं हैं परन्तु यह विश्व के कोने-कोने में प्रकाशित होने वाली पुस्तकों, पत्रिकाओं तथा अन्य प्रकाशनों (जिनकी सूचना विशाल सामूहिकताओं से मिल पाई है) का संकलन करने का प्रयत्नमात्र है। सम्भवतः इनमें से कुछ पुरानी पुस्तकें अभी भी उपलब्ध हों, और हो सकता है कि कुछ अब उपलब्ध न हों। इस सूची का लक्ष्य साहित्य अध्ययन की सिफारिश भी नहीं है। इसका उद्देश्य तो सहजयोग में किए गए कार्यों का स्मरण करवाना है। इसमें श्रीमाताजी द्वारा आशीर्वादित कविताएं लेख और पुस्तकें सम्मिलित हैं।

सहज साहित्य से सम्बन्धित परियोजनाएं

विश्व भर में भिन्न धर्मों के ग्रन्थों तथा पुरोलेखों के संकलन को ध्यान में रखते हुए, विश्व सामूहिकता के हम सभी सहजयोगियों के लिए आवश्यक है कि परम पूज्य श्रीमाताजी के चरणकमलों में नतमस्तक हो कर सामूहिक रूप से प्रार्थना करें कि परमेश्वरी माँ के शब्दों को अपने अन्तस में समेटे हुए सभी पुस्तकें और पुरालेख, भविष्य में इस सुन्दर विश्व में अवतरित होने वाली पीढ़ियों के लिए धरोहर के रूप में उपलब्ध हों। उनके प्रवचन विश्व के लिए मन्त्र सम हैं, यही हमारे वेद, पुराण और महा धर्म-ग्रन्थ बनेंगे। इनके माध्यम से पूरा विश्व श्री आदिशक्ति माता जी श्री निर्मला देवी के पृथ्वी पर अवतरण का साक्षी हो सकेगा।

इस दिशा में आरम्भ की गई परियोजनाओं के पीछे इच्छा एवं उद्देश्य ये था कि परमपूज्य श्री माताजी द्वारा अंग्रेजी में दिए गए अधिकाधिक प्रवचनों को शुद्धता पूर्वक प्रतिलिखित किया जा सके ताकि उपफल के रूप में एक महत्वपूर्ण स्रोत का सृजन हो जो शोध कर्ताओं, विद्या विशारदों तथा उन देशों को उपलब्ध हो सके जो इन प्रतिलेखों का रूपान्तरण अन्य भाषाओं में करना चाहते हों।

परन्तु इस विस्तृत सूची में शोध-पत्रों तथा उन अन्य दस्तावेजों की सूची सम्मिलित नहीं है जो पहले ही पत्र-पत्रिकाओं और अखबारों में छप चुके हैं। साथ ही साथ समय समय पर प्रकाशित सहजयोग लेखों तथा शोधपत्रों की सूची भी बनाई जा रही है, इसे नकारा नहीं गया है।

अन्तर्राष्ट्रीय सहजयोग पुस्तक परियोजना (SWAN के अनुसार)

पृष्ठभूमि : इस परियोजना को श्रीमाताजी ने वर्ष 2003 में स्वीकृति प्रदान की थी और उसी वर्ष सितम्बर माह से इस पर कार्य आरम्भ हो गया था।

उद्देश्य : मुख्य धारा प्रकाशकों द्वारा परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी लिखित 10-11 पुस्तकों को प्रकाशित करवाना। आरम्भ में ये पुस्तकें daisyamerica LLC द्वारा प्रकाशित की जाएंगी और बाद में प्रकाशन तन्त्र का विस्तार किया जाएगा।

इस प्रकार सामान्य पाठक (जिनमें से बहुत से शायद कभी भी सहज गोष्ठी में भाग ने ले पाए हों) भी श्रीमाताजी की शिक्षाओं तथा अन्तर्दृष्टि तक पहुँच सकेंगे। बाद में यदि उनकी इच्छा होगी तो, यह पाठकों के आत्म साक्षात्कार का अनुभव पाने तथा सहज सामूहिकता से जुड़ने की योग्यता प्रदान करेगी।

विधि : भिन्न देशों के सहजयोगियों की एक टीम ने श्रीमाताजी के अंग्रेजी भाषा में दिए गए आडियो और वीडियो टेपों में सुरक्षित प्रवचनों का सत्यापित प्रतिलेखन आरम्भ कर दिया है।

इन प्रतिलेखों से सम्पादकगण दिए गए परामर्शों के अनुसार निम्नशीर्षकों की पुस्तकों का संकलन करेंगेः-

1. **सहजयोग परिचय**
2. **द्वार प्रहरी** - (अबोधिता एवं विवेक, श्री गणेश तथा भगवान ईसा मसीह)
3. **स्वयं के गुरु किस प्रकार बनें** (आदिगुरु दत्तात्रेय)
4. **शीतल अग्नि** (कुण्डलिनी तथा आत्म साक्षात्कार)
5. **आन्तरिक संसार** (सूक्ष्म तन्त्र एवं चक्र)
6. **अन्तरपरिवर्तन का अभ्यास** (शुद्धिकरण तकनीक, सन्तुलन, ध्यान धारण विधि, अन्तर्अवलोकन)
7. **ज्योतित मस्तिष्क** (बुद्ध, बौद्धमत और हँसा)
8. **प्रकाश पुंज** (देवी-देवता)
9. **धर्मों का सौभाग्य तथा दुर्भाग्य** (इस्लाम, ईसाईमत, हिन्दुधर्म, यहूदी धर्म)
10. **दैन नन्दिनी** (श्रीमाताजी के प्रवचनों से उद्धरण)

न्यूयार्क के अलेन व्हैरी (Alan Wheery) इस परियोजना के निदेशक (Director) हैं, लन्दन, यू. के. के कैन विलियम्ज़ (Ken Williams) मुख्य प्रबन्ध

सम्पादक (Managing Editor)। स्मृति गुप्ता और एन. केपाजोली (Ann Capazzoli), न्यूयार्क और आस्ट्रिया के अन्टोन ग्रेबमेयर (Anton Grabmayer) भी प्रबन्ध सम्पादक हैं और आरम्भिक प्रतिलेखन (Transcription) परियोजना में मिल कर जोड़ों (Paris) में कार्यरत योगियों का नेतृत्व कर रहे हैं।

टीम के सदस्यों का ऐसा स्थापित सहजयोगी होना अनिवार्य है जिनमें सन्तुलन तथा हँसाचक्र के पर्याप्त गुण हों तथा जिन्हें सहज शब्दावली का भी आवश्यक ज्ञान हो। अंग्रेजी भाषा में, बिना किसी त्रुटि के, कार्य करने की योग्यता भी उनमें होनी आवश्यक है।

पूर्ण प्रतिलेखों से ये सम्पादक उपरोक्त विषयों को पूर्णतः समन्वित करके ऐसी पुस्तकें संकलित करेंगे जिन्हें वे पाठक भी पढ़ सकें, समझ सकें और आनन्द उठा सकें जिन्हें सहजयोग का बिल्कुल पूर्व-ज्ञान न हो। प्रकाशित होने से पूर्व सभी पुस्तकों का डेविड स्पायरो (David Spiro) और ग्रेगोर डी कलबरमैटन (Gregoire de kalbermatten) को भेजना अनिवार्य होगा।

इसका उद्देश्य परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी द्वारा अंग्रेजी में दिए गए अधिकाधिक प्रवचनों को शुद्धता पूर्वक प्रतिलिखित किया जा सके ताकि उपक्रम के रूप में एक महत्वपूर्ण स्रोत का सृजन हो जो शोधकर्ताओं, विद्याविशारदों तथा उन देशों को उपलब्ध हो सके जो इन प्रतिलेखों का रूपान्तरण अन्य भाषाओं में करना चाहते हैं।

☆☆☆☆

सहजयोग मन्त्र पुस्तिका

सोमवार 4 अप्रैल 2005

हर्षपूर्वक हम संघ को सूचित करते है कि सहजयोग प्रचार-प्रसार विश्व परिषद (WCASY) की प्रकाशन समिति ने आधुनिकृत, त्रुटिहीन सहजयोग मन्त्र पुस्तिका के उत्पादन की जिम्मेदारी ली है।

कुछ समय पश्चात एक अन्य प्रकाशन-सहजयोग पूजा पुस्तक- द्वारा इसे सम्पन्न किया जाएगा। पुरानी मन्त्र पुस्तिका में छपी प्रार्थनाओं के साथ सहजयोग से सम्बन्धित विश्व धर्मों के ग्रन्थों से उद्धृत चुने हुए अंशो को जोड़कर इस पुस्तक को पूर्ण किया जाएगा।''

मन्त्र पुस्तक सहजशास्त्र पर आधारित होनी चाहिए, विद्यमान वर्तमान मन्त्र पुस्तक पर, जिसको वर्षों तक भिन्न साक्षात पूजाओं में तैयार किया गया अन्तिम स्वीकृति तथा प्रकाशन से पूर्व इस पुस्तक की विषय-वस्तु की जांच संस्कृत भाषा के विद्वान करेंगे तथा समिति के सदस्य तथा WCASY के इच्छुक सदस्य इसका पुनरवलोकन करेंगे। इस प्रकार सभी सहजयोगी तथा सहजयोगिनियाँ समझ पाएंगे कि इस महत्वपूर्ण पुस्तक के उत्पादन पर कितना ध्यान दिया गया है।

वर्तमान में भी बहुत सी मन्त्र पुस्तकें प्रचलन में हैं और हम जानते हैं कि सहजयोग मन्त्र पुस्तक के नाम से वेबसाइट पर एक पुस्तक प्रसारित की गई थी जिसकी कुछ प्रतियाँ भारत में छपीं। इसके शीर्षक पृष्ठ पर सर्वाधिकार श्रीमाताजी एवं लाइफ इटरनल ट्रस्ट लिखा हुआ था। ये बात स्पष्ट होनी चाहिए कि यह पुस्तक व्यक्तिगत प्रयत्न मात्र है जिसे इसके वर्तमान रूप में समिति ने स्वीकृति नहीं प्रदान की है।

व्यक्तिगत योगियों द्वारा किए गए प्रयत्न चाहे जितने अच्छे हों, परन्तु उनसे अनावश्यक भ्रम अवश्य उत्पन्न होगा। लेखक की उत्सुकता यद्यपि स्पष्ट है फिर भी पुरानी पुस्तक की विषय-वस्तु में किए गए परिवर्तन अनावश्यक हैं। इस संस्करण में परिवर्तित की गई बहुत सी विषय-वस्तु पढ़ी गई और H.H.S.M. द्वारा स्वीकार भी की गई और ये मन्त्र हमारी पूजाओं के अंग भी बन गए हैं। आवश्यकता बस इनके संस्कृत रूपान्तरण को सुधारने की है ताकि उद्देश्य-पूर्ति निश्चित की जा सके।

इसलिए इस स्थिति में प्रकाशन समिति, विकसित हो रही मन्त्र पुस्तक जो WCASY द्वारा स्वीकृत है, के अतिरिक्त किसी भी अन्य पुस्तक को न तो प्रोत्साहित कर सकती है और न ही इसके प्रकाशन एवं प्रसारण का अधिकार दे सकती है। इस दौरान पुरानी (हरे रंग की) मन्त्र पुस्तक को संघ के उपयोग के लिए सुझाया जाता है।

इस मामले में सभी की सूझ-बूझ के लिए हम आभारी हैं। मन्त्र क्योंकि सहज पूजाओं के आधार हैं, हम इस बात के प्रति चेतन हैं कि संघ को एक अधिकृत पुस्तक की आवश्यकता है। हमें पूर्ण विश्वास है कि उपरोक्त प्रक्रिया सदा सर्वदा चलने वाली मन्त्र पुस्तक के सृजन की आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए पर्याप्त होगी।

सहजयोग प्रचार प्रसार विश्व परिषद की प्रकाशन समिति की ओर से

Alan Wherry - Gregoire de Kalbermatten -

Name of Book	Author	Language
Corruption–India's Enemy Within (2001)	Sir C P Srivastava	English
Bhrashtachar–Bharat ki Bhiteri Shatru (Hindi Version of Corruption) (2002)	Sir C P Srivastava	Marathi/ Hindi
Nirmalanjali	Prayer/ Song Book	Hindi/ Marathi
Sahaja Yoga Songbook	Compilation	English
Pushparpan	Compilation	Hindi
Sahaja Pushpanjali (1995)	compiled by Sushil Kejriwal(Songs)	Hindi
Sahajamala(Book of Poems) (2000)	Armaity.H. Bhabha	English
Sahaja Geetarpan (1995)	compiled by Sushil Kejriwal(Songs)	Hindi
Sahaja Yoga Geetanjali	Compiled book of songs (English,Hindi, Marathi)	English
Sahaja Yoga Parichay Pustika	Compilation	Hindi
Sahaja Yoga The Unique Discovery	H.H. Shri Mataji Nirmala Devi	English
Sahaja Yoga - A Guide for Parents, Teachers and Students	Helga Fein	English
Mantra Folder	Compilation	English
The Joy of spreading Sahaja Yoga (2005)	Excerpt from Speeches of Shri Mataji Nirmala Devi	English
Divine Light– Miracle Photographs of Shri Mataji (1998)	Geoferey Godfrey & R K Pal	English
The Divine Mother– 1008 Photographs of Shri Mataji– The Great Guru (2000)	Geoffrey Godfrey,	English
Islam Enlightened (1998)	Javed Khan	English
The Light of the Koran– Knowledge through Sahaja Yoga (1998)	Flore Descieux, Transl: Caroline Mc Carthy	English
Geeta Enlightened (1986)	Yogi Mahajan	English
Bible Enlightened–Religions and Yoga (Vol. First, Second and Third) (2003)	Dr. Dan Costian	English
Music & Sahaja Yoga (1997)	Dr.Arun Apte and D.V. Athavale	English
Sahaja Yoga 1991(Eng)/1998(Hindi)	H.H Shri Mataji Nirmala Devi	English/Hindi
Sahaja Yoga Research and Health Centre	H.H Shri Mataji Nirmala Devi	English
Education Enlightened– A Guide for Schools	H.H Shri Mataji Nirmala Devi	English
Meta Modern Era (1996)	H.H Shri Nirmala Devi	English
Para Aadhunic Yug (Hindi Version of Meta Mordern Era) (2000)	H.H Shri Mataji Nirmala Devi	Hindi
My Memoirs (2000)	Babamama(HP Salve)	English

Mere Sansmaran (Hindi Version of My Memoirs) (2002)	Babamama(HP Salve) Translation. O.P Chandna	Hindi
Sahaja Yoga Prakritik Jadi Bution Dwara Rog Niwaran	Compilation- Booklet	Hindi
The Advent (1979)	Gregoire De Kalbermatten	English
L'Avenement (French edition of The Advent) (1985)	Trans:Lotus heart	French
El Advenimiento (1994) (Spanish Version of The Advent)	Gregoire De Kalbermatten	Spanish
The Third Advent (2003)	Gregoire De Kalbermatten	English
Jail Break	Yogi Mahajan	English
Miracles of God		English
The Search for the Divine Mother (1997)	Gwenael Verez	English
Cooking With Love- Divine (2003)	Recipes of H.H Shri Mataji Nirmala Devi	English
Lal Bahadur Shastri– A Life of Truth in Politics (1995)	Sir C.P. Shrivastava	English
Lal Bahadur Shastri– Rajneeti Mein Satyanishth Jivan (2000) (Hindi version)	Sir C.P. Shrivastava (Trans: Shankar Nene)	Hindi
Navaratri Talks—Pune 1988 (2002)	Talks of H.H Shri Mataji on Navaratri 1988, Pune	English
Navaratri Pravachan— Pune 1988(Hindi Vesrion) 2003	Talks of H.H Shri Mataji on Navaratri 1988, Pune	Hindi
Medical Science Enlightened– New Insight into Vibratory Awareness for Holistic Health Care (1993)	Professor Dr. Umesh C Rai, M.D.	English
New Delhi Medicos Vol.13 April&May 1997 Nos. 4&5 (1997)	Ed. Dr. JJ Sood, Dr. MN Sood & Dr. R Garg	English
The Ascent	Yogi Mahajan	English
Utthan (Hindi Version of The Ascent) (1994)	Yogi Mahajan translation by CL Patel	Hindi
Realized Saints	Yogi Mahajan	English
Sufi Odes to Divine Mother	Yogi Mahajan	English
Great Women of India	Yogi Mahajan	English
The Face of God	Yogi Mahajan	English
New Millenuim Fulfills Ancient Prophecies	Yogi Mahajan	English
Nav Sahasrabdi (Hindi Version of New Millenuim Fulfills Ancient Prophecies) (2000)	Yogi Mahajan translation by O.P. Chandna	Hindi
Unique Discovery	Booklet	English
Divine Knowledge through Vibrations (1992)	PT Rajasekharan & R Venkatesan	English
A Collection of Prayer & Praise—Sahaja Yoga (1990)	Compilation	English

➨ Sahaja Yoga Puja Book (1990)	French Compilation– From Le Puja	English
➨ Sahaja Yoga Mantra Book 1989	H.H. Shri Mataji Nirmala Devi	English
➨ Prayers, Praises & Protocol to Her Holiness Shri Mataji Nirmala Devi	Collection	English
➨ Come the Mother Calls— A Tribute of Love to Shri Mataji Nirmala Devi	Compilation	English
➨ Children in Sahaja Yoga (1991)	Compilation	English
➨ Cabella 94 (photographs by Michael Markl, Vienna) (1995)	Compilation—printed by Adolf Holzhausens Nfg., Vienna	English
➨ Nirmal Dham— A Project of H.H. Shri Mataji Nirmala Devi Foundation	Compilation Souveneir	English
➨ Grace	Compilation	English
➨ Sant Kabir Aur Sahaja Yog (1999) (Ek Vaigyanik Drishti)		Hindi
➨ Shree Ganesha Puja—1999	Compilation- Souveneir	Hindi/English
➨ The age of Ascent	Compilation- Souveneir	English
➨ Vibrations (2000)	Compilation- Souveneir	English
➨ Shiva Tattwa (2000)	Compilation	English/ Hindi
➨ Birthday Messages		
➨ Health, Peace, Morality Culture "East-West" (9th. All Russian Scientific and Practical Conference) (9-10 June,1998)	Compilation Moscow, Russia	English/ Russian
➨ A Seeker's Journey – Searching for clues to life's meaning (1995)	Greg Turek , Australia	English/French Russian German, Chinese
➨ Actualise Your Self-Realisation	Edwin Hou	Chinese
➨ Sahaja Yoga Meditation Beginners Guide	Kwong Ming Wai	Chinese
➨ Nirmal Fragrance	Compilation	English
Periodicals and Magazines		
➨ Akashwani Volume I	Yuva Shakti, bound	English
➨ Akashwani Volume II	Yuva Shakti, bound	English
➨ Anant Jeevan (1979-1980)		English/ Hindi
➨ The Divine Cool Breeze USA (1987-2005)	English	
➨ Chaitanya Lahiri		Hindi
➨ The Divine Cool Breeze, India		English
➨ Yuvadrishti		English/ Hindi
➨ Hermes		Germany
➨ The Knowledge of Reality		English
➨ The Life Eternal		English/ Hindi
➨ Maha Avatar (1980)		English/ Hindi
➨ Nirmala Yoga (1981-1985)		English/ Hindi
➨ Sahaj Amrit		English
➨ Open Heart		English

प्रतिष्ठान, गुड़गांव, भारत